# પુષ્ટિ સ્વાધ્યાય

ડો. જયેન્દ્ર સોની

# પુષ્ટિ સ્વાધ્યાય

(*"પુષ્ટિ સ્વાધ્યાય"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

## "पुष्टि स्वाध्याय" (१)

****************

"जात साथे वात_अनोखो संवाद" (आध्यात्मिक चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण), ना शिर्षक थी 'पुष्टि स्वाध्याय' ना क्रमश: मेसेज आजथी आत्मचिंतन रुपे प्रस्तुत करी रहयो छुं, जे एकांतरे गुजराती / अंग्रेजी भाषा मां हशे जेथी युवापेढी पण लाभान्वित थई शके.

मारा बगीचाना हिंचका पर हिंडोला खाता मन विचारे चढ्यु.

'हुं वास्तवमां शुं छुं? आ जीवननुं प्रयोजन शुं छे ?'

घणा समय सुधी मन आ प्रश्नोने वागोलतुं रहयुं. ह्रदयनी भीतरथी पडघो पड्यो - 'तुं कोण ?'

कोण बोली रहयुं छे ? समजायुं नहीं !

जेम जेम मनमां प्रश्न घोलातो रहयो, अंदरथी कोई प्रतिसाद आपतुं रहयुं. मारुं 'आत्मचिंतन' क्यारे 'संवाद' बनी गयो ते खबर ज न पडी ! जाणे मारा मनना प्रश्नोनो मारो 'मांहयलो' - अंदर बेठेलो 'अंतर्यामि' उत्तर आपी रहयो छे.

सांभल्यु छे -आपणी भीतर कोई 'परमात्म तत्त्व' बिराजे छे.

जेम जेम मारुं आत्मचिंतन आगल वधतुं गयुं, भीतरमां थी खुलासा मलवा मांड्या.

तेनी फलश्रुति ए आ 'आलेखन', जे आपनी साथे वहेंची रहयो छुं.

आशा छे - मारुं आत्मचिंतन आप पण माणसो !

कदाच, आपना पण आवा प्रश्नोनुं निराकरण मली जाय !

लगातार.....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १. "स्व" नी पहेचान"

****************

'तमे कोण ?'

'मारुं नाम गोपाल'

'नाम नथी पुछ्युं, पुछुं छुं तमे कोण ?'

'कह्युने - गोपाल'

'गोपाल तो भगवान कृष्णनुं नाम छे, तमे "कृष्ण" छो ?'

'ना मारा माता-पिता ए मने "गोपाल" नाम आप्यु छे, तेथी आ नामथी हुं ओलखावुं छुं.

'ओह ! तमने ओलखवा माटेनुं नाम गोपाल छे, पण खरेखर तमे कोण ?'

हुं मुझायो ! कही दीधुं - 'हुं एक प्राणी छुं'

'परंतु पशुऑ पण प्राणी ज कहेवाय छे ने !'

'साचुं छे, मारामां प्राण छे तेम पशुओमां पण प्राण होय छे, तेथी. परंतु हुं पशु नथी, माणस छुं.'

'तो तमारा अने पशु मां भेद शुं ?'

'मनुष्य विचारशील प्राणी छे. ते पोताना साराखोटानो विचार करी शके छे, पोतानुं हित विचारी शके छे. पशु ने तेवुं भान होतुं नथी.'

'धारो के कोई पथ्थरने पण "गोपाल" नामथी ओलखवामां आवे तो तमें अने पथ्थर बन्ने सरखाने?'

'केवी वात करो छो ? मारामां चैतन्य छे, पथ्थर तो जड छे !'

'ओह ! परंतु तमारो देह तो जड छे, तो तमारुं चैतन्य क्यां छे ?'

'मारा देहमां एक "आत्मा" रहेलो छे तेम सांभल्यु छे. ते आत्मा चैतन्य छे'

'तो पछी "गोपाल" कोण ?, तमारो देह के तमारो आत्मा ?'

हुं गुंचवाई गयो !

'सारु, एक बीजी वात. जाणता हशो के प्राणीमात्रनुं क्यारेक मृत्यु निश्चित थाय छे, खरुंने ? कोई अमर नथी होतुं. क्यारेक तो गोपाल पण मरण पामशे ज ! तो ते तेना देहनुं मृत्यु हशे के तेना आत्मानुं ?'

'हुं फरीथी मुंझवण अनुभवी रह्यो ! विचारवा लाग्यो'.

'सांभल्यु हशे - शास्त्र कहे छे, के "आत्मा अमर छे". तेनो जन्म नथी के नथी मृत्यु. तेनों अर्थ ए थाय के गोपालनुं मृत्यु थशे त्यारे ते तेना आत्मानुं मृत्यु न होई शके ! एटले तेना आत्मानुं नाम गोपाल
'अने मृत्यु थतां देहनो नाश थाय छे. तो गोपाल तमारा देहनी ओलख छे. तो पछी तमे कोण ?'

मारुं मगज चकरावा मांड्युं ! हुं मारी जातने नथी ओलखतो !

याद आव्युं - ग्रीक तत्ववेत्ता सोक्रेटीस नुं वाक्य - "Know thayself" - तारी जातने ओलख !.

'पण केवी रीते? मनमां प्रश्न घोलावा लाग्यो !'

लगातार......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ∗ पुष्टि स्वाध्याय (३) ∗

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## २. "प्रमाण - ज्ञान प्राप्ति नुं साघन"

***************************

'वारु, विचारीने पछी कहेजो. जुओ, मारा हाथ मां शुं छे ?'

' मोबाइल '

'केवी रीते खबर पडी ?'

'पहेलवहेला ज्यारे तेने जोयेलो, त्यारथी खबर पडी गयेली के आने मोबाइल कहेवाय.'

'सरस, लो आ सुंघो. शेनी सुगंध आवे छे ?'

'गुलाब नी'

'केम जाण्यु ?'

'नाक थी सुंघीए एकवार, एटले समझाई जाय !'

'आ कीर्तन संभलाय छे ? कहेशो कयो राग छे ?'

'मालकोंष, ए तो सांभलवाथी खबर पडी जाय !'

'शुं जाणो छो के आ बधु ज्ञान तमने केवी रीते थयुं ?'

'प्रत्यक्ष अनुभव थी ज तो !'

'बिलकुल साचुं. आने "प्रत्यक्ष प्रमाण" कहेवाय, जेना द्‌वारा आपणी ईन्द्रियोना अनुभव थी कोई भोतिक / लौकिक वस्तु के बाबतनुं ज्ञान थाय.'

'बराबर, हवे समजायुं'

'ठीक, हवे कहो के तमारा परदादा ने ओलखो छो ?'

' हां '

'तमे तेमने जोया छे ?'

'केवी वात करो छो ?, तेओ मृत्यु पाम्या त्यारे मारो जन्म पण थयो न हतो !'

'ओह, तो पछी केवी रीते तमने एमनी ओलखाण थई ?'

'केम वली, मारा पिताजीए तेमनो फोटो बतावी कहेलुं के "आ तारा परदादा छे", एटले तेमने ओलखी गयो !'

'तो तमे मानी लीधुं ?'

'केम न मानुं ? पिताजी कांई खोटुं बोले ?

'एटले पिताजीना शब्दोमां तमने विश्वास छे ?

'होय ज ने ! पिताजी हंमेशां साचुं ज बोले छे. तेमने खोटुं कहेवानुं कांई कारण न होय, तेवी मारी श्रद्‌धा छे.'

'सरस, आ सामे भींत पर कोना चित्रजी छे ?'

'केम, नथी ओलखता तमे ? श्रीनाथजी ना.'

'केवीरीते खबर पड़ी के तेमने श्रीनाथजी कहेवाय ?'

'नानपणथी ज मारी माताए बतावेलुं के आ "श्रीजीबावा" छे.'

'ओह, एटले तमारी मातानी वात मां पण विश्वास राखो छो ?'

'केवा प्रश्न करो छो ? माता-पिता क्यारेय खोटुं न कहे !'

'आनो अर्थ ए थयो के जे वस्तुने आपणे प्रत्यक्ष जोई के अनुभवी न शकीये, छतां माता-पिता जेवी साची व्यक्ति, जेने "आप्तजन" कहेवाय, तेमना वचनना आधारे पण आपणने ते वस्तु नुं साचुं ज्ञान थई शके छे. केम बराबरने ?'

'बिलकुल, जेमनामां श्रद्धा होय, तेमना वचन साचा ज मानी शकाय !'

'साचुं कह्युं. तेवा विश्वसनीय वचनना आधारे आपणने साचुं ज्ञान मली शके. तेने "शब्द प्रमाण" कहेवाय छे.'

'तमारी वात थोडी थोडी समज मां आवे छे. हवे समजाय छे के मारा परदादा नी ओलख मने केवी रीते थई !'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३. "शास्त्र प्रमाण"

****************

'जो तमने माता-पिता नी वाणीमां आटली श्रद्धा होय तो "वेद" नी वाणी मां विश्वास राखो के नहीं ?'

'वेद नुं नाम तो सांभल्यु छे, परंतु पहेला ए बतावो के ते छे कोण ? शुं कोई व्यक्ति नुं नाम छे ?

'ना, ते कोई व्यक्ति नथी, आपणा शास्त्र नुं नाम "वेद " छे.'

"शास्त्र" एटले ?'

'जे आपणा पर शासन करे, अंकुश राखे, तेने "शास्त्र" कहेवाय. माणसे शुं करवुं जोईए अने शुं न करवुं जोईए, ते शिखवाडे, तेने "धर्मशास्त्र" कहेवाय. जे अध्यात्म नुं ज्ञान आपे, "ईश्वर" वगेरेनी समझ आपे तेने "अध्यात्म शास्त्र" कहेवाय. "वेद" एक एवो ग्रंथ छे, जेमां आत्मा-परमात्मा ईत्यादि विषयो नी चर्चा करवामां आवी छे. तेमां एवी अनेक गहन बाबतोनुं ज्ञान समाहित छे.'

'वेद नी रचना कोणे करी छे ? कोणे लख्युं छे आ शास्त्र ?'

'वेद नी रचना कोई मनुष्ये करी नथी, जेम बीजा धर्मग्रंथो लखाया छे. ते आपणा प्राचीन ऋषि-मुनियोए समाधिमां - ध्यान अवस्था मां श्रवण करेली वाणी छे. तेथी वेद "अपौरुषैय" कहेवाय छे. ते स्वयं

भगवाननी वाणी छे.'

'परंतु ते अलग अलग ऋषियोए श्रवण करेली वाणी "वेद" रुपे अस्तित्व मां केवी रीते आवी ?'

'भगवान ना ज्ञानना अवतार "वेद व्यासजी" ए जुदा जुदा ऋषियो पासेथी ते समग्र ज्ञान ने एकत्रित करी, तेने जुदा जुदा चार वेद रुपे संकलित कर्या छे. ते छे - (१) ऋग्वेद, (२) यजुर्वेद, (३) सामवेद अने (४) अथर्ववेद.'

'शुं ते आखो सलंग ग्रंथ छे ?'

'ना, प्रत्येक वेद ना चार विभाग छे . - १. मंत्र अथवा संहिता, २. ब्राह्मण, ३. आरण्यक, अने ४. उपनिषद.'

'आ विभागो नुं तात्पर्य शुं छे ?'

'प्रथम बे विभाग ने साथे "पूर्वकाड" अथवा "कर्मकांड" कहेवाय छे. तेमां विविध प्रकार ना यज्ञो विशे माहिती आपवामां आवी छे. पछीना बे विभाग ने "उत्तरकांड" अथवा "ज्ञानकांड" कहेवाय छे. तेमां जीव, जगत, भगवानना स्वरुप ईत्यादि ज्ञान नी अनेक बाबतोनी चर्चा करवामां आवी छे. "उपनिषदो" ज्ञान नो भंडार छे. तेने "श्रुति" पण कहेवाय छे, कारणके ते ऋषियोए श्रवण करेली वाणी छे.'

(चालु....)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३. "शास्त्र प्रमाण" (चालु)

*********************

'तो "वेदांत" शुं छे ? आ शब्द पण सांभळ्यो छे'.

"उपनिषद" वेद नो अंतिम विभाग होवाथी वेद नो अंत, अर्थात् "वेदांत" पण कहेवाय छे. तेने वेद नो सार पण कही शकाय. उपनिषद विशाल ग्रंथ छे. १०८ के वधु उपनिषदो होवानुं कहेवाय छे.'

'शुं आवडुं मोटुं शास्त्र कोई ने कंठस्थ होई शके ? असंभव लागे छे !'

'साची वात छे. तेथी ज व्यासजीए समग्र उपनिषदोने मात्र ५५४ नाना नाना "सूत्र" रुपे रजु कर्या छे. तेने "ब्रह्मसूत्रो" अथवा "वेदांत सूत्रो" कहेवाय छे'.

'खुब सरस ! परंतु आ बधा शास्त्रो नी प्रमाणभूतता पर हजी संदेह रहे छे! तेने केम साचा मानी लेवाय ! तेनुं प्रमाण शुं ?'

'तमे गणित मां "भुमिति" नो विषय भण्या छो ?'

'हास्तो ! परतुं तेने आ प्रश्न साथे शो संबंध ?'

'तेमां विधान होय छे के - वर्तुल मां ३६० अंश (डीग्री) होय छे. खरुंने ?'

'बराबर. पण तेथी शुं ?'

'आ विधान ने केवी चीते सिद्ध करशो ?'

'केवो प्रश्न करो छो ? ए तो "स्वयं सिद्ध विधान छे ". तेने पूरवार करवानी आवश्यकता न होय!'

'बराबर तेवीज रीते "वेद" भगवान नी स्वयं नी वाणी होवा थी "स्वत: प्रमाण" छे, तेनुं प्रमाण आपवानी आवश्यकता नथी. तेनो श्रद्धापूर्वक स्वीकार करवानो ज होय !'

'समजाय छे.'

'जेवीरीते माता-पिता ना वचनमां विश्वास धरावो छो, तेम भगवान पण "सत्य संकल्प" छे. तेथी तेमनी वाणी "सत्य" ज होय ! तेमां शंका करवानी न होय !'

* * * * * * *

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ४. "भगवान कोण"

****************

'तमे कह्यु के वेद "भगवान" नी वाणी छे. "भगवान" सत्य संकल्प छे. वेद-व्यासजी "भगवान" नो अवतार हतां वगेरे. "भगवान" शब्द हुं नानपणथी सांभलतो आव्यो छुं, परंतु आज सुधी जाणी शक्यो नथी के "भगवान" कोण छे ?, होय तो देखाता केम नथी ?, वास्तवमां ते छे के मात्र कल्पना छे ?'

'बीजी एक वात. दुनिया मां मोटाभागना लोको भगवानमां मानता होय छे, परंतु विचित्र वात ए छे के अलग-अलग धार्मिक आस्थाओना लोको जुदा जुदा भगवान होवा नो दावो करता होय छे. कोई तेने "अल्लाह" के "खुदा" कहे छे, तो बीजा "जीसस" बतावे छे. त्रीजा तेने "अहुरमझदा" कहे छे. हिंदुओमां तो असंख्य भगवान छे ! राम, कृष्ण, शंकर, गणेश वगेरे, न जाणे केटलां ! अंग्रेजी मां "गोड" कहे छे तो आपणे ईश्वर, परमात्मा वगेरे कहीये छीए ! आ बधामां साचा भगवान कोण ? बधा एकज के सौना जुदा जुदा ? कांई समजाय तेवुं नथी. पहेलां आ वात नो तो खुलासों करो !'

'तमारी वात साची छे. परंतु आपणा वेदे ज आनो खुलासो कर्यो छे. ऋग्वेद कहे छे - "एकम् सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति" एटले के जे "परम् तत्त्व" के "परम् सत्य" छे, जेने आपणे "भगवान" कहिए छीए, ते मात्र एक ज छे, परंतु जुदा जुदा महानुभावो अलग अलग नामोथी ओलखावे छे. हवे तो समजाई एने के ये बधा भिन्न भिन्न नामो एक ज "तत्त्व" ना छे. भगवान जुदा जुदा नथी. सौ पोतपोतानी रीते तेने ओलखे छे !'

'परंतु ते "परम तत्त्व" शुं छे ?, एतो समजावो, जेमां दुनियाभरना लोको श्रद्धा धरावे छे, तेने

पूजे छे !'

'तेनो जवाब पण उपनिषद आपतां कहे छे - "एकम् एव अद्वितीयम्". ये एक मात्रनुं ज अस्तित्व छे, तेना सिवाय अन्य कशुं ज नथी'

'परंतु ते छे कोण ?'

'वेद तेने "ब्रह्म" नामथी ओलखावे छे. तेनो अर्थ थाय जे सर्वत्र विद्यमान होय, जे सर्व-व्याप्त होय ! तेने आपणी समझ माटे महाशक्ति के महासत्ता कही शकाय, जे अतिगूढ आने विलक्षण छे, जे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान अने सर्वव्याप्त छे, तेज समग्र विश्वनुं संचालन - नियंत्रण करे छे.'

(चालु)..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ४ (चालु). "भगवान कोण"

**********************

'आम वेद - उपनिषद ए "स्वत: प्रमाण" छे. ते "शब्द प्रमाण" होवा थी तेनो श्रद्धापूर्वक स्वीकार करवो जोईए.'

'क्षमा करजो, पाकुं करवा पुछी रह्यो छुं. वेद शास्त्र जेवा बोई बीजा पण प्रमाण खरां ?'

'हा छे. अगाउ कह्यु तेम "ब्रह्मसूत्रो" पण भगवान व्यासजी नी वाणी छे, तेथी ते पण वेद जेवा ज "शब्द-प्रमाण" गणाय. "गीता" अने "भागवत" नां पण नाम सांभल्या ज हशे ! ए बन्ने पण भगवद् वाणी होवाथी प्रमाणभूत ज छे !'

'परंतु में सांभल्यु छे तेम "गीता" तो श्रीकृष्णे तेना सखा अर्जुनने आपेलो उपदेश छे, अने "भागवत" एक पुराण-कथा ! तेने भगवान नी वाणी केम कहो छो ?'

'ओह, साचुं कह्यु. आपणे भगवान नी वाणी ने "प्रमाण" तरीके स्वीकार वानी वात करी, अने अहीं तो श्रीकृष्ण नी वात आवी ! बराबर ?

'बिलकुल !'

'एटले पहेला "श्रीकृष्ण" कोण ? ए समजवु पडशे !'

'हास्तो ! एम तो एवा अनेक नामो छे, जेने लोको "भगवान" कहे छे !'

'सारु. तो पहेला "भागवत" विशे विचारीए.'

'खबर छे, तेनी रचना कोणे करी ?'

'सांभल्युं छे, "वेद-व्यासजीए", जेने तमे भगवान नो अवतार बताव्यां, एजने?'

'बिलकुल बराबर. परंतु शुं ए जाणो छो के तेमणे "भागवत" केवी रीते लख्युं ? शुं जेम आपणे

कल्पना नां आधारे वार्ता के नवलकथा लखीए तेम ?'

'एमज होवुं जोईए ! शुं व्यासजी ने बीजा कोईए आ बधी वार्ताओ कही हती ?'

'ना. "नारद मुनि" पण भगवान ना बीजा एक अवतार छे, तेमना सूचनथी वेद-व्यासजीए समाधी अवस्था मां आंतर्चक्षुथी भगवान नी विविध लीलाओना जे दर्शन कर्या, तेनुं जेमनुं तेम आलेखन कर्युं, ते "भागवत" नामथी प्रसिद्ध छे.'

'ओह, मतलब के ते व्यासजी ए कल्पनाथी बनावेली वार्ताओनो संग्रह नथी, एमने ?'

'हा, अने जो भगवाने ज वेद-व्यासजीनो अवतार लीधो होय तो, भागवत भगवान नी ज वाणी कहेवायने ?'

'हवे समजाय छे'.

(चालु).......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (८) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ४ (चालु). "भगवान कोण ?"

************************

'भागवत ने वेद वत् "प्रमाण" मानवानुं कारण जाणो छो ?'

'शुं ? कोई खास कारण ?'

'भागवत मां भगवाने स्वयं कहेला वचन छे - "पहेलां कांईज न हतुं, त्यारे मात्र हुं हतो. आ देखातुं जगत मैं ज उत्पन्न कर्युं छे. ज्यारे आ जगत नहीं रहे, त्यारे मात्र हुं ज होईश".

'साचेज ! आ तो उपनिषदे कहेली ए वात छे ! आवुं ज कांईक कह्युं हतुं !'

'एकम् एव अद्वितीयम्'

'अद्भुत, आतो एनुं ज पुनरावर्तन लागे छे !'

'मानो छो ? भागवत पण "भगवान नी वाणी". आ त्रीजु प्रमाण !

'खरेखर !'

'बीजी एक महत्वनी वात. खबर छे भागवत मां भगवानना २४ अवतारो नुं वर्णन छे ?'

'एवुं सांभल्यु छे ! वराह, वामन, नृसिंह, रामचंद्रजी कृष्ण वगेरे ज ने ?'

'आ बधा भगवान ज छे ने ?

ना, भागवते एक महत्वपूर्ण खुलासो कर्यो छे. कह्युं छे - "कृष्ण सिवाय बधा अवतारो भगवान नां अंश - कला रुप विभुतिओ छे. तेमां भगवान नुं आंशिक सामर्थ्य छे, परंतु "कृष्ण" स्वयं संपुर्णपणे भगवान छे. एटले के ते,जेणे बधा अवतारो लीधा छे, ते "अवतारी" छे.'

'अर्थात् बधा "कृष्ण" ना अवतारो छे ? कृष्ण पोते ज "भगवान" छे ?'

'बिलकुल, आ हकिकत छे.'

'ओह, तो हवे स्पष्ट थयुं के "भगवान" कहो के "कृष्ण" कहो, बन्ने एकज वात छे - भागवत प्रमाणे ! एम ज ने ?'

'बराबर'

'तो, भागवत मां वर्णवेली कृष्ण नी लीलाओं ते भगवान नी ज लीलाओं कहेवाने ?'

'चोक्कस !'

'एटले के भागवत भगवान नी ज वाणी छे. मानो छो ?'

'हवे क्यां शंका रही !'

'तो हवे "गीता"नी वात करीए !'

'एम कहेवा मांगो छो ने के श्रीकृष्ण स्वयं भगवान छे, तेथी गीता नां वाक्यो पण भगवान नां वचन छे, एमज ने ?'

'साचु समज्या'. हवे वधु खुलासानी जरुर खरी ?'

'ना. टुंकमां, गीता अने भागवत पण "शब्द प्रमाण" छे !'

'हा, तेथी चारेय शास्त्रो - वेद-ब्रह्मसूत्रो-गीता-भागवत नां प्रमाणो ना आधारे भगवान विशे जाणी शकाय !'

चालु.......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ४. (चालु ) "भगवान कोण ?"

************************

'मारो प्रश्न हतो -"भगवान कोण ?", तमे प्रमाण नी वात छेडी ! शा माटे ?

'एज वात पर आवी रह्यो छुं. तमारे "भगवान" विशे जाणवुं छे, तेने ओलखवा छे, बराबर ने ?'

'एज तो पुछी रह्यो छुं, परंतु तमे तो विविध शास्त्रों नुं ज्ञान आपी दीधुं !, प्रमाण समजावी दीधा !

'में कह्यु तेम भगवान अति गूढ़ अने विलक्षण "तत्व" छे. जेम मोबाइल जोईने तमे तेने जाणी लीधो तेम भगवानने जाणी न शकाय, तेमने तो जेवीरीते तमे तमारा परदादाने ओलख्या तेम

ओलखवा पडे !'

'एटले ? परदादा वचमां क्यांथी आव्या ?'

'जेवीरीते तमे तमारा माता-पिता ना वचनमां विश्वास राखी "परदादा" ने ओलख्या तेम शास्त्रो ना वचनमां विश्वास मुकी ने भगवान ने जाणवा पडे ! तेने माटे "प्रत्यक्ष प्रमाण" काम न लागे !'

'तो शुं भगवान नुं वर्णन शास्त्रो मां करेलुं छे ?' तेनुं रुप, गुण, कार्य बतावेलुं छे ?'

'तेज तो तमने कहेवा जई रह्यो छुं'

'परंतु मारा परदादा ना अस्तित्व मां तो कोई संदेह होई न शके, कारणके जेम मारा पिता छे तेम तेमना पण पिता नां पिता होवा ज जोईए ! एटले परदादा तो होवानी खात्री छे ! ज्यारे, शास्त्र भले कहे परंतु कोई ठोस सबूत विना "भगवान" नां अस्तित्व ने स्वीकारवुं मुश्केल जणाय छे!

'परदादा "हतां" ए स्वीकारवुं सहज लागे छे, परंतु भगवान तो "छे", एटलुं ज नहीं, शास्त्र कहे छे के ते "एक मात्र छे" ! केम स्वीकारवुं ?' वात हजी गले उतरती नथी !

* * * * * * *

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ५. "भगवान नां अस्तित्व नुं प्रमाण"

*****************************

'तमने खबर छे, मांखण शेमांथी बने ?'

'तमे पाछी वात बदली ! मारी वातनो पहेला खुलासो तो करो !'

'एज करी रह्यो छुं. जवाब आपो.'

'दहींने वलोवीए एटले मांखण नीकले, ते सौ जाणे छे !'

दहीं शेमांथी बने ?'

'दुधमां थी. परंतु तेनो भगवान साथे शुं संबंध ?'

'बतावुं छुं. जुओ, दुधमांथी दहीं बने अने तेमांथी मांखण नीकले, खरुंने ?'

'बराबर'.

'तेनो अर्थ ए थयो के दुधमां मांखण रहेलुं छे ! मानो छो ?'

'हा'.

'परंतु दुधमां माखण देखाय छे ?'

'ना'.

'तो शुं एम कही शकाय के दुधमां मांखण नथी ?'

'ना, एम तो केम कहेवाय ?'

'जुओ आ शुं छे ?'

'वड नो टेटो छे, तेमां आ झीणा बीज छे.'

'बीजने तोडी ने जुओ, अंदर वृक्ष देखाय छे ?

'आटला नाना बीज मां वृक्ष क्यांथी होय ?'

'परंतु, जो बीजने जमीनमां वावीए तो मोटु वृक्ष थाय के नहीं ?'

'थाय ज !'

'एटले के बीज मां वृक्ष होवा छतां देखातुं नथी. तो एम कही शकाय के तेमां वृक्ष नथी ?'

'वात तो तमारी विचारवा जेवी लागे छे !'

'जाणो छो के घुवड प्रकाश मां जोई शकतुं नथी. तेथी तेने सूर्य विशे खबर ज नथी होती ! एटले ते सूर्य ना अस्तित्व नो अस्वीकार करे छे.'

'ते तेनुं अज्ञान छे !'

'एटले एम तो न कहेवाय के सूर्य जेवुं कांई नथी !'

'ना, एम केम कहेवाय !'

'हवे समझो के शास्त्र कहे छे के "भगवान छे", परंतु आपणे तेने जोई शकता नथी, एटले शुं एम मानी लेवुं जोईए के भगवान नुं अस्तित्व नथी ?

'वात तो थोडी थोड़ी समजाय छे !'

....(चालु) .................

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (११) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ५. (चालु) "भगवान ना अस्तित्व नुं प्रमाण"

*********************************

(चालु) ............

'आवो, तमारी ज राह जोई रह्यो हतो !'

'खुब सरस घर नी सजावट छे तमारी ! कया आर्किटेक्टे करी ?'

'ओह, आ तो एमज ! घर पसंद पड्यु अने बीजे दिवसे आव्या त्यारे जोयुं के बधुं टिपटोप सजावेलुं हतुं ! शुं जादु थयुं खबरज न पड़ी ! आकस्मिक !'

'शुं मजाक करो छो ? आपणे जे चर्चा करी रह्या छीए ते माटे आव्यो छुं, अने तमे ठेकडी उडावो छो !' कोई डीझाईनर - कारीगर विना आ बने ?'

'तमने खबर छे, घणा माने छे के एक धडाको थयो अने अकस्मात जगत अस्तित्व मां आवी गयुं !'

'एवुं केवी रीते थाय ? कोईके तो ते बनाव्युं हशे!'

'आज वात तमने समजावी रह्यो छुं के जो एक घरनी सजावट अपने-आप न थई शके, तो आ जगत नो सर्जक कोई होवो जोईएने !'

'चोक्कस'

'तमे आ घडियाल पहेरी छे, ते खोलीने जोई छे ?'

'हा, रीपेरिंग माटे आपेली त्यारे कारीगरे खोलेली'.

'शुं हतुं अंदर ?'

'घणा नाना नाना चक्रो अने स्प्रिंगो'

'तमे तेवा चक्रो - स्प्रिंगो लावी ने जाते घडियाल बनावी शको ?'

'केवी वात करो छो ? ए तो निष्णात कारीगर नुं काम छे ! सेकंड-मिनिट - कलाक नां कांटा चोक्कस समय आपे तेम गोठववा ते बुद्धिनुं काम छे. सामान्य माणसनुं गजुं छे ?'

'तो पछी जरा विचारो ! आटली अमथी घडीयाल दरेक न बनावी शके, तो कल्पना न करी शकाय एवडुं विशालकाय आ ब्रह्मांड जेणे बनाव्युं हशे तेनुं सामर्थ्य केवुं हशे ? क्रम प्रमाणे ऋतुओ आवे ने जाय, रोज निश्चित समये सूर्य - चंद्र उगे अने आथमे, असंख्य ग्रहों - उपग्रहो, एकबीजानी आसपास चोक्कस गति थी फर्या करे, दिवस अने रात थाय, असंख्य प्राणीओ, पक्षीओ, वृक्षो, फुलो, प्रत्येकना रुप-रंग-आकार जुदा, मनुष्य तेमज प्राणीओ ना शरीरनी रचना जुओ तो अक्कल काम न करे ! ए बधानो - आ समग्र सृष्टि नुं सर्जन अने संचालन करनारो कोईक तो होवो जोईएने ! एमज तो न बनी जाय ! केवो बुद्धिशाली, शक्तिशाली, आवडतवालो हशे ते सर्जक - सूत्रधार ! जरा शांतिथी विचार करो !'

'समजाय छे.' आ कोई महाशक्तिशाली महासत्तानुं ज कार्य होवुं जोईए ! कोईक तो एवुं "परम तत्त्व" हशेज, ए कबुलुं छुं'

'मानी गयां ?'

'वात तो साव साची लागे छे, परंतु मनुष्य स्वभाव एवो छे के जात अनुभव विना पाको विश्वास बेसे नहीं. बीजुं कोई अकाट्य सबुत आपी शको ?'

......(चालु)..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१२) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

### ५. (चालु) "भगवान नां अस्तित्व नुं प्रमाण"

***********************************

....(चालु)........

'वारु, तमे एवरेस्ट पर चढ्या छो ?'

'केवी वात करो छो, शुं एवरेस्ट पर चढवुं आसान ते ? तेना पर तो तेनसिंग जेवा कोई विरला ज चढी शके !'

'अच्छा, चंद्र पर गया छो ?'

'शुं मजाक करो छो ? मारा प्रश्न नो जवाब आपो ! नील आर्मस्टोंग जेवा एस्ट्रोनोट ज चंद्र पर जई शके !'

'ओ के, परंतु एवरेस्ट विशे जाणता तो हशो ! त्यां केटलो बरफ होय, तेनी ऊंचाई केटली वगेरे ! चंद्र विशे पण माहिती हशे ज, त्यां माटीना खडको केवा छे, जीव सृष्टि छे के नहीं इत्यादि नी जाणकारी हशे ज !'

'हा, ते विशे घणुं जाणुं छुं'.

'केवी रीते जाणो छो ? त्यां गया तो नथी तेम कहो छो !'

'अरे, त्यां जवानी जरुरत थोडी ज छे ? छापाओमां, अने ते विशे नां पुस्तकोमां घणुं वांच्यु छे.'

'एटले ते पुस्तको वांचवाथी बधुं समजाई जाय ! अने तेमां विश्वास पण बेसे ?'

'केम नहीं ? जेमणे प्रत्यक्ष अनुभव कर्यो होय तेमणे ज ते बधुं वर्णन कर्युं होयने ! ते तेमनी अनुभव वाणी होय !'

'एकदम साचुं कह्युं. तेवीज रीते आपणी पुराण कथाओ, संत-महात्मा-आचार्योनी वाणी पण स्वानुभवनी ज वाणी छे. भगवान विशे तेमणे जे अनुभव कर्या छे, जेवा दर्शन कर्याछे, साक्षात्कार थयो छे, ते तेमणे पोताना ग्रंथो, रचनाओ, कीर्तनोमां आलेख्या छे. ते बधा महानुभावो सत्यना पुजारी हतां, जे क्यारेय खोटुं न बोलें ! तेमनुं हृदय - चरित्र निर्मल हतुं. स्पष्ट वात कहेवी ते तेमनो स्वभाव हतो ! तो तेमनी अनुभव-वाणीमां शुं अविश्वास करवो जोईए ?'

'वात तो तमारी साची छे !'

(चालु)........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ५. (चालु) "भगवान नां अस्तित्व नुं प्रमाण"

**********************************

(चालु).............

'जुओ, कोई पण विषयनी ज्ञान प्राप्ति ए "श्रद्धा" नो विषय छे. तमने खबर छे के पृथ्वीनो व्यास ८००० माईल छे, शुं तमे मापेलो छे ?, प्रकाश त्रण लाख की.मी. प्रति सेकंड अंतर कापे छे, ते विशे तमे जाते प्रयोग करेलो ?, आपका शरीरमां हाडकानी संख्या अमुक छे, ते जाणो छो, परंतु आपणे गण्या नथी होतां ! केवीरीते आ बधुं ज्ञान थयुं ?'

'वात विचारवा जेवी छे !'

'अनेक वैज्ञानिकों, संशोधको, जाणकारोए स्वपरीक्षण / अनुभव थी जे आलेखों कर्या छे, तेना आधारेज आपणने आ बधुं समझाय छे, कारण के तेमना लखाणोमां आपणो विश्वास छे. तेमनी वातोमां आपणे श्रद्धा धराविए छीए. बंधी बाबतनी खराखरी आपणे जाते करता नथी होता !'

'वात तमारी साची छे !'

'तेवीज रीते अध्यात्म नी वातो, भगवान विषयक तथ्यो आपणा प्राचीन ऋषि-मुनियो, आचार्यों, महापुरुषो, भक्तों, संतो ए लिपिबद्ध कर्या छे, तेमनी ते अनुभव वाणी मां पूरी श्रद्धा राखीने स्वीकारवानाज होय, कारण के ते "शब्द ्रमाण" छे.'

'हा, हवे बधुं स्पष्ट थतुं जाय छे.'

'जेम तमारा परदादा ने तमे प्रत्यक्ष जोया न हतां, छतां तमारा माता-पिता ना वचनमां श्रद्धाना कारणे तमे तेमने ओलखो छो !.तेज वात भगवान माट पण े लागु पंडे छे.'

'वात बराबर लागे छे!'.

'जेम दुधमां मांखण न देखातुं होय तो तेना अस्तित्व नो अस्वीकार आपणुं अज्ञान छे, घूवड सूर्यने न जोई शके माटे सूर्य जेवुं कशुं नथी तेम कहेवुं मूर्खता छे. तो पछी आवी रहस्यमयी सृष्टि नुं सर्जन करनार कोई 'परम तत्त्व' नथी तेम केम कहेवाय ? तेने नाम तमे गमे ते आपो, परंतु तेना अस्तित्व ने नकारी न शकाय ! शुं हवे कोई विशेष प्रमाण नहीं आवश्यकता खरी ?:

'ना, वात हवे एकदम स्पष्ट थई गई ! वेदादि शास्त्रो द्वारा भगवान ने जाणी - समजी शकाय, तेमां शंका नथी. ते शास्त्रोने श्रद्धापूर्वक स्वीकारवा मां पण कोई संदेह नथी. ते बधुंज सत्य रुपे स्वीकारुं छुं, पण ...........'

* * * * * * *

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### ६. "गुरु नी आवश्यकता - कोने गुरु करवा !"

************************************

'हवे "पण" शुं ? तमे तो कह्युं "आ खुलासा स्वीकारुं छुं".

'मारा जेवा अनेक नी समस्या हशे ! आ बधु ज्ञान भले वेद - गीता वगेरेमां उपलब्ध हशे, परंतु ए शास्त्रो नी भाषा संस्कृत अने तेनी अगम वाणी!, शुं मारा जेवा सामान्य मनुष्य नी चांच तेमां डूबी शके ? केम समजाय ए बधुं ?'

'तमारी मुझवण समझी शकुं छुं. शास्त्रोनी वात जवा दो, विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र वगेरे विषयो पण जाते भणी शकाता नथी तो पछी शास्त्रो नी वाणी तो क्यांथी उकेली शकाय ! तमारी समस्या साची छे.'

'ते माटे तो पुछी रह्यो छुं.'

'तमे जाणो छो के सामान्य विषयो पण समजवा आपणे सारा शिक्षकनी आवश्यकता रहे छे.'

'तो पछी शास्त्रो तो तेनाथी पण गहन विषय छे, तेने केम समजवा ?'

'तेने माटे विद्वान मार्गदर्शक - गुरु नी होय ! गुरु विना ज्ञान न मले !. जाणो छो, स्वयं भगवान श्रीकृष्ण पण सांदिपनी ऋषि पासे भणवा गया हतां!

'परंतु एवा योग्य गुरु शोधवा कई रीते ?'

'तमारो प्रश्न विचारणिय छे. एवा महापुरुष जेमां भगवान जेवी दिव्यता होय, जेमणे समग्र शास्त्रोनो तलस्पर्शी अभ्यास कर्यो होय, तेनुं उंडाणपूर्वक चिंतन कर्यु होय, तेवा गुरु ने शरणे जईए तो शास्त्रोना साचा खुलासा प्राप्त थाय !'

'एवा कोई सद्गुरु नुं नाम बतावशो ? तेमनो परिचय करावशो !'

....चालु.........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ६. (चालु) "गुरु नी आवश्यकता - गुरु कोण ?"

*************************************

चालु .........

'आजथी लगभग साडा पांचशो वर्ष पूर्वे "श्रीवल्लभाचार्यजी" नामे आचार्य थई गया, तेमनुं नाम सांभल्यु छे ?'

'हा, नाम तो सांभल्यु छे, परतुं तेमना विशे कांई जाणतो नथी.'

'कोई बीजा आचार्य ना नामनी खबर छे ?'

'हा, कोई "शंकराचार्यजी" थई गया तेटलुं जाणुं छुं, कोण हता तेओ ?'

'आठमी शताब्दिमां जन्मेला "शंकराचार्यजी" वेदादि शास्त्रोना प्रकांड पंडित हतां. वेदोपनिषद, गीता,

ब्रह्मसूत्रो वगेरे शास्त्रो उपर तेमणे गहन चिंतन करी अनेक ग्रंथो नी रचना करी छे'.

'वर्तमानमां पण क्यारेक तेमना नामनी चर्चा थती होय छे, परंतु तेमनी हयाति क्यांथी होय !'

'ना, तेओ स्वयं नहीं, परंतु तेमनी "शिष्य परंपरा" मां तेमना मुख्य शिष्य ने पण "शंकराचार्य" ज कहेवाय छे.'

'तो श्रीवल्लभाचार्यजी कोण हतां ? शुं तेओ शंकराचार्यजीना उत्तराधिकारी हतां ?'

'ना, "शंकराचार्यजी" जेवा बीजा पण विद्वान आचार्यों अलग अलग समये थया छे'.

'ओह, कया कया ?, क्यारे ?'

'अगीयारमी शताब्दिमां "रामानुजाचार्यजी", बारमी शताब्दी मां "मध्वाचार्यजी", तेरमी शताब्दी मां "निंबार्काचार्यजी" अने पंदरमी शताब्दी मां "वल्लभाचार्यजी" थया हतां'.

'ते पछी तेमना जेवा कोई आचार्य थया नथी ?'

'ना, महापुरुषो तो अनेक थया छे, परंतु तेमनी समकक्ष "आचार्य" नहीं'.

'आ बधा विद्वानोने "आचार्य" शा माटे कहेवाय छे ?'

'आ बधाज महानुभावोए वेदादि शास्त्रोनुं उंडु अध्ययन -मनन- चिंतन करी तेमां कहेली बाबतो विशे खुलासा आपी, तेमणे पोताना सिद्धांत अथवा "मत - दार्शनिक विचारो" प्रतिपादित कर्या छे. जे विद्वानो स्वतंत्र रीते ए मूलभूत शास्त्रों ना अर्थघटन करी पोताना सिद्धांतो घडी, तदनुसार तेनुं पोताना जीवनमां आचरण करीने तेमना अनुयायियों पासे करावे तेने "आचार्य" कहेवाय !'

'ओह ! एम वात छे ? एटले के आ बधा आचार्यों ने अनेक लोको अनुसरतां हतां ?

...चालु ........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ७. "गुरु कोण"

************

'हा, आ आचार्योए प्रतिपादित करेली विचारधारा ने अनुसरनारा तेमना अनुयायियो तेमना समय थी तेमना शिष्य के सेवक बनता आव्या छे, कारण के तेमने मात्र दार्शनिक सिद्धांतो ज नथी समजाव्या, परंतु तदनुसार विशिष्ट प्रकारनी साधना प्रणाली, जीवन पद्धति बतावी छे जेने अनुसरीने मनुष्य अध्यात्मने मार्गे चाली पोताना उद्धार माटे प्रयत्न करी शके !'

'शुं आ बधा आचार्यों नी विचारधारा तथा साधना प्रणाली समान छे के भिन्न-भिन्न ?'

'आ आचार्यों अति विद्वान हतां. सौए पोतपोतानी समज अनुसार शास्त्रोनुं अर्थघटन करी पोताना ग्रंथोमां तेनी चर्चा करी छे, जेमां तेमणे 'परम तत्त्व' ना स्वरुप, जगतनी वास्तविकता, जीवात्मा नी ओलख,

मोक्ष, भगवान नो साक्षात्कार कई रीते थई शके, मनुष्य नुं कर्तव्य शुं वगेरे अनेक वातों समजावी छे. केटलीक बाबतोमां तेमनो एकमत छे, तो अमुक विषयोमां तेमना मत जुदा जुदा पण छे !'

'तो पछी कई रीते जाणी शकाय कोना कया विचारो छे ?'

'ए बधा आचार्यो नी विचारधाराओ अलग अलग नामथी ओलखाय छे. शंकराचार्यजीना मतने "केवलाद्वैत वाद" अथवा "मायावाद" कहेवाय छे, रामानुजाचार्यजी नी विचारधारा ने "विशिष्टाद्वैतवाद" नाम आपवामां आव्यु  छे. मध्वाचार्यजी ना मतनुं नाम "द्वैतवाद" छे, ज्यारे निम्बार्काचार्य ना मतने "द्वैताद्वैतवाद" कहे छे. वल्लभाचार्यजी नी विचारधारा "शुद्धाद्वैतवाद" अथवा "अखंड ब्रह्मवाद" ना नामथी जाणीती छे.'

'माहिती तो बहु सरस आपी ! भारतीय अध्यात्मिक विचारधारा मां पण केटली विविधता छे ! परंतु आ बधुं मुंझवण वधारे तेवुं छे. आ बधामां आपणे "गुर" तरीके कोने पसंद करवा ? जो बधाज आचार्यो ज्ञानी हतां, तो केवीरीते नक्की करवुं जोईए ?'

'वात साची छे. आ सर्वे आचार्यों सामान्य मनुष्यो न हतां, परंतु विभिन्न देवोना अवतार हतां अने जे ते समयमां विशिष्ट प्रयोजनथी प्रादुर्भूत थया हतां. तेथी तेमनामां दिव्य शक्ति हती.'

'आ बधामां शंकराचार्यजीनुं नाम वधु जाणीतुं छे, तेओ कोनो अवतार हतां ? शुं प्रयोजन हतुं तेमना अवतार नुं ?'

'तेओ साक्षात महादेवजी नो अवतार होवानुं मानवामां आवे छे. ते समयमां बौद्ध धर्म ना "शुन्यवाद" थी समाज भ्रमित थयेलो हतो. तेथी तेमांथी उगारवा तेमणे वेदांत नो प्रचार कर्यो हतो.'

'तो पछी वल्लभाचार्यजी ?

......चालु ......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ७. (चालु) "गुरु कोण ?"

******************

चालु..........

'श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात भगवान श्रीकृष्ण ना मुखार्विंद ना अवतार मनाय छे.'

'बधा आचार्यों ज्ञानी, विद्वान, विविध देवोना अवतार स्वरुप छे, तेम स्वीकारीए, छतां ते सौ मां "गुरु" तरीके कोने पसंद करवा, ते समजातुं नथी'.

'याद छे पहेला भागवत ना प्रमाण विशे चर्चा करेली ?'

'हा, भागवत भगवान की वाणी छे, माटे ते "शब्द प्रमाण" छे, एमज ने ?'

'तो भागवतना वचन पण याद हशे के विविध देवताओं भगवान ना अंश - कला अवतारो छे, जयारे "श्रीकृष्ण" स्वयं ज भगवान छे, अर्थात् तेमनुं सामर्थ्य असीमित छे.'

'हा बराबर याद छे. "भगवान" कहो के "कृष्ण" कहो एक ए वात छे.'

'हवे विचारो के कोई भगवान ना अंश ना अवतार होय, अने बीजा स्वयं भगवान नोज अवतार होय तो कोने पसंद करशो ?'

'स्वाभाविक ज छे के भगवान श्रीकृष्ण ना अवतार होय तेमने ज "गुरु" तरीके स्वीकाराय !'

'तेनो विशेष लाभ जाणो छो ?'

'शुं कहेवा मांगों छो ?'

'भगवद् शास्त्रो ए भगवान नी वाणी छे. तेथी जो भगवान ना अवतार रुप आचार्य ने "गुरु" तरीके स्वीकार्या होय तो शास्त्रोनी वाणीना साचा खुलासा मले खरुंने !'

साची वात छे. एटले "श्रीवल्लभाचार्यजी" ने गुरु करवा वधु हितावह छे एम एम कहो छो ने ?'

'बराबर समज्या'

'परंतु, तेमने साक्षात् भगवान ना अवतार होवाना कोई प्रमाण खरा ?, "प्रमाण" नी समझ आपी छे, एटले एमनेम वात गले न उतरे !'

'जो तेमनुं जीवनचरित्र वांचो तो तेमनी दिव्यता ना, तेमना भगवान होवाना अनेक प्रमाण मली रहेशे !'

'कोई विशेष प्रसंग कहेशो ?'

'तेमना पूर्वज यज्ञनारायण भट्टने साक्षात भगवाने यज्ञवेदीमांथी प्रकट थई तेमना कुलमां सो सोमयज्ञ (विशिष्ट प्रकार नो यज्ञ) पुरा थतां प्रकट थवानुं वरदान आपेलु. तदनुसार तेमना पिता लक्ष्मण भट्ट द्वारा ते पुरां थतां अग्निकुंडमांथी श्रीवल्लभाचार्यजीनुं प्राकट्य थयुं हतुं. तेथी तेमने अलौकिक अग्नि स्वरुप मानवामां आवे छे.'

'आश्चर्यजनक घटना कहेवाय !'

'तेवीज रीते ज्यारे तेमणे भूतल परथी विदाय लीधी त्यारे पण सदेहे "तेजपुंज" रुपे अंतरीक्ष तरफ प्रयाण कर्युं हतुं.'

'अद्भुत ! परंतु अग्नि नुं तात्पर्य !'

'अग्नि भगवान ना मुखार्विंद रूप छे.'

'ते केवीरीते ?'

'तमे कोई यज्ञ थतो जोयो छे ?'

'हा, तेमां ब्राह्मणो स्वाहा बोली घी इत्यादि नाखतां होय छे !'

'बिलकुल. "यज्ञ" भगवान नुं रुप छे तेम शास्त्र कहे छे. यज्ञकुंड भगवान नुं मुख छे. तेथी तेमां विविध पदार्थों नी आहुति अपाय छे, जे भगवान स्वीकारे छे.'

'तात्पर्य शुं छे ?'

'एज के श्रीवल्लभाचार्यजी (अग्नि रुप) भगवान श्रीकृष्ण ना मुखार्विंद नो अवतार छे.'

चालु ..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ∗ पुष्टि स्वाध्याय (१८) ∗
## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ७. (चालु) "गुरु कोण ?"

******************

चालु ,............

'एक महत्वपूर्ण प्रमाण ए छे के स्वयं श्रीवल्लभाचार्यजीए पोताना "सुबोधिनी" नामक ग्रंथनी शरुआतमांज स्पष्टता करी छे के "आ विश्व ना उद्धार माटे भागवत नो साचो अर्थ प्रगट करवा माटे वाक्पति वैश्वानर सिवाय अन्य कोई समर्थ होई न शके, तेथी स्वयं भगवाने अवतार रुप मने वेदव्यासजी नी माफक मनुष्य देह धारण करी, ते करवा माटे आज्ञा करी छे". तेमनी भगवद्रुपतानुं आथी विशेष शुं प्रमाण होई शके ?'

'अद्भुत ! हवे शंकाने स्थान ज नथी, परंतु तेमने "वाक्पति" अने "वैश्वानर" शा माटे कह्या छे ?'

'तेओ भगवद् स्वरुप होवाथी वेदनी ऋचा रुप वाणी ना पति गणाय, अने अलौकिक अग्नि ने "वैश्वानर" कहेवाय, तेथी तेओ ए नामथी पण ओलखाय छे'.

'हजी एक सवाल छे । श्रीवल्लभाचार्यजी तो साडा पांचसो वर्ष पूर्वे थई गया तो आजे तेमने "गुरु" केवीरीते बनावाय ?'

'आपणे विविध विषयो नुं ज्ञान तेना निष्णातोना पुस्तकोथी ज तो मेलवता होईए छीएने ! भले तेओ आजे हयात न होय, बराबरने ?

'वात तो साची छे !'

'कोईकने "गुरु" बनाववानुं प्रयोजन तो तेमना द्वारा ज्ञान प्राप्त करवानुं, तेमनुं मार्गदर्शन मेलववानुं ज होय छे ने ?'

'हा, खरी वात छे.'

'जेम भागवत नी रचना वेदव्यासजीए करी छे, जेओ आजे प्रत्यक्ष विद्यमान नथी छतां तेओ भागवत ग्रंथ द्वारा पोते समाधिमां जोयेली भगवान नी लीलाओ ए ग्रंथ द्वारा आपणने समजावी रह्या छे, तेम श्रीवल्लभाचार्यजी पण परोक्षमां तेमना द्वारा रचित अनेक ग्रंथोमां बिराजे छे. भागवत, जेवीरीते भगवाननुं "वांग्मय स्वरुप" छे, ते प्रमाणे श्रीवल्लभाचार्यजीना ग्रंथो पण तेमनुं "वांग्मय स्वरुप" छे, अने तेना द्वारा शास्त्रोना खुलासा तेओ करी शके छे.'

'बीजी एक वात महत्व नी समजवा जेवी छे'.

'शुं कहेवा मांगो छो ?'

'जेम भगवान सर्व समर्थ - कालातित छे, तेमने माटे स्थान के समय नी मर्यादा होती नथी,

तेओ सर्व कालमां, सर्व स्थाने अस्तित्व धरावे छे तेम भगवदावतार श्रीवल्लभाचार्यजी नी हयाति वर्तमानमां नथी तेम न कहेवाय !. तेमनुं एवुं माहात्म्य छे के पोते प्रत्यक्ष हाजर न होवा छतां पोतानां वंशज द्वारा तेमनुं अवतार कार्य करी शके छे.'

'समजाय छे. तेमनी हयातिनुं अन्य कोई प्रमाण खरुं ?'

'तेमना जीवनकाल दरम्यान तेमणे समग्र भारतनी त्रण वखत पदयात्रा करी हती. त्यारे तेमणे करेला मुकामोना स्थानों तेमना बेठकजीओ तरीके प्रसिद्ध छे, ज्यां तेमना अनुयायियो तेमनी सेवार्थे जाय छे. घणा लोकोने तेमनो अनुभव थया होवाना प्रमाण उपलब्ध छे.

चालु..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (१९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ८. "शुद्धाद्वैत विचारधारा"

*****************

'तमे कह्यु के श्रीवल्लभचार्यजीए "शुद्धाद्वैत मत" स्थापित कर्यो छे, तेनु तात्पर्य शुं?'

'तमारा मन मा भगवान् विशे जाणवानु कौतूहल छे, तमे कोण छो ते तमे जाणता नथी, आपणे आ वैविध्यपूर्ण विशाल विश्वने जोइए छिऐ, ते केवीरीते अस्तित्व मा आव्यू, वगेरे अनेक बाबतों जाणवा नी आपणी जिज्ञासा होय छे. आ बधी बाबतो विशे श्रीवल्लभाचार्यजीए शास्त्रो ना आधारे जे खुलासा कर्या छे, तेने तेमनी "शुद्धाद्वैत विचारधारा" कहेवाय छे."

'पोताना कया ग्रन्थ मा तेमणे आ विचारधारा प्रस्तुत करी छे?'

'आम तो तेमणे अनेक ग्रंथो मा आ बधी बाबतो नो उल्लेख करेलो छे, जेना नाम छे - षोड़श ग्रंथो, सुबोधिनी अणुभाष्य अने तत्त्वर्थदीपनिबंध, परंतु छेल्ला ग्रंथ जेने "निबन्ध" पण कहेवाय छे, तेमा तेमने आ विषयो नी विस्तृत चर्चा करी छे.'

'शुं तेमा तेमणे पोताना विचारो दर्शाव्या छे ?'

' ना, तेमणे आ ग्रन्थ नी शरूआतमाज खुलासो कर्यो छे, के "आ ग्रन्थ हुं वेद, गीता, ब्रह्मसूत्रों अने भागवत ना प्रमाणो ना आधारे लखी रह्यो छु". तेओ "सत्यवक्ता" होवाथी तेमणे आ कबुलात करी छे.'

'शुं आ तेमनो एक सलंग ग्रन्थ छे?'

'ना, तेमणे ते त्रण प्रकरणो मा आलेख्यो छे.'

'कया कया प्रकरणो छे ?'

'१.शास्त्रार्थ प्रकरण, जेनो आधार गीता छे; २. भागवतार्थ प्रकरण, जेनो आधार भागवत छे, अने 3. सर्वनिर्णय प्रकरण, जे अन्य बधाज वेदादि भगवद शास्त्रो ना आधारे लख्यु छे."

'एटलेके तेमणे समग्र शास्त्रो नो सार तेमना आ ग्रन्थ मा समजाव्यों छे!'

'बलकुल. तेओ आ बधा शास्त्रोंने अलग अलग प्रमाण नथी कहता, परंतु ते सर्व शास्त्रो नी एकवाक्यता ने प्रमाण माने छे.'

'सरस. एटले कही शकाय के तेमना वचन संदेह रहित छे !'

'तेथीज तो ते सर्वग्राहय छे'

'समजाय छे.'

चालु ........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ८. (चालु) "शुद्धाद्वैत विचारधारा"

***************************

चालु...........

"शुद्धाद्वैत" शब्द नु शुं तात्पर्य छे ?'

'शुद्धादैत मा बे शब्दो छे - "शुद्ध" अने "अद्वैत".

'तेनो शो अर्थ ?'

'जे बे होय तेने "द्वैत" कहेवाय, जे बे जुदा जुदा न होय, परंतु एकज , एकरुप होय तेने "अद्वैत" कहेवाय '.

'शेना सन्दर्भ मा एक अने बे नी वात छे ?'

'ब्रह्म अने जगत विशे'

'ए तो बे अलग अलग बाबतो छे. "ब्रह्म" शब्द थी भगवान नु ज तात्पर्य छे ने ? अने "जगत" तो आ समग्र विश्व जेने आपणे जोई शकीए छीए - अनुभवी शकीए छीए ! ए बेनी तुलना केवीरीते थई शके ?'

'एज तो समजवानु छे. याद छे उपनिषद वाक्य "एकमेवाद्वितियं" ?

'ए तो "ब्रह्म" विशे कहेवामा आव्यू छे ने, ते मात्र एकज छे, अन्य कशुज नथी !'

'बराबर याद छे ! तेथी शंकराचार्यजी कहे छे के आ सृष्टिमा ब्रह्म सिवाय बीजा कशा नु अस्तित्व नथी. माटे जेने आपणे "जगत" कहिए छिए ते "मिथ्या" छे, तेवु वास्तवमा कशु छे ज नहीँ, आपणो भ्रम मात्र छे.'

'परंतु जगत ना विविध पदार्थो नो तो आपणे अनुभव करिए छीए !'

'ते आपणु अज्ञान छे, तेम तेओ कहे छे. "ब्रह्म" ना स्वरूप ने आपणे जाणता नथी माटे.

वास्तव मा ते बधु ब्रह्म ज छे. तेथी तेमना मत ने "केवलाद्वैत वाद" कहेवाय छे. एटलेके मात्र ब्रह्म नु ज अस्तित्व छे, ते तेमनो सिद्धान्त छे.'

'जो जगत जेवु काई नथी तो ते देखावा नु कारण ?'

'शंकराचार्यजी समजावे छे के "माया" नामनी एक जादूगरनी जेवी शक्ति छे, जे न होय तेम छता तेवु होवानो भ्रम उभो करी शके छे.'

'आश्चर्य थाय तेवु छे. उपनिषद नी वात मानिए तो आ साचु लागे छे !. तो शुं श्रीवल्लभचार्यजी आ वात नथी स्वीकारता ?  तेओ पण वेद-उपनिषद ने तो प्रमाण गणे ज छे ने !'

'हां परंतु आवु अर्थघटन तेमने मान्य नथी'.

'रसप्रद वात छे !'

चालु ...........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ८. (चालू)  "शुद्धाद्वैत विचारधारा)

***************************

चालु ........

'तो पछी श्रीवल्लभाचार्यजी नी जगत विशे शुं मान्यता छे ?'

'तेओ जगत ने ब्रह्म जेवु ज "सत्य" माने छे.'

'शंकराचार्यजी थी बिलकुल उल्टुज अर्थघटन !'

'हा, परंतु ते तेमनी कल्पना नथी. तेओ ते माटे उपनिषद अने भागवत ना प्रमाण आपे छे.'.

'कया प्रमाण  छे.?'

'उपनिषद कहे छे - "सर्वं खलु इदं ब्रह्म", आ जे जगत देखाई रह्यु छे, ते खरेखर ब्रह्म ज छे.

'एटले के जगत पण ब्रह्म नुज रूप छे !'

'हा, केम न होई शके ?. ब्रह्म ने "सर्व व्याप्त" अने "सर्व समर्थ" कह्या छे, खबर छे ने ?'

'हा, पण तेथी शुं ?'

'आ सृष्टि सर्वत्र फेलायेली छे, कारण के ब्रह्म सर्व व्याप्त छे. उपनिषदे बीजी पण वात कही छे.'

'शुं ?'

'उपनिषद नु वचन छे - "एकोहं बहुश्याम प्रजायेय". ब्रह्मे विचार्यु, "हुं एकमाथी अनेक थाउ. तेथी तेणे असंख्य रूप अने नाम धारण करी लीधा'.

'केवीरीते ?'

'मात्र पोतानी इच्छा थीज. ते सर्व समर्थ छे. ते धारे ते करी शके छे !'

एटले के आ सृष्टि ना विविध पदार्थो तेना ज रूपो छे ?'

'बिलकुल. जगत मा जेटला पण जड़-चेतन पदार्थो देखाय छे, ते भगवाने पोतेज धारण करेला छे.'

'अद्भुत ! शुं भागवत मा पण आवु कोई प्रमाण छे ?'

'भागवतमा स्वयं भगवान कहे छे - "पहला हुं एकलो ज हतो, ज्यारे कांई न हतु, आ जगत रुपे पण हुं ज छु, अने ज्यारे जगत नहीं होय त्यारे पण हुंज होईश".

'परंतु भगवान तो दैवी तत्त्व छे, ज्यारे जगत ना पदार्थो तो भौतिक छे, तेमा दिव्यता देखाती नथी!'

'खबर छे, लोको यमुना - गंगा देवी नी आराधना करे छे ?'

'हा, ते तो देवी ना रूप छे'.

'परंतु लोको गंगा - यमुना नदि ना जल प्रवाह ने पण पूजे छे ने ?'

'हा, ए साचु छे'.

'कारण के तेमना देवी रूप तेमना "आधिदैविक स्वरूप" छे, ज्यारे नदी रूप तेमनु "आधिभौतिक स्वरूप" कहेवाय.

'अर्थात ते बन्ने मा अभेद छे.'

'बिलकुल. तेवीज रीते भगवान् श्रीकृष्ण ब्रह्म नु "आधिदैविक स्वरूप" छे अने जगत तेनु "आधिभौतिक स्वरूप" छे'.

'समजाय छे.'

चालु ............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ∗ पुष्टि स्वाध्याय (२२) ∗

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ८. (चालु) "शुद्धाद्वैत विचारधारा"

∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗∗

चालु.........

'तेथी ज श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे के ब्रह्म पोते ज आ जगत रूप बन्या छे, माटे जगत ब्रह्मनु "आधिभौतिक स्वरूप" छे. आ कारणे ज तेओ कहे छे के ब्रह्म अने जगत वच्चे "अद्वैत" सम्बन्ध छे.'

'एटलेके वस्तुतः ते बे जुदा नथी, परंतु एकज छे, बन्नेमा "अभेद" छे, एमज ने ?'

'माटे श्रीवल्लभाचार्यजी "अद्वैत" शब्द प्रयोग करे छे.'

'ए तो समजायु, परंतु तेओ तो "शुद्धाद्वैत" कहे छे. "शुद्ध" शब्द लगाड़वा नु प्रयोजन शुं

छे?."

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के ब्रह्म जगत रूप बनवा छता तेमा कोई प्रकार नी विकृति आवती नथी, जेवीरीते सोनानी लगडी माथी कोई घरेणु बनावीए तो तेमा सोनु जेमनु तेम शुद्ध ज रहे छे, तेमा विकार आवतो नथी. उपरान्त जगत रुपे बनवा मा माया वगेरे काई निमित्त नथी, तेओ पोतानी ईच्छा अने सामर्थ्य थी बन्या छे. माटे "शुद्ध अद्वैत" कह्यु छे. तेथी तेमनो मत "शुद्धाद्वैत वाद" कहेवाय छे'

'ओह, हवे समजाय छे के तेमनो मत शंकराचार्यजी ना "केवलाद्वैत वाद" थी अलग कई रीते पड़े छे.'

'तेने "ब्रह्मवाद" पण कहेवाय छे'

"ब्रह्मवाद" एटले शुं ?'

'शंकराचार्यजी जगत ने "माया" नु सर्जन कहे छे. माया नो अर्थ भ्रम अथवा भ्रान्ति थाय, माटेज तेओ जगत ने "मिथ्या" कहे छे. तेथी तेमना मत ने "मायावाद" पण कहेवाय छे'.

'ओह एम् वात छे !'

'परन्तु श्रीवल्लभाचार्यजीना मते जगत ब्रह्म नु ज बीजु स्वरूप छे, जगत मा जेटला रुप अने नाम छे, ते बधा ब्रह्म नाज रूप अने नाम छे. एटले कही शकाय के जगत मा आपणे जे काई जोइए छिए ते बधुज ब्रह्म छे, ब्रह्म जेवु ज सत्य छे. माटे तेमनो मत "ब्रह्मवाद" तरीके ओलखाय छे.'

'खूब सरस, अद्भुत!'.

'आ बाबत नो खुलासो श्रीवल्लभचार्यजीए पोताना निबंध ग्रन्थ ना मंगलाचरण मा ज करता कह्यु छे के "अद्भुत कर्म करवावाला भगवान् श्रीकृष्ण विविध रूप अने नाम धारण करी जगत रुपे क्रीड़ा करी रह्या छे".

'हवे "शुद्धाद्वैत" नो मर्म बराबर स्पष्ट थई गयो ! परंतु, एक वात हजी समजाती नथी !'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### ९. "ब्रह्म-परमात्मा-भगवान"

*************************

'जुओ, आपणो मुद्दा हतो - "भगवान कोण!". तेने माटे बीजा बे शब्दो पण आव्या. वेद-उपनिषदमां तमे "ब्रह्म" कह्युं. क्यारेक "परमात्मा" शब्द-प्रयोग पण कर्यो, अने आपणे "भगवान विशे चर्चा करिए छिए. आ अलग अलग नामो नु तात्पर्य शु ? शुं आ बधा जुदा जुदा देवो छे ? आमा ईश्वर कोण ?'

'तमारी वात साची छे !. कोईपण अलग अलग नामो थी गुंचवाड़ा मां पड़ी जाय ए स्वाभाविक छे .'

'तो पहेला आ वात नो खुलासो करो'

'आनो खुलासो स्वयं श्रीवल्लभचार्यजीएज पोताना "निबंध" ग्रन्थ नी शरुआत मां ज करी दीधो छो. तेओ समर्थ गुरु छे, जेओ शिष्यो नी मुजवण जाणे छे. जुदा जुदा शास्त्रोमा विभिन्न नामोथी कोईपण भ्रमित थई शके छे.'

'शुं कह्यु छे तेमणे ?'

'तेमणे समाजाव्यू छेके "श्रुति" एटले वेदादिमां "ब्रह्म" कह्या छे, "स्मृति" एटले गीता वगेरे मां "परमात्मा" कहेवामा आव्या छे, अने भागवत आदि पुराणो मां जेमने माटे "भगवान" शब्द वपरायो छे, ते बधा ज नामो वस्तुतः "परम तत्त्व" ना ज छे जेमने "ब्रह्म" कहे छे'.

"तो पछी आ विभिन्न नामो शा माटे ?'

'ते विभिन्न नामो जुदा जुदा संदर्भो मां वपराया छे'

'केवी रीते ?'

'जुओ, कोई पुरुषने "काका" क्यारे कहेवाय ?'

'ज्यारे, तेने भत्रिजो होय त्यारे'.

'तेम कोई स्त्रीने "भाभी" संबोधन कोना सम्बन्ध थी करवामां आवे ?'

"दियर" ना सम्बंध थी'.

'एटले स्त्रियो बधी छे, परंतु दियर ना सम्बन्ध थी तेने "भाभी" कहेवाय. तेवीज रीते, भत्रीजा ना सम्बन्ध थी पुरुष ने "काका" कहेवाय,'

'हां, समजाय छे'

'अर्थात "भाभी" , "काका" वगेरे शब्दो नो प्रयोग विशिष्ठ सन्दर्भ मां करवामां आवे छे!' खरुने ?

'बराबर छे.

'ते ज प्रमाणे "परम तत्त्व" ने पण अलग अलग संदर्भोमां जुदा जुदा नामो थी संबोधवामां आवे छे."

'वधु खुलासो करो तो समजाय !'.

चालु ............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

……

## ९. (चालू) "ब्रह्म -परमात्मा - भगवान"

*****************************

चालू..........

'ज्यारे ते "परम तत्त्व" ने आपणे सर्वव्यापक मानिये त्यारे तेने "ब्रह्म" कहेवाय कारणके तेनो अर्थ ज थाय जे "सर्वव्याप्त" छे.'

'शुं तेथी वेद अने उपनिषद मां तेने माटे "ब्रह्म" शब्द कहेवामां आव्यो छे ?'

'हा जे अर्थ मां "परम तत्त्व" आ जगत नो सर्जक बने छे, तेनो नियामक बने छे अथवा तेनो आधार कहेवाय छे, ते अर्थ मां ते "ब्रह्म" छे. आ नाम थी तेनो कोइनी साथे विशिष्ट सम्बन्ध नथी, ते समग्र ब्रह्मांड साथे संलग्न छे.'

'तो पछी "परमात्मा" ?'

'ज्यारे आपणे "परम तत्त्व" ने "परमात्मा" कहिये त्यारे आपणो तेनी साथै एक विशिष्ट सम्बन्ध स्थापित थाय छे. "ब्रह्म" शब्द थी ते "परम तत्त्व" अमूर्त अगोचर, अव्यक्त छे, आपणे तेने व्यक्त करी शकता नथी. परंतु "परमात्मा" शब्द तेने एक चोक्कस अर्थ आपे छे. आपणे "जीवात्मा" कहेवाईए, त्यारे ते "परम आत्मा" - "परमात्मा" कहेवाय !'

'ओह, थोडु थोडु समजाय छे'.

'आपणे सारा खोटा काम करीए त्यारे आपणे कहेता होइए छीए के "परमात्मा"बधु जुए छे. कोई सत्कर्म करीए त्यारे पण मानिऐ छीए के परमात्मा नी प्रसन्नता माटे करीए छीए. आपणा सत्कार्यो, सद्विचारों, आपणी सद्भावनाओ मां आपणे परमात्मा नी अनुभूति करता होईए छीए.'

'साचु छे, "ब्रह्म" शब्द बोलावा थी आपणो तेनी साथे कोई व्यक्तिगत संबन्ध होय तेवो अहेसास थतो नथी, जेवो "परमात्मा" कहेवाथी थाय छे.'

'बिलकुल, एटले समजाय छे ने "ब्रह्म"अने "परमात्मा" ए बे शब्दो वच्चे नो भेद !'

'अद्भुत !, तो "भगवान्" शब्द नु तात्पर्य शुं?'

चालु..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

---

## * पुष्टि स्वाध्याय (२५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ९. (चालु) "ब्रह्म-परमात्मा-भगवान"

****************************

चालु .........

"परमात्मा" शब्द थी ते "परम तत्त्व" नो प्राणी मात्रा साथे सम्बन्ध स्थापित थाय छे, परंतु कोई

भक्त साथे व्यक्तिगत संबंध स्थपातो नथी खरुने ?'.

'हां, बराबर छे.'

'परंतु ते परमात्मा ज्यारे भूतल उपर अवतार धारण करे छे, त्यारे ते विशिष्ट बने छे. तेमनो कोई भक्त साथे सम्बन्ध स्थापित थाय छे'.

'केवी रीते ?'

'परमात्मा ज्यारे भक्त प्रह्लाद नी रक्षा करवा माटे "नृसिंहजी" नु रूप धारण करी प्रकट थया त्यारे तेमनो प्रह्लादजी साथे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित थयो. श्रीरामचंद्रजी स्वरूपे परमात्माए अवतार लीधो त्यारे अयोध्यावासीओ, शबरी वगेरे अनेक भक्तो साथे तेमनो सम्बन्ध स्थपायो, त्यारे तेओ "भगवान्" कहेवाया'.

'शु एटले परमात्मा अवतार धारण करे त्यारे "भगवान्" कहेवाय ?'

'बिलकुल. परमात्मा ने ज्यारे कोई भजे, त्यारे तेमना भक्त ना सन्दर्भ मां तेमने "भगवान्" कहेवाय, जेवीरीते भत्रीजा ना सम्बन्ध थी कोई व्यक्ति नी "काका" तरीके ओलखाण थाय छे.'

'समजायु, परमात्मा नी कोई भक्ति करे त्यारे तेमने "भगवान्" कहेवाय, एमजने ?'.

'बराबर. "भगवान" शब्द नु एक ख़ास तात्पर्य छे'.

'ते शुं ?'

"भगवान" एटले "भग वाला". "भग" एटले गुण अथवा धर्म. परमात्मा ज्यारे भगवान तरीके प्रकट थाय छे,त्यारे तेमना मां रहेला छ विशिष्ट धर्मो प्रकट थाय छे'.

'कया धर्मो?'.

'भगवान मां ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान अने वैराग्य ए छ गुणों रहेला छे. तेथीज तेमने "भगवान" कहेवाय छे' आम तेओ "षडगुण संपन्न" कहेवाय छे.'

'हवे स्पष्ट थयु आ त्रण नामो नु तात्पर्य.'

'तेथी श्रीवल्लभाचार्यजीए खुलासो कर्यो छे के तेमणे पोताना निबंध ग्रन्थ ना त्रण प्रकरणो मां अलग अलग शब्दो नो प्रयोग कर्यो छे. शास्त्रार्थ प्रकरण मा तेमणे "ब्रह्म" शब्द प्रयोग कर्यो छे, सर्वनिर्णय प्रकरण मां "परमात्मा" तरीके सम्बोधन कर्यु छे, ज्यारे भागवतार्थ प्रकरण मां "भगवान" कह्या छे."

'परंतु ते बधा नाम वास्तवमां तो ते "परम तत्त्व" ना ज छे, एमज ने?.

'बराबर समज्या'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी).

## * पुष्टि स्वाध्याय (२६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १०. "परम तत्त्व - श्रीकृष्ण"

**********************

'परंतु हजी एक सवाल उभो छे. वारंवार तमे "कृष्ण" नामनो उल्लेख कर्यो छे. तो तेओ आ त्रण मां कोंनु नाम छे?'

'बहु सरस सवाल कर्यो ! "भगवान" शब्द नु तात्पर्य तो समजायुने?. भागवत कहे छे - "कृष्ण स्वयं ज भगवान छे".

'एटले तेमणे "कृष्ण" रुपे अवतार धारण कर्यो माटे तेओ "भगवान" कहेवाय !'

'ना, तेमनो "अवतार" नथी, जेवी रीते वामन, नृसिंह के बुद्‌ध ना अवतार थया. कृष्ण तो स्वयं "अवतारी" छे, जेमणे आ बधा अवतारो लीधेला छे'

'ओह एटले तेओ "परम तत्व" नु ज मूल स्वरूप छे ?'

'हा, ब्रह्म, परमात्मा , भगवान ए बधाज नामो तेमनाज छे. तेथी तेमने "परब्रह्म परमात्मा भगवान कृष्ण" कहेवाय.'

'एटले ए त्रणेय नामो विशेषण तरीके "कृष्ण" माटे वपराय !'

'बिलकुल !'

'परंतु, आनु कोई प्रमाण आपशो ?'

'गीता मां भगवान श्रीकृष्ण कहे छे - "वेद मारुं ज प्रतिपादन करे छे", अर्थात "वेद मां मने ज ब्रह्म कह्यो छे".

'मतलब के "कृष्ण" नाम कोई देवता नूं नथी, एमज ने?'

'हां, "कृष्ण" नाम ज "परम तत्व" नो संकेत करे छे'

'एम शा माटे मानी लेवाय ?'.

'कारण के "कृष्ण" शब्द मां बे अक्षर छे - "कृष्" अने "ण". पहेलां नो अर्थ थाय - "सत अथवा सत्ता" एटले "अस्तित्व", अने "ण" नो अर्थ छे - "आनंद". अर्थात कृष्ण शब्द नो अर्थ ज "सदानंद" थाय, जे "परम तत्व" नु मूल स्वरूप छे !'.

'एटले गीता नो उपदेश स्वयं परमात्मा ए ज आपेलो छे ?'

'बराबर समज्या !'

चालू............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### १०. (चालु) "परम तत्व - श्रीकृष्ण"

**************************

चालु..........

'भगवान श्रीकृष्ण परब्रह्म परमात्मा, सर्वोच्च तत्त्व होवाना तो असंख्य प्रमाणो गीता, भागवत आदि पुराणो, उपनिषदोमा प्राप्त थाय छे.'

'अन्य शास्त्रो - पुराणो माथी प्रमाण आपशो?'

"ब्रह्म संहिता" मां स्वय ब्रह्माजी कहे छे के कृष्ण अनादी, पुराणपुरुष, सर्वना मुलसंचालक छे. सर्वना कारणों नु कारण छे, अर्थात तेओ ज आ जगत नु कारण छे.'

'तो शुं महादेवजी नूं आवुं कोई वचन छे ?'

'विष्णु पुराण मां शिवजी कहे छे के सर्व आराधनाओ मां विष्णु अर्थात कृष्णनी आराधना श्रेष्ठ छे. आ बन्ने देवो सृष्टि नी उत्पत्ति अने संहारना संचालक छे'

'भागवत नु प्रमाण कहेशो?'

'भागवत तो स्पष्ट ज कहे छे -"कृष्णस्तु भगवान स्वयं". शुकदेवजी समजावे छे के नारद, ब्रह्मा, बरुण आदि सर्वे कृष्ण नी स्तुति करे छे, सामवेद उपनिषदों तेमनु गान करे छे, योगी - ज्ञानी तेमनु ध्यान धरे छे, सुर के असुर तेमनो आदि - मध्य -अंत जाणी शकता नथी. गोवर्धन लीला तेमज कौतुक लीला मा अनुक्रमे इंद्रे तेमज ब्रह्माजी ए पण कबुल्यु छे के श्रीकृष्ण साक्षात परब्रह्म छे.'

'अने गीता ?

'गीतामां तो अर्जुन भगवान कृष्ण नी ओलखाण करावता ज कहे छे के तेओ परब्रह्म, परमधाम, परमपवित्र, परमपुरुष, आदिदेव, दिव्य, अजन्मा छे.'

'तो शुं भगवान कृष्ण ना कोई वचन खरा ?'

'केवो सवाल करो छो?. तेओ कहे छे के "लोक अने वेद मां हुं ज पुरुषोत्तम नाम नाम थी प्रसिद्ध छुं". "जेम दोरा मां मणका परोवायेला होय तेम सर्व कांई मारी साथे जोडाएल छे.'

'श्रीकृष्णे अर्जुनने शुं उपदेश आप्यो छे ?'

"मारामां मन लगाव, मनेज भज मारे ज शरणे आव -हुं तने मुक्त करीश, मारी समान के माराथी अधिक कोई नथी, इत्यादि वचनो शुं "परमात्मा" सिवाय कोई कही शके ?

'अद्भुत ! मतलब बधाज शास्त्रो एक सुर मा प्रतिपादित करे छे के "श्रीकृष्ण" परमोच्च तत्त्व छे.'

'शुं हजी कोई संशय छे ?'

चालु.............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२८) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १०.(चालु) "परमतत्त्व श्रीकृष्ण"

*************************

चालु ,............

"कृष्ण" परमतत्व छे, ते तो बराबर समजमा आव्यू, परंतु आपणे "भगवान श्रीराम", "भगवान बुद्ध" वगेरे पण कहेता होईए छिए ! तो शु तेओ भगवान न कहेवाय ?. तेमनामां अने भगवान श्रीकृष्ण मां फरक शुं ?'

'आवो ज सवाल श्रीवल्लभाचार्यजीने तेमना एक सेवक गदाधारदास ना काकाए पूछ्यो हतो. तेमणे पण एम् कहेलु के भगवान् तो बधाज सरखा होयने ? तमे कृष्ण ने महत्ता केम आपो छो ?'

'शुं खुलासो कर्यो हतो श्रीवल्लभाचार्यजीए ?'

'तेमणे समजावेलु के प्रत्येक प्रदेशना अधिपतिने "राजा" कहेवाय छे, परंतु समग्र देशना राजाने "चक्रवर्ती राजा" कहेवाय छे, जेना नियंत्रण मां बधा राजा ओ होय छे.'

'जेम पहेलां दिल्ही मा शहेनशाह नु राज हतु,जे समग्र देश पर शासन करतो हतो'.

'हां, परंतु प्रत्येक प्रदेशना पण अलग अलग शासनकर्ताओं हता, जेओ पण "राजा" कहेवाता हता'. तेम छतां तेओ सर्व सत्ताधीश न हता. तेओ, जे सर्वोपरि चक्रवर्ती राजा हतो, तेना नियंत्रण मा बधा राजाओ हता.'

'एटले के विभिन्न राजाओ अने चक्रवर्ती राजा मा भेद छे?'

'बिलकुल, तेवीज रीते श्रीकृष्ण चक्रवर्ती राजानी माफक सर्वसामार्थ्यवान षडगुण संपन्न भगवान कहेवाय परंतु अन्य सर्वे देव - देवियो तेमनी ज विभूति रुप छे, जेमना मां जे ते अवतारो माटे आवश्यक सामर्थ्य होय छे.'

'शुं एटले जेम जुदा जुदा मंत्रीओ ने अलग अलग कार्य सोंपवामां आवेला होय, जेमनी पासे मर्यादित सत्ता होय, ज्यारे प्रधान मंत्री सर्व सत्ताधीश होय छे तेम ?'.

'हां, तेम समजी शकाय !. मुख्य त्रण देवताओं - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ए अनुक्रमे रजस, सत्व अने तमो गुण ना अधिष्ठाता देव छे. जेमने उत्पत्ति, रक्षण अने संहार नु कार्य सौंपेलु छे, परंतु श्रीकृष्ण सर्व सत्ताधीश सर्वोपरि छे.'

'शुं विभिन्न देवीओमां पण तेवीज रीते मर्यादित सत्ता होय छे ?'

'बिलकुल, लक्ष्मीजी धन नी अधिष्ठात्री देवी छे, तेम सरस्वतीजी ज्ञान नी अधिष्टात्री देवी छे.'

'बहु सरस !. हवे परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण अने तेमनी विभूति रूप विभिन्न देवी-देवताओं मां तारतम्य स्पष्टपणे समजायु'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (२९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ११. "सच्चिदानंद ब्रह्म"

******************

"परम तत्त्व" शुं छे, तेतो समजायु, परंतु तेनु स्वरूप कैवूं छे ?'

',श्रुति मा "परम तत्त्व"ने माटे कह्यु छे - "सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म" तथा "सत्यं विज्ञानं आनंदम ब्रह्म", एटले के ते "सच्चिदानंद" ब्रह्म छे. अर्थात ते "सत" - 'अस्तित्व', "चित" - 'चैतन्य' अने "आनंद" युक्त छे'.

'एटले शुं आ त्रण ब्रह्म ना मुलभुत तत्त्वों छे ?'

'हां, श्रीवल्लभाचार्यजी 'निबंध' ग्रन्थ मां समजावे छे के ब्रह्म "सच्चिदानंद रूप, व्यापक अने अव्यय" छे. ते बधी जातनी "शक्तिओ थी परिपूर्ण" छे, "स्वतन्त्र" तथा "सर्वज्ञ" छे तेमज प्रकृति ना गुणो थी वर्जित छे.'

'व्यापक अने अव्यय कहेवानूं तात्पर्य शुं ?'

'"व्यापक" शब्द थी समजावे छे के ते "देश" (स्थान) अने "काल" (समय) नी मर्यादा मां बंधाएल नथी. एटले के ते सर्वत्र एक साथे, अने सर्व काल मां - भुत, वर्तमान, भविष्य मां विद्‌यमान छे. "अव्यय" शब्द थी ते "अविनाशी" होवानु सूचवे छे, एटले तेना परिमाण नी वध-घट थती नथी. तेनो ज्यारेय उच्छेद थतो नथी.'

'शा माटे तेने सर्व शक्तियोथी परिपूर्ण, स्वतन्त्र, सर्वज्ञ कहे छे?'

'कारण के जे अपार "क्रियाशक्तिओ" अने "ज्ञानशक्तियो" वालो होय तेज "स्वतन्त्र" होइ शके. ते "सामर्थ्यवान" होवाना कारणे "निर्धर्मक" होवा छतां उपास्य बनी शके, अने बधा ने वश मां राखी शके, अने गुणो थी वर्जित होवा छतां "ऐश्वर्यादि गुणो" धारण करी शके'.

'शुं एनु तात्पर्य ए छे के ते "ब्रह्म" रुपे व्यापक होवा छतां तेनी उपासना करनार भक्त नी समक्ष "भगवान" रुपे प्रकट थई शके छे ?'

'हा, एज वात ब्रह्म अने भगवान शब्दो ना भेद मा समजावी हती !,'

'समजाय छे के जे सर्वज्ञ अने सर्व शक्तिमान होय ते ज ब्रह्म रुपे "सर्व व्याप्त" होवा छतां भक्त माटे "भगवान"बनी शके छे.'

'बिलकुल'.

चालु............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय (३०) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ११. (चालु) "सच्चिदानंद ब्रह्म"

*************************

चालु...........

'शुं ब्रह्म मा बीजा पण गुणो रहेला छे ?'.

'ब्रह्म मा गुणोनो भण्डार छे, तेम कही शकाय !'

'एवा कया विशेष गुणो छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के ब्रह्म सर्व ना आधारभूत छे, एटले समग्र विश्व तेना पर टकेलु छे. ते माया शक्तिने पोतांना वशमां राखे छे. ते "आनंदाकार" अने "उत्तम" छे, तथा जगतमां दिखाता पदार्थो ना बाधा गुणोथी विलक्षण छे.

'कया शास्त्रमां आना प्रमाण मले छे ?'

'गीता मां भगवान कृष्ण कहे छे के "माया मारे आधीन छे, जेओ मने भजे छे, ते माया ने तरी शके छे", तेओ आनंदाकार अने उत्तम छे'

'शुं भागवत मां भगवान ना गुणो नु वर्णन छे ?'

'भागवत मां तो भगवान ना अगणित गुणो वर्णववा मां आव्या छे, जेवा के सत्य, पवित्रता, दया, क्षान्ति, त्याग एवा अनंत गुणो बतावावा मां आव्या छे.'

'ब्रह्म ने साकार शा माटे कह्या छे ?'

'सच्चिदानंद ब्रह्म मा मुख्य तत्त्व "आनंद" छे, अने तेज तेने "साकारत्व" प्रदान करे छे. तैत्तिरीय उपनिषद कहे छे, "आनंद ज ब्रह्म छे".

'अद्भुत !'

'उपनिषद ब्रह्म ने माटे कहे छे - "ते रसरूप छे" ते रस ज "आनंद" छे'.

'ब्रह्म ने तो "व्यापक" कहो छो, तो तेने आकार केवी रीते होइ शके ?. ब्रह्म तो "निराकार" छे, एम् घणा कहे छे !'

'कृष्ण ए परब्रह्म छे, ए तो स्वीकारो छो ने ?'

'हा, हवे तेमां संदेह नथी'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के निराकार व्यापक ब्रह्म नूं आनंदमय घनीभूत स्वरूप एज "कृष्ण".

'अर्थात "कृष्ण" के ब्रह्म नूं "साकार" स्वरूप छे '.

'बिलकुल, तेथी ज तेओ कृष्ण माटे कहे छे "आनंद मात्र करपादमुखोदरादि" !'

'शुं तात्पर्य तेनु?'

'जेवीरीते साकर ना बनेला पुतला ना प्रत्येक अवयव मा साकर ज होय, तेवीज रीते "कृष्ण" ना स्वरूप मां हस्त, चरण, मुख, उदर सर्व कांई मात्र आनंद रूप ज छे.'

'एटले कृष्ण आनंद नु साक्षात स्वरूप छे !'

'हां , तेथीज भागवत मां वर्णवेली श्रीकृष्ण नी कथा तेने श्रवण करनार ने आनंद आपे छे, रसतरबोल करे छे.'

'शुं एज कारण छे के श्रीवल्लभाचार्यजी "कृष्ण भक्ति" नी तरफेण करे छे!.'

'स्वाभाविक छे, जो आनंद प्राप्त करवो होय तो, जेमना मां आनद प्रचुर मात्रामां होय तेनीज उपासना करवी जोइए !'

"कृष्ण भक्ति" नु माहात्म्य समजाय छे'

चालु..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ११. (चालू) "सच्चिदानन्द ब्रह्म"

*************************

चालु ........

'एक बाबत हजी स्पष्ट नथी थई '.

'शुं'

'ब्रह्म मा अनंत गुणो विद्यमान छे, एटले ते "सगुण"छे, ते कृष्ण स्वरूपे आनंदाकार छे, अर्थात "साकार " छे, बराबर !'

'एज तो समजाव्यू'.

'तो पछी केटलाक तेने "निर्गुण - निराकार" शा माटे मानें छे ?'

'तमारी वात साची छे. शंकराचार्यजी ज ब्रह्म ने "निर्गुण - निराकार" कहे छे'.

'आवो विरोधाभास शा माटे, तेओ पण वेद-उपनिषद, गीता ना प्रमाण नो स्वीकार तो करेज छे !'

'श्रुतिओमां बे प्रकार ना विधान मले छे, - केटलीक श्रुतियो ब्रह्म नु "सगुण - साकार" रुपे प्रतिपादन करे छे, तो अन्य केटलीक ब्रह्म ने "निर्गुण - निराकार" बतावे छे'.

'ओह, एम् वात छे ?'

'शंकराचार्यजी तेथी केटलीकने "निर्गुण श्रुति" कहे छे, अने बीजी "सगुण श्रुति", आम बे विभाग करे छे'.

'शुं तात्पर्य छे तेमनुं ?'

'तेओ एम् माने छे के निर्गुण श्रुतियो जेनु वर्णन करे छे ते ज मुख्य ब्रह्म छे, जेने तेओ "परब्रह्म" कहे छे, परंतु सगुण श्रुतियो जे ब्रह्म विशे कहे छे, ते मात्र उपासना करवा माटे ना प्रयोजन थी छे, ते गौण छे, तेथी तेने "अपरब्रह्म" नाम आपे छे.'

'ओह !, एटले तेमना दृष्टिकोण थी ब्रह्म नु वास्तविक स्वरूप "निर्गुण - निराकार" छे, जेने तेओ "परब्रह्म" तरीके संबोधे छे'.

'हां, एमज छे.'

'शंकराचार्यजी नी वात मां वजूद तो जणाय छे, कारणके सगुण-निर्गुण, अथवा साकार - निराकार, एकबीजा ना विरोधी गुणो छे, जो एक होय तो बीजु न होई शके !'

'श्रीवल्लभाचार्यजीए आनो सरस खुलासो आप्यो छे. तेओ कहे छे के ज्यारे श्रुति ब्रह्म ने "सर्व शक्तिवाला" कहे छे, एटलेके ब्रह्म सर्व प्रकार नु सामर्थ्य धरावे छे, तो तेमां एक साथे बन्ने गुणो केम न होई शके ?. जेवीरीते सर्प सीधो होइ शके, तेम कुंडलाकार पण होइ शके छे. जेना मा बधुज सामर्थ्य होय, तेने माटे कशुं असंभव न होय !'.

'वात समजाय तेवी छे.'

'तेथी श्रुतिमा विधान छे, के "तेने हाथ नथी, पण पकड़े छे, पग नथी पण दोड़े छे, ते अणु थी पण नानो छे, अने मोटामा मोटो छे.आवु मात्र ब्रह्म माटे ज संभव बने, केमके ते लौकेिक, नथी, अलौकिक छे.

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के जो आपणे वेद ने प्रमाण रूप स्वीकारीए तो तेना बधा वचनो स्वीकारवा जोइए. तेना अर्थघटन मा आपणी बुद्धि चलाववी जोइए नहीं.'

चालु ..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३२) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ११. (चालु) "सच्चिदानंद ब्रह्म"

************************

चालु.......

'बराबर छे, परंतु , तो पछी ब्रह्म ने "सगुण" मानवा के "निर्गुण" ?

'श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे के ब्रह्म " विरुध्दधर्माश्रयी" छे, एटले के एकबीजाथी विरुद्ध अनेक धर्मो ना ते आश्रय छे, तेमना मां रहेला छे. ब्रह्म नी ते विशेषता छे, असामान्य गुण छे '.

'अद्भुत !.

'ब्रह्म मां रहेला परस्पर विपरीत गुणो नो खुलासो करतां श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के तेमां प्रकृतिना सत्व, रजस् तमस गुणों नथी, ते अर्थ मा तेमने "निर्गुण" कह्या छे, परंतु, ऐश्वर्यादि दिव्य षडगुणो उपरान्त अनंत गुणो विद्यमान छे, तेथी "ते "सगुण" छे.'

'सरस हवे "विरुद्धधर्माश्रय" कहेवानु तात्पर्य पण स्पष्ट समजायु'. परंतु, शुं "सच्चिदानंद ब्रह्म" नो संबंध आ "जगत" साथे जोडाएल छे ?'

'आपणे "ब्रह्म" केवुं छे, तेतो समज्या, परंतु तेना कार्य विशे जाणिये तो आ वात समजाशे.

"सच्चिदानंदात्मक ब्रह्म" ज आ जगत ना कर्ता, अर्थात सर्जनहार छे. तेओ ज आ दृश्यमान जगत ने उत्पन्न करनारा, तथा तेना पालक तेमज संहारक पण छे.'

'आ वात नुं प्रमाण छे ?'

'जेवीरीते "ब्रह्मनु स्वरूप" "सत - चित - आनंद" रूप बताव्यू तेम तैत्तिरीय उपनिषद "ब्रह्म नु कार्य" समजावता कहे छे- "जेमाथी आ प्राणियो जन्मे छे, जेमां ते जीवे छे, अने अन्तमा जेमां पुनः लीन थई जाय छे, ते ब्रह्म छे'

ओह ! एटले श्रुति "ब्रह्म" नी ओलखाण आ रीते पण आपे छे !'

'श्रीवल्लभाचार्यजीए "शब्द प्रमाणो" ना आधारे ज बधो खुलासो कर्यो छे, तेमनी कोई वात प्रमाण विना नथी'.

'परंतु, सांभल्यु छे के जगत नी रचना तो ब्रह्माजीए करी छे ! पण ब्रह्माजी क्यांथी आव्या कारणके अगाउ कहेलु के "ब्रह्म सिवाय अन्य कोई छेज नहीं !"

'भगवाने पोतेज त्रण देवताओं - ब्रह्मा, विष्णु अने शिव ना रूप धारण कर्या छे, जे प्रकृति ना त्रण गुणो - रजस, सत्व, तमस ना अधिष्ठाता देवो छे, जेना द्वारा भगवान आ सृष्टि ना अनुक्रमे सर्जन, पालन , संहार नूं कार्य करे छे.'

'परंतु आ प्रकृति अने तेना गुणो नु अस्तित्व क्यांथी आव्यु ?'

'भगवाने ज्यारे आ सृष्टि नी रचना करी त्यारे तमना ज सत, चित, अने आनद तत्त्वौं अनुक्रमे सत्व, रजस अने तमस गुण तरीके प्रकट थया छे !'.

'पण, भगवाने आ सृष्टि नई रचना केवी रीते करी, शेमाथी करी, ज्यारे अन्य कशुं हतु ज नहीं ?'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १२. "कार्य - कारण सम्बन्ध"

***********************

'सरस सवाल पूछ्यो, परंतु ते समजता पहेलां "उत्पत्ति" नी प्रक्रिया समजवी पडशे !'

'शुं छे ते विशिष्ट प्रक्रिया ?'

'तमने खबर छे के घडो शेमाथी बने छे ?'

'माटी मा थी स्तो !'

'कोण बनावे छे ?'

'कुंभार होय तो ज घडो बने ने !'

'केवी रीते बनावे ?'

'तेना औजार - चाकड़ो अने डंडा थी.'

'अर्थात घडो बनाववा "माटी, कुंभार अने तेना औजारो"ं नी जरूर पड़े !'

'बराबर'.

'शास्त्र नी भाषामां माटी ने घड़ा नुं "उपादान अथवा समवायी कारण" कहेवाय छे, ज्यारे कुंभार तेमज तेना औजारों ने "निमित्त कारण" कहेवाय छे. ज्यारे घड़ा ने माटी नु "कार्य" कहेवाय'

'एटले शुं, जेमाथी अने जेना द्वारा कोई वस्तु उत्पन्न थाय तेने "कारण" कहेवाय अने जे वस्तु उत्पन्न थाय ते "कार्य" कहेवाय, बराबर ?'

'बिलकुल. तेवीज रीते आ जगत ना बनावनार (निमित्त कारण) भगवान छे, अने बनाव्यू पण छे तेमणे, पोताना माथी ज (उपादान कारण) !'

'अर्थात - घड़ा रूप "कार्य" एटले "जगत", अने जेमांथी जगतने उत्पन्न कर्यु छे, ते माटी रूप " "उपादान कारण" तेमज, तेने बनावनार कुंभार रूप तथा तेना औजार रूप "निमित्त कारण" पण भगवान !, एमज ने ?'

'हां, तेथी भगवान ज जगत ना "उपादान" तेमज "निमित्त" कारण कहेवाय छे.'

'परंतु घड़ा नी बाबत मां "उपादान कारण" माटी अने "निमित्त कारण" कुंभार तथा तेना औजार जुदा जुदा छे, ज्यारे जगत नी बाबत मा ते सर्वकांई भगवान ज छे, तेथी कहेवाय के "ब्रह्म जगत नुं अभिन्न निमित्तोपादान कारण छे," अथवा "जगत भगवतकार्य छे".

'एटले भगवाने पोते पोतानामांथी जगत बनाव्यु छे'.

'समजाई गयुं?'

'थोड़ीक वधु स्पष्टता करो !'

चालु ...........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १२. (चालू) "दार्शनिक सिद्धांतो"

************************

चालू...........

'आपणे बीजु उदाहरण लइए. "तल" ने पिलवामां आवे एटले "तेल" निकले, खरुने ?'

'एटले के शास्त्रनी भाषामां तल ने "उपादान कारण" कहेवाय अने तेल तेनु "कार्य" कहेवाय, एमजने ?'

'बराबर समज्या, परंतु तल माथी तेल एटला माटे निकल्यु के तल मां तेल पहेले थी रहेलु छे, अर्थात "कार्य" नु अस्तित "कारण" मा पूर्वमाज होय छे. रेती ने पिलावाथी तेल नहीं निकले, केमके रेती मां तेल मौजूद नथी.

'समजाय छे.'

'तेनो अर्थ ए पण थयो के तल मां तेल उत्पन्न करवानी क्षमता रहेली छे, अर्थात "कार्य" उत्पन्न करवानी क्षमता "कारण" मां मौजूद छे.'

'स्वाभाविक छे.'

'तेथी तल ने तेल नुं "समवायी कारण" कहेवाय छे.

'तेवीज रीते "ब्रह्म" - "जगत" नु "समवायी कारण" छे, एमजने ?'

'हां, कारणके "कार्य" रूपी जगत, ब्रह्म मां पहेले थी रहेलु छे'.

'हवे आ बाबत स्पष्टपणे समजाई गई.'

'आने "सत्कार्यवाद" नो सिद्धान्त कहेवाय छे, जेनो आधार श्रीवल्लभाचार्यजीए पोताना दार्शनिक सिद्धान्त प्रतिपादन करवा लीधो छे.'

'सरस.'

'आवोज बीजो सिद्धान्त "अविकृत परिणामवाद" नो छ'.

'अविकृत परिणाम थी तात्पर्य शुं छे ?'

'ज्यारे दूध मा मेलवण नांखिए त्यांरे तेनु दहीं बने छे, अर्थात दही रुपे परिणाम पामे छे. परंतु शुं दहीं पाछु दूध बनी शके ?'

'ना. शुं रहस्य छे?'

'कारण के दूध ना बंधारण मां "विकार" आवी जाय छे. तेथी तेने "विकृत परिणाम" कहेवाय छे.'

'ओह, एटलेके दूध ना गुणधर्मो बदलाई जाय छे !'

'हां, पण सोनानी लगड़ी माथी विविध आभूषण बनावीए तो शुं सोना ना गुणधर्म बदलाय छे?'

'ना, आभूषण ना रूप मां ते सोनु ज रहे छे. तेने गाळवामां आवे तो फरी ते लगड़ी बनी जाय'.

'तेनो अर्थ थयो के आभूषण बनवा छतां, सोना मां "विकार" आवतो नथी. सोनु जेमनु तेम रहे छे. आने "अविकृत परिणाम' कहेवाय'.

'एटले शुं एम कहेवा मांगो छो के ब्रह्म जगत रूप बने छे, छतां ते सोनानी जेम ब्रह्म ज रहे छे !. तेमां कोई बदलाव आवतो नथी ?'

'साचु समज्या. तेथी कहेवाय के - "जगत ब्रह्म नुं अविकृत परिणाम छे".

'अद्‌भुत, एकदम वात स्पष्ट थई गई.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १२. (चालु) "दार्शनिक सिद्धांतो"

***************************

चालु .............

'हजी एक महत्व नो सिद्धान्त समजवो जरुरी छे'.

'कयो सिंद्धांत ?'

'केटलाक एवु मानें छे के कोई वस्तु प्रकट न होय अर्थात प्रत्यक्ष देखाय नहीं त्यांरे तेनो "अभाव" होय. प्रत्येक वस्तुनी उत्पत्ति थाय छे, त्यां सुधी तेनू अस्तित्व होतुं नथी.'

'कोइक उदाहरण आपो तो समजाय !'.

'बीज मां थी वृक्ष न थाय त्यां सुधी वृक्ष नो अभाव कहेवाय, केमके तेनु अस्तित्व नथी. "भाव" एटले होवुं, अने "अभाव" एटले न होवुं.

'श्रीवल्लभाचार्यजी नो द्रष्टिकोण आना विशे अलग छे. तेओ कहे छे के एक मां थी बीजी वस्तु उत्पन्न थाय त्यांरे तेनो "आविर्भाव" थयो, एम कहेवाय.'

'एम् शाथी कहे छे ?'

'कारण के "सत्कार्यवाद" ना सिद्धान्त प्रमाणे "कारण" मां थी "कार्य" नी उत्पत्ति त्यांरे ज थाय, ज्यारे तेनु अस्तित्व तेमां पहेले थीज होय. एटले के कोई वस्तु नी नविन उत्पत्ति थती नथी, ते प्रकट थाय छे. तेथी तेनो "आविर्भाव" थाय छे. तेवीज रीते ते देखाय नहीं त्यांरे तेनो नाश थतो नथी, तेनो "तिरोभाव" थयो तेम कहेवाय.'

'वात तो तर्कबद्ध लागे छे, अद्‌भुत !'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के "आविर्भाव" अने "तिरोभाव" ए भगवान नी शक्तिओ छे. ज्यारे तेओ इच्छे त्यांरे कोई वस्तुनो "आविर्भाव" करे छे, एटले जे प्रकट करे छे, अने इच्छे त्यारे तेने छुपावी दे अथवा तेनो "तिरोभाव" करी नाखे.' आने "आविर्भाव- तिरोभाव" नो सिद्धान्त कहेवाय छे.'

'एटले कोई वस्तु देखावी के नहीं ते भगवान नी इच्छा पर निर्भर छे !'

'बिलकुल. आ सिद्धान्त द्वारा तेओ जगत नी "उत्पत्ति" अने "लय" नी प्रक्रीया समजावे छे.'

'केवी रीते ?'

'ब्रह्म मां जगत रहेलु ज छे, परंतु ज्यारे तेओ तेने बहार प्रकट करवा मांगे त्यांरे तेनो "आविर्भाव" थाय छे, अने पाछु तेनो लय करे त्यांरे तेने पोताना मां समावी दे, अर्थात तेनो "तिरोभाव" करे'.

'अद्‌भुत !'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

*************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १३. अक्षर ब्रहम

*************

'भगवाने आ जगत नु सर्जन कई रीते कर्यु छे ?'

'भगवान आ जगत ना "उपादान" अने "निमित्त" कारण छे, ए तो समजायुने?'

'हां, ते बाबत स्पष्ट थई के भगवाने पोते पोतानामाथी जगत बनाव्यू छे, परंतु, तेनी प्रक्रिया शुं ?'

'भगवान पहेला एकलाज हता'.

'एकमेवाद्वितीयम, तमे कहेलु !'

'हा, परंतु एकलाथी आनंद माणी शकाय नहीं !'.

'स्वाभाविक छे'.

'तेथी तेमणे बीजा नी इच्छा करी, तेमणे विचार्यु -"हुं अनेक थाउ", अने तेमणे अनेक रूपो धारण करी लीधा'.

'आवुं केवी रीते कहो छो ?'

'हुं नथी कही रह्यो, उपनिषद ना आ वचनो छे !'.

'ओह, तो बराबर'.

'सृष्टि उत्पन्न करवानी भगवाने इच्छा करी त्यांरे सर्व प्रथम तेमणे पोताना मूल सच्चिदानंद स्वरुप मांथी आनंद तत्त्व ने सहेज घटाडी ने पोतानु एक व्यापक रूप धारण कर्यु. तेने "अक्षरब्रहम" कहेवाय छे.

'एटले के "अक्षरब्रहम" ब्रहम नुज बीजु स्वरूप छे ?".

'हां, ते आ सृष्टि नु "सर्व कारण रूप" छे. ते पण "सच्चिदानंद" रूप ज छे, अर्थात तेमां ब्रहम ना सत, चित अने आनंद त्रणेय तत्त्वों रहेला छे'.

'तो "परब्रहम" अने "अक्षरब्रहम" मा भेद शुं छे?

'जेवीरीते गुलाब अने तेनी सुगंध मां भेद छे. सुगंध गुलाब नो गुण अथवा तेनो धर्म छे, तेम परब्रहम "धर्मी" (धर्म ने धारण करनार) छे, ज्यारे अक्षरब्रहम तेनो "धर्म" छे'.

'समजायु'.

'बीजी रीते अक्षरब्रहम ए परब्रहम पुरुषोत्तम नु "धाम" पण कहेवाय अने परब्रहम ने "धामी" (धाम मा निवास करनार) कहेवाय छे.

'एटले के अक्षरब्राहम ए परब्रहम नो "धर्म" अने "धाम" बन्ने छे'.

'हा. परंतु जेम गुलाब नी सुगंध नी असर गुलाब करतां ओछी होय, तेम अक्षरब्रहम "सच्चिदानंद" रुप होवा छतां "गणितानंद" कहेवाय छे, केमके तेमां आनंद सीमित होय तेम जणाय छे.'

'ओह !'.

'तेथीज श्रीवल्लभाचार्यजी "कृष्णाश्रय स्तोत्र" मा कहे छे - "बधा देवो प्राकृत छे, श्रीहरि पूर्णानंद छे, अने अक्षरब्रहम गणितानंद छे. गीता मां पण भगवन श्रीकृष्ण कहे छे - "हुं अक्षर थी उत्तम छु", तेनुं

आज कारण छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३७. (चालु) "अक्षरब्राह्म"

*******************

चालु..............

'अक्षरब्राह्म नी उत्पत्ति नुं रहस्य शुं छे ?'

'निबंध ग्रन्थ माँ श्रीवल्लभाचर्यजी समजावे छे के ज्यारे भगवान जड़ -चेतन सृष्टि रुपे प्रकट थवा इच्छे छे त्यांरे पोतांना 'सत' अने 'चित' तत्त्वों मांथी 'प्रकृति' अने 'पुरुष' एवा बे रूपो धारण करे छे, तेने "अक्षरब्रह्म" कहेवाय छे.'

'प्रकृति' अने 'पुरुष' नुं तात्पर्य शुं छे ?'

'भागवत समजावे छे के युगों पूर्वे प्रलयकाल वेलाए मन आने वाणी नी गतिथी पर परम सत्य रुपे ब्रह्मे पोतानी माया शक्ति द्वारा पोतांना बे विभाग कर्या - पोतानी ज्ञान शक्ति रूप 'पुरुष' अने क्रियाशक्ति रूप 'प्रकृति' . आनेज गीताजी मा 'अक्षर' कह्यु छे, जे कूटस्थ, अचल, अव्यक्त छे.'.

'एटले के 'प्रकृति' अने 'पुरुष' ए बे अक्षर ना रूपो छे !'

'बिलकुल. निर्गुण श्रुति जेने निर्गुण निराकार कहे छे, ते अक्षरब्रह्म ना स्वरूप नुं वर्णन छे.'

'तो शुं शंकराचार्यजी जेने परब्रह्म बतावे छे ते 'अक्षरब्रह्म' छे ?'

'हा, ज्ञानियों अने योगियो जे परम फल ने पामे छे, ते 'अक्षरब्राह्म'.

'तो शुं 'पुरुषोत्तम' स्वरूप अलग छे ?'

'चोक्कस, तेथी ज तो भगवान श्रीकृष्ण गीताजी मां स्वयं कहे छे के "आ क्षर (एटले के जगतं) थी हुं पर छु अने 'अक्षर' थी पण उत्तम छु. तेथी लोकमां अने वेद मां हुं पुरुषोत्तम नाम थी प्रसिद्ध छु"

'ओह, हवे समजायो पुरुसोत्तम अने अक्षरब्रह्म वच्चे नो भेद - एक "अगणितानंद" अने बीजु "गणितानंद" !

'तेथी श्रीवल्लभाचार्यजी "पुरुषोत्तम" ने ब्रह्म नुं "आधिदैविक स्वरूप" कहे छे, जे सगुण - साकार छे, ज्यारे "अक्षरब्रह्म" तेनु "आध्यात्मिक स्वरूप" छे,जे निर्गुण निराकार छे'

'शुं एम् कही शकाय के श्रीकृष्ण अक्षरब्रह्म नुं "साकार" स्वरूप छे ?

'बराबर समज्या !. तेथीज श्रीवल्लभाचर्यजी 'सिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थ' मां स्पष्ट खुलासो करे छे के "परंब्रह्म तू कृष्णो हि सच्चिदानंदकं ब्रहत" अर्थात श्रीकृष्ण परब्रह्म छे, अने अक्षरब्रह्म "सच्चिदात्मक" छे, "क" प्रत्यय थी एम् जणावें छे के गणितानन्द जेवु लागे छे, पूर्णानंद नथी.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ⁎ पुष्टि स्वाध्याय (३८) ⁎

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १४. "काल - कर्म - स्वभाव"

************************

"अक्षरब्रह्म" नुं स्वरुप तो समजायु. शुं तेने सृष्टिना सर्जन नी पूर्वभूमिका कही शकाय ?'

'हा, "अक्षर" ना ज रूपांतरों "प्रकृति" अने "पुरुष" रुपे प्रकट थया छे.'

'तो सृष्टि नी रचना भगवाने केवीं रीते करी छे ?'

'जेम आपणे मकान बनाववा माटे रेती, सीमेंट, ईंट वगेरे पदार्थो जोइए छे, तेम सृष्टि नुं सर्जन करवा भगवान पोते ज केटलाक रूपो मां रूपांतरित थया छे, जेना द्वारा आ सृष्टि नी रचना तेमणे करी छे.

'ते कया रूपो छे ? केवी रीते ते रूपो प्रकट थया छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजीए तेमना निबंध (स.नी.) ग्रन्थ मां समजाव्यु छे के भगवान् ज्यारे जे रुपे जे कार्य करवा इच्छे छे, त्यांरे ते रूपने सक्रिय करतां होय छे. तदर्थ पोताना अक्षरब्राह्म स्वरूपे जे पुरुषोत्तम नो चरणस्थानीय आधार रूप छे, तेने चार रूपो मां प्रकट कर्या छे. ते छे १. अक्षर, २.काल, ३. कर्म, अने ४. स्वभाव.

'तो पछी "प्रकृति" अने "पुरुष" शुं छे ?'

'ते बन्ने "अक्षर" ना ज रूपांतरों छे. एटलेके प्रकृति, पुरुष, काल, कर्म, आने स्वभाव ए पांचेय रूपांतरों थी भगवाने सृष्टिनी रचना करी छे. ते पांचेय भगवान ना ज रूपो छे, जे सृष्टि माँ अस्तित्व धरावे छे.

"प्रकृति" शु छे, तेनु कार्य शुं छे ?'

'सृष्टि माँ जेटला पण जड़ पदार्थो छे ते "कारण - कार्य" नी प्रक्रिया थी प्रकृति ना ज विविध रूपो बन्या छे, जेमां भगवान् नु "सत" अंश रहेलो छे. अथवा एम् कही शकाय के भगवन ना "सत" तत्त्व नु रूपांतर "प्रकृति" छे, जेमां थी बधा जड़ पदार्थो बन्या छे.'

'अने "पुरुष" एटले ?'

'भगवान ना "चित" तत्त्व मां थी सृष्टि ना असंख्य "जीवात्मा" उत्पन्न थया छे. अर्थात एम् कही शकाय के सृष्टि माँ रहेल चैतन्य पदार्थो, प्राणी सृष्टि, भगवान नु "पुरुष" रुपे रूपांतर छे.

चालु............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (३९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### १४ (चालु) "प्रकृति-पुरुष-काल-कर्म-स्वभाव"

**********************************

चालू ...........

"काल" शुं छे ?. भगवान् नु "काल" रूप बनवानुं तात्पर्य शुं छे?'

"काल" भगवान नी "चेष्टा" रूप छे.तेने "निमित्त कारण" कही शकिए, केमके काल मा भगवान नी "क्रिया शक्ति" नुं प्राधान्य होय छे, जेना लीधे दरेक पदार्थो नी उत्पत्ति अने नाश थाय छे. काल मां भगवाने प्रदान करेलु ऐश्वर्य विद्यमान होय छे'.

'काल मां सच्चिदानंद भगवान नुं क्यू तत्त्व रहेलु छे ?'.

'भगवान नी सर्वभवन सामर्थ्यवाळी माया सिवाय नुं बधु सामर्थ्य काल मां रहेलु छे, तेथी तेने "सर्वाधिकारी" कहेवाय छे. काल नु स्वरूप समजावता श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे के तेमां भगवान नो "चित" अंश नो तिरोधान होय छे, ज्यारे आनंदांश नो सर्वथा अभाव न होवाथी ज्ञानी ने तेनो अनुभव थाय छे.

'काल कई रीते कार्य करे छे ?'.

'काल भगवान नो प्रमुख अधिकारी जेवो छे, तेथी तेने बधानो नियामक कहेवामा आवे छे. ते सर्वदा चालतो रहे छे, अर्थात गति करे छे, तेथी तेनो व्यवहार मा वर्ष, महीना, दिवस, प्रहर, घडी वगेरे समय नु अनुसंधान थाय छे.

'शुं बधाने काल नो अनुभव एक सरखो थाये छे ?'.

'ना. श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के काल मां बहार भगवानना संदंश नुं थोडु प्राकट्य होय छे, तेथी व्यवहार मा आपणे जोई शकिए छिए के काल नो अनुभव थतो होवा छतां काल ने कोई देखी शकतु नथी. जेओ भगवान थी विमुख होय तेने काल नो विकराल अनुभव थाय छे, परंतु भगवान् नी सन्मुख रहेनार ने तेमनी कृपा नो अनुभव थाय छे. जेओ ब्रह्मज्ञानी होय तेने तो सच्चिदानंद भगवान ज काल रुपे प्रतीत थाय छे.

'एटले आ सृष्टि नी रचना मा भगवान नु काल रूप अति महत्व नुं कार्य करे छे !.

"बिलकुल'

चालु...........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

---

## १४. (चालु) "प्रकृति-पुरूष-काल-कर्म-स्वभाव"

**************************************

"कर्म" केवी रीते भगवान नु रूपांतर छे ?'

"काल" नी माफक "कर्म"ना स्वरूप ने समाजवतां श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे के शास्त्रमां बतावेला "विधि - निषेध" अनुसार जे क्रियाशक्ति प्रकट थाय छे, ते अक्षरब्रह्म नु ज रुपान्तर छे, तेनुज एक रूप छे.'

"विधि - निषेध" थी शुं तात्पर्य छे ?'

"शास्त्र मा मनुष्ये शुं करवा योग्य छे, अने शुं न करवुं जोइए ते बताव्यू छे, तेने अनुक्रमे "विधि" अने "निषेध" कहेवाय छे'

'समजायु. तो शुं "काल" नी माफक ज "कर्म" पण प्रकट थाय छे?'

'ना. तेमां ए तफावत छे के "काल" पोते ज प्रकट थतो होय छे, परंतु "कर्म" तो जे "विहित" - एटले शास्त्र नी आज्ञा मुजब, अथवा "निषिद्ध" -शास्त्र आज्ञा विरुद्ध आचरण करे छे, तेना कारणे प्रकट थतुं होय छे.'

'शुं "कर्म" नो अनुभव पण "काल" नी माफक थाय छे ?'

'ना, "कर्म" ए क्रिया रूप होवाथी ते भगवान मां तेमना धर्म रुपे समाविष्ट होय छे. तेथी ते काल नी माफक नित्य प्रकट होतुं नथी. परंतु, कर्म मनुष्य ने तेनु फल प्रदान नथी करतुं त्यां सुधी ज प्रकट होय छे.'

'एटलेके कर्म नु फल मनुष्य भोगवी न रहे त्यां सुधी ज "कर्म" नई स्थिति रहे छे ?.'

'हा, तेमज छे'.

'तो शुं दरेक व्यक्ति मां "कर्म शक्ति" जुदी जुदी होय छे ?.'

"कर्म" ए भगवान नी भीतर रहेलु एक सर्वसाधारण रूप छे, जे वास्तव मां व्यापक होय छे, परंतु दरेके दरेक व्यक्ति मां ते तेना द्वारा कराती विधि-निषेध अनुसार क्रिया द्वारा प्रकट थतु होय छे.'

'एटले ज्यारे व्यक्तिए करेली क्रिया नु फल भोगवाई जाय त्यांरे कर्म समाप्त थई जाय छे ?'

'हा, कर्म, जे ते व्यक्ति ने, तेणे करेल क्रिया नु फल आपी ने अंशतः तिरोहित थइं जनारी भगवान नी सर्वसाधारण शक्ति छे '.

"कर्म" मा सच्चिदानंद रूपबभगवान ना कोई तत्त्व रहेला छे ?.'

'हा, भगवान नी आ कर्म शक्ति नी भीतर मां "चिदंश" अने "आनंदांश" नो सदन्तर तिरोभाव होय छे, परंतु कर्म नी स्थिति रहे त्यां सुधी अंशतः "संदंश" प्रकट होय छे.'

'शुं कर्म बंधन सौने लागु पड़े छे ?'

'जेओ काल ने आधीन छे, तेना पर "कर्म" नियामक बानी ने कार्य करे छे.

'अर्थात, "काल" अने "कर्म" रुपे सृष्टि मा भगवान नु अस्तित्व छे'

चालु ..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### १४. (चालु) "प्रकृति-पुरुष-काल-कर्म-स्वभाव"

**************************************

'तो "स्वभाव" थी शुं तात्पर्य छे ?'

'आपणे जोइए छीए के सृष्टिमा प्राणी मात्र नो कोई विशेष "स्वभाव" अथवा गुण होय छे, जे मुजब तेनु वर्तन होय छे. तेम जड़ पदार्थो ना पण जुदा जुदा गुणधर्मो होय छे.' तेने तेमनो "स्वभाव" कहेवाय छे.'

'कोई उदाहरण आपशो ?'

'जुओ, दूध माथी दहीं बने, ते तेल मां रूपांतरित थतुं नथी. माटी मा थी घडो बने, कापड नहीं. हंस हमेंशा सफ़ेद ज होय छे, मोर पचरंगी होय छे. प्रत्येक प्राणी नी प्रकृति (स्वभाव) भिन्न भिन्न होय छे. प्रत्येक पदार्थ नो स्वाद जुदो जुदो होय छे. कोई खारो, कोई कड़वो. आ बधी विशेषताओं पाछ्ल कारण मूलतः भगवान नी इच्छा रहेली होय छे. ते विशेषता ने "स्वभाव" कहेवाय छे'.

'हां, वात तो साची छे.'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के भगवाने जगत नी उत्पत्ति समयेज पोतानी इच्छाथी प्रत्येक वस्तु मां जुदी जुदी विशेषताओं प्रकट करी छे, जेने "तेनो "स्वभाव" कहेवाय छे. तेथी "स्वभाव" पण भगवान नुज रूपांतर छे. ते प्रत्येक पदार्थ - प्राणी मात्र मा अस्तित्व धरावे छे.'

'समजाय तेवी वात छे.'

'तेओ समजावे छे के सर्जन थयेल पदार्थोनी बाबत मां भगवान नी इच्छा सिवाय कोइपण रुपे "स्वभाव" प्रकट थतो नथी. तेथी "स्वभाव" भगवान नु एक विशिष्ट स्वरूप छे.'

'एटलेके "काल" अने "कर्म" नी माफक "स्वभाव" रुपे पण सृष्टि मां अस्तित्व रहेलु छे, एमज ने?'

'बिलकुल'.

'तो तेमां "सच्चिदानंद" स्वरूप ना कया तत्त्व विद्यमान होय छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के वस्तु नो स्वभाव भगवान नी इच्छा मात्र ना कारणे होय छे, तेथी तेमां भगवान ना सत, चित, के आनंद कोई पण तत्त्व नुं अस्तित्व होतुं नथी. वस्तु नी उत्पत्ति साथे तेमां स्वभाव प्रकट थाय छे, ते नष्ट थता तेमाथी विसर्जित थई जाय छे.'

'वात एकदम स्पष्ट संमजाई गई!'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४२) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### १५. "जगत नी उत्पत्ति अने तेनु स्वरुप"

*******************************

'आटली चर्चा थी ए तो समजायु के भगवान पोतानी इच्छाथी पोताना "अक्षरब्रह्म" स्वरुप माथी प्रकृति, पुरुष, काल, कर्म अने स्वभाव ए पांच रूपो मा रूपांतरित थयेला होवाथी तेओ सृष्टि मा आ पांच रूपो थी अस्तित्व धरावे छे, एमज ने ?'.

'हां. सृष्टि नु अवलोकन करीए तो जणासे के तेमां आ पांच स्वरूपो सिवाय अन्य कशा नु अस्तित्व नथी. माटेज श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के आ जगत भगवाने धारण करेलु तेमनु "आधिभौतिक स्वरूप" छे. अक्षरब्रह्म तेमनु "आध्यात्मिक स्वरुप" कहेवाय.'

'परंतु जगतं मा तो विविध पदार्थो असंख्य प्राणीसृष्टि तेमना विभिन अंगों, तेमनी वृत्ति, कार्यो गुणो वगेरे जोईए छीए. आ बधु केवीरीते सर्जायु छे?'

'आ बाबत भागवत मा कपिल भगवाने माता देवहुतिने उपदेश आपता विस्तार थी समजावी छे. श्रीवल्लभाचार्यजीए पण निबंन्ध ना सर्वनिर्णय प्रकरण मा "प्रमेय" ना स्वरूप ने समाजवतां आ प्रक्रिया नो खुलासो करतां कह्यु छे के जगत नी उत्पत्ति ना मूल मां "प्रकृति" अने "पुरुष" नुं संयोजन छे.'

'भगवान ना ए बे रूपो नु संयोजन केवी रीते थयु छे ?'

'आपणे जाणयु के "काल" भगवान नी "चेष्टा" - तेमनी क्रियाशक्ति नु स्वरूप छे. तेना कारणे तेमना प्रकृति अने पुरुष स्वरूपो नु संयोजन थाय छे'

'एटले शुं काल ना प्रभाव थी ते बन्ने स्वरूपो एकठा थाय छे ?'

'हा. प्रकृति जड़ तेमज त्रिगुणात्मिका छे, अर्थात तेमां सत्व, रज अने तम ए त्रण गुणो रहेला छे. आ त्रणेय गुणो तेमां "सम" होय छे, एटले समान रूपथी अस्तित्व धरावे छे. परंतु काल ना प्रभाव थी तेमां खलभलाट थाय छे, अने ते "विसम" बने छे.'

'तेनु परिणाम शु होय छे?'

' काल नी चेष्टा ना कारणे प्रकृति अने पुरुष ना संयोजन थी एक विशिष्ट तत्व नी उत्पत्ति थाय छे, जेने "महत तत्त्व" कहेवामां आव्यू छे.'

'ए "महत तत्त्व" नुं महत्त्व शुं छे ?'

चालु .........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १५. (चालु) "जगत नी उत्पत्ति अने स्वरूप"

**********************************

चालु............

'महत तत्त्व नु मूल स्वरूप "आधिदैविक" छे, "आध्यात्मिक" स्वरूप ब्रह्म ना शरीर रूप छे, अने "आधिभौतिक" स्वरूप ने "चित्त" नी संज्ञा आपवामां आवी छे. तेने आ सृष्टि नो "गर्भ" कही शकाय जेमाथी आ सृष्टि नो क्रमशः विकास थायेलो छे."महत तत्त्व" माथीज जगत ना कारण रूप बीजा तत्वो नी उत्पत्ति थयेली छे'.

'बीजा कया तत्त्वो उत्पन्न थया छे?'

'महत तत्त्व मांथी प्रथम "अहंकार" नी उत्पत्ति थई छे. तेना पण त्रण प्रकार छे - सात्त्विक, राजसिक अने तामसिक, जेमाथी बीजा तत्त्वों उत्पन्न थया छे.'

'कया तत्त्वो ?'

"सात्विक अहंकार" मा थी "मन" नी उत्पत्ति थई छे. विबिन्न देवो तथा सूर्य चन्द्र आदि पण तेमाथी ज उत्पन्न थया छे, "राजसिक अहंकार" मांथी पांच कर्मेन्द्रियों - हाथ, पग वगेरे, तथा पांच ज्ञानेन्द्रियो - आँख, कान वगेरे नी उत्पत्ति थई छे, अने "तामसिक अहंकार" माथी पांच तन्मात्रा - रूप, रस गंध आदि तेमज पांच महाभूत - पृथ्वी, जल आदि उत्पन्न थया छे.'

'तो शुं आ बधा मूल तत्त्वो जगतं नी उत्पत्ति ना कारण रूप छे?'

'बिलकुल. श्रीवल्लभाचार्यजी आ बधा ज कुल २८ तत्त्वों ने जगत रूपी "कार्य" ना "कारण" माने छे.'

'कया २८ तत्त्वो ?

'१. प्रकृति, २. पुरुष, ३. महत, ४. अहंकार, ५. मन, ६ थी १० - कर्मेन्द्रियों हाथ, पग वगेरे, ११ थी१५.- पांच ज्ञानेन्द्रियो आँख , कान, नाक वगेरे, १६ थी २० - पांच तन्मात्राओं - रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श , २१ थी २५ -पांच महाभूत - पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, अने २६ थी २८- त्रिगुणो - सत्व, रज, तम.

'एटले के आ सृष्टि नी उत्पत्ति आ २८ मूल तत्त्वों माथी थयेली छे?'

'हां, तेथी ज श्रीवल्लभाचार्यजी आ तत्त्वों ने ब्रह्म नुं "कारण स्वरूप" अथवा "कारण कोटि" कहे छे.'

चालु ..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १५. (चालु) "जगत नी उत्पत्ति अने स्वरूप"

***********************************

चालु............

'प्रकृति इत्यादि रूपो ने "तत्त्व" शा माटे कह्या छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के आ ब्रह्माण्ड नी उत्पत्ति पहेला आ बधा घटकों उत्तरोत्तर उत्पन्न थया हता. ते क्रमशः "कार्य" रूप जगत नी उत्पत्ति माटे "कारण" रूप छे. तेथी तेने मूल तत्त्व मानवामा आव्या छे'

"ब्रह्माण्ड" शब्द थी तात्पर्य शुं छे?'.

'जेवी रीते पक्षी ना बच्चा ना जन्म पूर्वे इंडु बहार आवे छे. ते इंडा मांथी तरत ज बच्चू प्रकट थतु नथी, परंतु तेने पक्षी द्वारा सेववामां आवे ते पछी बच्चू जन्मे छे, तेम आ जगत नी उत्पत्ति पूर्वे आ सृष्टि नी अवस्था ने "अंड" रुपे प्रकट थई तेम कहेवाय छे.'

'एटले मुलमां तो ते तत्त्वो "सच्चिदानंद" स्वरूप भगवान माथीज उत्पन्न थयेला छे ने ? तो तेने "कारण" शा माटे कह्या छे ?'

'केमके जगत मा विद्यमान देहादि असंख्य जड़ पदार्थो प्रकुति मां थी सीधे सीधा रूपांतरित थया नथी परंतु उत्तरोत्तर "कारण-कार्य" संबन्ध थी क्रमशः अंतिम रुपे प्रकट थया छे .'

'कोई उदाहरण थी समजावशो ?'

'जेवी रीते कपास मां थी कोई वस्त्र सीधेसीधु बनी जतु नथी. पहेला "कारण" रुप कपास मा थी "कार्य" रुप दोरा बने छे. पछी ते दोरा रूपी "कारण" मांथी कापड रुप "कार्य" मा परिवर्तित थाय छे. अंते कापड माथी वस्त्र बनावामां आवे छे, त्यारे कापड "कारण" कहेवाय अने वस्त्र "कार्य". तेवीज क्रमशः क्रिया द्वारा प्रकृति माथी जगत ना जुदा जुदा पदार्थो बन्या छे. ते बधा भगवान ना "सदंश" ना अवान्तर प्रभेदो छे. तेथी जड़ पदार्थो नो संबंध भगवान साथै "कारण-कार्य" नो छे.'

'तो पछी चैतन्य सृष्टि शेमांथी प्रकट थई छे?'

'भगवान ना "चिदंश" माथी असंख्य जीवात्मा प्रकट थया छे जे सीधेसीधे भगवान ना अंश रुपे प्रकट थया छे, तेथी तेमनो भगवान साथै संबंध "अंश-अंशी" रुपे रहेलो छे.'

'समजाय छे '.

चालु............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय (४५) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १५. (चालु) "जगत नी उत्पत्ति अने स्वरूप"

*********************************

'ए रीते जगत ना असंख्य जड़ पदार्थो मा भगवान नो "संदंश" विद्यमान होय छे. जगत नी समग्र प्राणी सृष्टि ना देह, इंद्रिय, प्राण तेमज अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार) तथा तेमनामां रहेला सत्व, रज अने तम गुणो ए सर्व भगवान ना संदंश रूप प्रकृति मा थी ऊपर बताव्यू तेम क्रमशः उत्पन्न थयेला छे.'

'तो जगत मां जे चैतन्य सृष्टि छे ते केवी रीते बनी छे ?'

'भगवान ना "चिदंश" ना कारणे प्राणी सृष्टि मां चैतन्य रहेलु होय छे, जेने "जीवात्मा" कहे छे.'

'एटले समग्र प्राणी सृष्टि मा "जीवात्मा" रहेल होय छे !'

'हा, तेना कारणे ज ते कार्यशक्ति तथा ज्ञान शक्ति द्वारा प्रवृत्ति करे छे'.

'अर्थात भगवान ना "सच्चिदानंद" स्वरूप माथी ज आ जगत उत्पन्न थयेलु छे !'

'बिलकुल. तेथीज श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे, के आ जगत "भगवान नु कार्य" छे. भगवान "जगत नु कारण" छे.'

'तो शुं अन्य लोको नो अभिप्राय जुदो छे?'

'हां, विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं जगत विशे जुदो जुदो मत धरावे छे.'

'शुं कहे छे बीजा लोको ?'

'सांख्य दर्शन माने छे के जगत नी उत्पत्ति ना कारणभूत बे मूल तत्त्वो - "प्रकृति" अने "पुरुष" ज छे. न्याय अने वैशेषिक दर्शनों नी मान्यता प्रमाणे जगत "परमाणुओ नु बनेलु छे. पूर्व मीमांसा दर्शन कहे छे के मनुष्य ना कर्मना फल भोगववा नी एक व्यवस्था रुपे जगत अस्तित्व मा आवेलु छे. तेना थी विपरीत "अद्वैत वेदान्त" ना पुरस्कर्ता शंकराचार्यजी ना मते जगत "माया" द्वारा निर्मित छे, अर्थात ते मात्र एक भ्रमणा छे, वास्तविक नथी. तेथी तेओ जगत ने मिथ्या कहे छे.'

'ओह, तो जगत विशे आटला बधा विभिन्न मत प्रवर्ते छे !'

'हा, परंतु, श्रीवल्लभाचार्यजी विभिन्न भगवतशास्त्रो ना आधारे स्पष्टपणे प्रतिपादित करे छे के जगत भगवाने स्वयं पोताना मांथी उत्पन्न कर्यु छे, तेथी पोताना जेवु सत्य - वास्तविक छे, बल्के ते भगवान नुज बीजु "आधिभौतिक स्वरूप" छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (४६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

## १६. "जीवात्मा नुं स्वरूप"

********************

"जीवात्मा" शुं छे?'.

'ते प्रत्येक प्राणि मा-रहेलु "चैतन्य तत्त्व" छे. तेने "जीव" अथवा "आत्मा" पण कहेवाय छे.'

'तेंनु स्वरूप शुं छे ?. ते केवी रीते उत्पन्न थाय छे ?.'

'जीव भगवान नो अंश छे. ते भगवान माथी छूटो पड्यो छे.'

'केवी रीते ? विस्तारथी समजावशो?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी उपनिषद-वचनो ना आधारे समजावे छे के ज्यारे भगवाने अनेक थवानी ईच्छा करी त्यारे जेवीरीते सळगता कोलसा मांथी चिंगारीओ निकले छे तेम तेमना "सच्चिदानंद अक्षरब्रह्म स्वरूप" मांथी असंख्य अंश छूटा पड्या. तेमाथी केटलाक मां मात्र तेमनो "सत" अंश प्रकट रह्यो अने "चित" तथा "आनंद" अंश तिरोहित थई गया. ते आगळ बताव्यू तेम "कारण-कार्य" नी उत्तरोत्तर प्रक्रिया थी "जड़ पदार्थो" बन्या. तेम "संदंश" अने "चिदंश" जेमां प्रकट रह्या अने "आंनदांश" तिरोहित थई गयु ते अंश रुपे असंख्य "जीवात्मा" बनी प्राणी मात्र मां स्थित छे.'

'एटले प्रत्येक देहधारी प्राणी - मनुष्य मा भगवद-अंश रूप जीवात्मा अर्थात आत्मा रहेलो छे?.

'बिलकुल. "आत्मा" ए देहधारी मनुष्य नु मूल स्वरूप छे'. ते भगवान नो अंश होवाथी शास्वत छे.'

'ओह, हवे समजायु के शा माटे भगवान गीता मां कहे छे - "ममैवांशो जिव लोके जीव भूत सनातन."

'हवे मारो मूल प्रश्न याद करो - "तमे कोण छो?"

'अरे, हा, हवे समजाय छे, हुं वास्तव मा "भगवान नो अंश छु. गोपाल तो मारा खोळीया नु नाम छे'.

'मारा प्रथम सवाल नो जवाब जड़ी गयो ?'

'बहु लांबी यात्रा ने अंते !. परंतु ते दरम्यान घणु जाणवा मल्यु.'

'हजी कोई प्रश्न छे ?'

'हवे तो अनेक नवा प्रश्नो उत्पन्न थया छे.'

'पूछो'

चालु ...........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (४७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

*************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १६. (चालू) "जीवात्मा नुं स्वरूप"

**************************

चालू..........

'जो जीवात्मा भगवान नो ज दिव्य अंश होय तो तेने दुखः वगेरे नो अनुभव शा माटे करवो पड़े छे. भगवान तो आनंद रुप छे !'

'सरस सवाल कर्यो. जे समये जीवात्मा भगवान थी अंश रुपे छूटो पड़े छे, त्यांरे तेनामां भगवान ना त्रणेय तत्वो सत, चित, आनंद विद्यमान होय छे. तेथी ते तेनी "शुद्ध अवस्था" कहेवाय छे.'

'तो ते अवस्था कायम केम रहेती नथी ?'

'जीव ज्यारे भगवान थी अलग थाय छे, त्यांरे ते भगवान नी "अविद्या शक्ति" ना संसर्ग मा आवे छे'.तेना कारणे तेनामां थी "आनंद" तत्व तिरोहित थई जाय छे. तेनामा थी भगवान ना ऐश्वर्यादि दिव्य षडगुणो पण लुप्त थई जाय छे.'

"अविद्या शक्ति" शुं छे ?'

'ते वात पछी समजीए परंतु तेना परिणामें तेने विपरीतता नो अनुभव थाय छे.'

'कया प्रकार नी विपरीतता ?'

'जीवात्मा "ऐश्वर्य" ना अभाव मां पराधीनता नो अनुभव करे छे, "वीर्य न राहेतां तेने दुःख सहन करवा पडे छे, "यश" ना अभाव मां ते हीन बनी जाय छे, "श्री" चाली जवाथी ते रंक बने छे, "ज्ञान" दूर थता तेनामां विपरीत ज्ञान आवे छे, देहादिमां अहंकार उत्पन्न थाय छे, अने "वैराग्य" ना अभाव मा ते विषयो मां आसक्त बने छे.'

'ओह, समजाय छे.'

'आ जीवनी " बद्ध अवस्था" कहेवाय छे, कारणके तेनामां "हुं पणा" - अहंता अने "मारापणा" - ममता नो भाव जागे छे, ते बंधन मां आवी जाय छे'

'कया प्रकारनु बंधन ?'

'जीव जन्म-मरण ना चकरावा मा फसाय छे, ते कर्म करे छे, जेना फल भोगववा तेने अनेक योनियोमा भटक्या करवुं पड़े छे. आ विषचक्र चाल्या करे छे.

'एटले आ विषम परिस्थिति छे, जेमाथी भगवान थी छूटा पड्या पछी प्रत्येक जीवात्माए पसार थवु पड़े छे एमने ?'

' विलकुल'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (४८) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १६. (चालु) "जीवात्मा नुं स्वरूप"

***************************

चालु ............

'तो शुं जीवात्मा नुं जन्म-मरण थाय छे ?'.

'ना, जीवात्मा तो भगवान नो अंश होवाना कारणे ते "नित्य" छे. तेनी उत्पत्ति के नाश नथी. भगवान गीता मा कहे छे के जीव नो नथी जन्म के नथी मरण. जेवीरीते मनुष्य जूना वस्त्र काढिने नवा धारण करी ले छे, तेम जीव एक देहने त्यजिने नवा देह मां प्रवेशे छे. जन्म-मरण देह ना धर्म छे, जीव ना धर्म नथी.'

'जीवात्मा मा बीजा कया धर्म रहेला छे ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी ना मते जीवात्मा भगवान नो अंश होवा ना कारणे ज्ञाता, कर्ता अने भक्ता छे. "चैतन्य" अथवा "ज्ञान" जीव नो धर्म छे. तेवीज रीते जीव नो भगवान साथे अंश-अंशी नो संबंध होवाना कारणे भगवान नी माफक जीवमा "कर्तापणु" अने "भोक्तापणु" पण रहेलू छे.'

'जो जीव भगवान नो अंश होय तो केटलाक "अहं ब्रह्मास्मि" - हुं ज् ब्रह्म छु तेम शा माटे कहे छे ?. शु कोई मनुष्य पोते ब्रह्म होइ शके ?.'

'सरस सवाल कर्यो. शंकराचार्यजी ना मते "आत्मा एज परमात्मा छे. अज्ञान युक्त आत्मा ने जीव कहेवाय छे. तेओ जीव ने अंश नहीं मानता "विभु" माने छे. तेथी तेमनु सूत्र छे - "ब्रह्म सत्य, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः", अर्थात जीव ब्रह्म ज छे, अन्य कशु नहीं'.

'आवा विधान माटे तेमनी पासे कोई प्रमाण हशे ने ?'.

'छान्दोग्य उपनिषाद मां पिता तेना पुत्र श्वेतकेतु ने कहे छे "तत्वमसि", ते आत्मा तुं छे. आ वाक्य ने "महावाक्य" मानी शंकराचार्यजी जीव ने ब्रह्म होवानुं प्रतिपादित करे छे.'

'तो शुं ते प्रमाण श्रीवल्लभाचर्यजी स्वीकारतां नथी?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी ना मते आ अर्धवाक्य छे. समग्र वचन मा ऋषिए दृश्यमान जगत अने जीव बन्ने "ब्रह्मात्मक" छे, तेम कह्यु छे. तेथी आ प्रमाण नथी. तेथी जीव ब्रह्म छे तेम प्रमाणित थतु नथी. परंतु अनेक अन्य प्रमाणो थी जीव भगवान नो अंश होवानु पुरवार थाय छे.'

'आ दलील समाजमां आवे छे !'.

'उपरोक्त प्रमाणो थी जीव अनेक अंश रूपो मा भगवानमां थी छूटो पडेलो छे अने तेमां भगवान ना "सदंश" तथा "चिदंश" प्रकट होवानुं अने "आनंदांश" गुप्त होवानुं प्रमाणित थाय छे.

'हवे जीवात्मा ना स्वरूप नी स्पष्टता बराबर थई !'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय" (४९) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १७. "अंतर्यामी"

************

'कहेवाय छे के प्राणी मात्र मां भगवान नो वास छे, तो शुं ते "जीवात्मा" ज् छे ?'

'ना. जेवीरीते अक्षरब्रह्म मां थी "संदंश" अने "चिदंश" छूटा पड्या जे अनुक्रमे असंख्य जड़ पदार्थो अने जीवात्मा बन्या छे, तेवीरीते तेनां "आनंदांश" पण छूटा पड़ी अनंत "अंतर्यामी" बन्या छे.'

'शुं प्राणी मात्र मा "अंतर्यामी" रहेला छे.?'

'हां, सृष्टिनी उत्पत्ति समये प्रत्येक देह मां जीवात्मा साथे भगवान अंतर्यामी स्वरूपे प्रविष्ट थाय छे'

'अंतर्यामी स्वरूप नुं कार्य शुं छे ?'

'भगवान अंतर्यामी स्वरूपे जीवात्मा ना नियामक नुं कार्य करे छे. तेओ प्राणिमात्र ना हृदयमां जीवात्मा साथे साक्षी रुपे रहेला छे. तेने "व्यष्टि अंतर्यामी" कहे छे.'

'शुं उपनिषद मा आ विशे उल्लेख छे ?'.

'हां, मुंडाकोपनिषद आ हकीकत ने एक रूपक तरीके समजावता कहे छे - "एक वृक्षनी डाली पर बे पक्षीयो एकबीजानी बाजुमां बेठेला छे. तेमानु एक पक्षी वृक्ष ना फल नो भोग करे छे, ज्यारे बीजु पक्षी साक्षी तरीके जोया करे छे." आमां भोग करनार पक्षी "जीवात्मा" छे, अने साक्षी तरीके परमात्मा "अंतर्यामी" रूप छे.'

'तो आ समग्र सृष्टि नुं संचालन भगवान केवी रीते करे छे ?'

'समग्र सृष्टि ना नियामक अथवा संचालक ने "समष्टि अंतर्यामी" कहेवाय छे. तेनेज आपणे "विराट पुरुष", "नारायण" के "परमात्मा" कहिये छीए.'

'परंतु सृष्टि ना नियामक तो "ब्रह्मा- विष्णु - शिव" ए त्रिदेवो मानवा मां आवे छे !'

'हां, ते त्रिदेवो नुं प्राकट्य "समष्टि अंतर्यामी" रूप धारण करनार भगवान श्रीकृष्ण मा थीज थयु छे, जेमने "गुणावतार देवो" कहेवाय छे. तेओ अनुक्रमे सृष्टि नी उत्पत्ति, पालन अने संहार नु कार्य करे छे'.

'ओह, एटले भगवान समस्त सृष्टि नु नियमन "समष्टि अंतर्यामी" स्वरूपे अने व्यक्तिगत नियमन "व्यष्टि अंतर्यामी" स्वरूप थी प्राणिमात्र मां बिराजी ने करे छे !'

'एटला माटे ज कहेवाय छे "परमात्मा" नी नजर प्रत्येक गतिविधिओ पर होय छे.'

'समजायु'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय" (५०) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १८. "अविद्या - विद्या शक्ति"

************************

'याद छे पहेलो प्रश्न "? "तमे कोण छो ?" पुछेलूं'.

'हां, जवाब मा कहेलूं, "गोपाल". हवे समजायु के गोपाल तो मारा शरीर नुं नाम छे !'

'एटले "तमे देह छो" एम समजी बेठेला ! खरुने ?'

'हां, हवे भूल समजाय छे'.

'जाणो छो के तमारा देह ने "तमे छो" तेम शाथी मानी बैठा ?'

'ना, कारण खबर नथी'.

'अविद्या ना कारणे !. "अविद्या" भगवान नी एक शक्ति छे'.

'तमे कहेलु के जीवात्मा भगवान थी छूटो पड़े छे त्यांरे "अविद्या" ना संसर्ग मा आवे छे, जेना कारणे तेने दुःख सहन करवुं पड़े छे अने मुश्केलीओ भोगववी पड़े छे'.

'हा, श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के "विद्या" - "अविद्या" नामनी भगवान नी शक्तिओ "माया" द्वारा निर्मित थयेली छे, जे सृष्टिना संचालन मा कारणभूत छे.'

"अविद्या" शक्ति नुं कार्य शुं छे ?

'आ शक्ति ना कारणे जीव ने पांच प्रकारना "अध्यास" उत्पन्न थाय छे'.

"अध्यास" एटले शुं'?.

'अध्यास नो अर्थ छे खोटी भ्रमणा - भ्रान्ति. अविद्याने कारणे जीव पोताने देह, इंद्रिय, प्राण, अने अंतःकरण मानवा लागे छे. पोते भगवान नो अंश छे, ते भूली जाय छे, अर्थात तेने "स्वरूप विस्मृति" थई जाय छे.'

'ओह, हवे समजायु !'

'तेथी अविद्या ने "पंचपर्वा" अर्थात पांच विभाग वाळी कही छे. ते छे - देहाध्यास, इंद्रियाध्यास, प्रणाध्यास, अन्तःकरणाध्यास, अने स्वरूप विस्मृति. ए पांच प्रकार नी अविद्या संपूर्ण पणे लागू पड़वाथी अंतःकरणादि ना धर्मो वड़े बंधाई ने जीव जन्म-मरण पामे छे.'

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

---

* पुष्टि स्वाध्याय" (५१) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १८. (चालु) "अविद्या - विद्या शक्ति"

****************************

चालु.........

'जीवात्मा ने अविद्या नी असर केवी रीते थाय छे ?'

'प्रकृति ना त्रण गुणो छे - सत्व, रज अने तम. अविद्यानी उत्पत्ति रज तथा तम गुणो मांथी थयेली छे.'

'थोड़ा विस्तार थी समजावो'.

'अगाउ आपणे जोई गया के प्रकृति मांथी "महत तत्त्व" नी सर्व प्रथम उत्पत्ति थयेली छे. याद छे ने ?'

'हां, बराबर याद छे. अने तेमाथी "अहंकार" उत्पन्न थयो छे, खरुने?'

'साचु कह्यु. महत तत्त्व ए "चित्त" स्वरूप छे. चित्त अने अहंकार ए बन्ने "अंतःकरण" रुप छे. तेथी सौ प्रथम अंतःकरण नो अध्यास थाय छे. जीव पोताने अहंकार स्वरुप माने छे. ते छे "अंत:करणाध्यास". प्राण अंतःकरण नुं रूपांतर छे. तेथी तेना पछी "प्रणाध्यास" थाय छे. राजस अहंकार मांथी इंद्रियों उत्पन्न थयेली छे. तेना कारणे जीव ने "इंद्रियाध्यास" थाय छे. तेवीज रीते तामस अहंकारमाथी पंचमहाभूत उत्पन्न थया छे, जेमाथी देह बन्यो छे. तेथी जीव देह ने पोतानु स्वरूप मानी ले छे.'

'अने आ चारेय अध्यास ना कारणे जीव ने पोताना साचा स्वरूप नु विस्मरण थई जाय छे. बराबर ने !'

'हां, आपणे कहिये छीए के "हुं जाड़ो छु, हुं पातळो छु" वगेरे. वास्तव मा "हुं तो आत्मा छु, भगवान नो अंश छु". आत्मा नथी जाड़ो के नथी पातळो. बस, आने ज "देहाध्यास" कहेवाय छे.'

'शुं हुं काणो छु के बहेरो छु, एम कहेवुं के मानवु "इंद्रियाध्यास" छे ?'

'बिलकुल. हुं वास्तव मा इंद्रिय नथी छतां आँख - कान इत्यादि अंगों ने अनुलक्षी ने आम कहेता होईए छीए. ते आपणी भ्रमणा छे. तेम "प्रणाध्यास" तेने कहेवाय ज्यारे आपणे कहिये छीए के "हूँ भुख्यो छु, तरस्यो छु" वगेरे. "अंतःकरणाध्यास" ने कारणे आपणे कहिये छीए के "हुं जाणू छु अथवा नथी जाणतो. मने हर्ष थाय छे, अथवा शोक थाय छे, वगेरे.'

'एटलेके आ चार प्रकारे "अध्यास" अथवा खोटी भ्रमणा उत्पन्न थवाथी "स्वरूप विस्मृति" थई जाय छे, अने आपणे भ्रान्तिमय जीवन जीवीए छीए!'

'जन्म - मरण नुं एज कारण छे !'

चालु.........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

---

* पुष्टि स्वाध्याय" (५२) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १८. (चालु) "अविद्‌या - विद्‌या शक्ति"

****************************

चालु.........

जीव बंधन मां केवीरीते आवे छे ?.'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के स्वरुप अज्ञान ने कारणे उत्तरोत्तर अंतःकरणाध्यास थी देहाध्यास थतां स्वरुप विस्मृति थई जाय छे. ज्यारे जीव पोतानु स्वरुप भूली जाय एटले पुनः "हुं देह छु" तेवो अध्यास थाय जे उत्तरोत्तर अंतःकरणाध्यास सुधी पहोंचे छे, अने आम भवकूप मा वमळ उत्पन्न थाय छे, अने पंचपर्वा अविद्‌याव मा जीव फसाई जाय छे. तेज "बंधन" छे. अविद्‌या ना कारणे ज जीव दुःख अने अनीशता तेमज जन्म-मरण नो अनुभव करे छे.'

'जीवात्मा तो भगवान नो अंश छे, तेनो जन्म के मृत्यु नथी तेम गीता मा कह्‌यु छे, तो तेने जन्म-मरण नो अनुभव शाथी थाय छे ?

'साची वात छे, जीव भगवान नो "चिदंश" छे. तेनी उत्पत्ति के नाश नथी. परंतु देह मा आपणे जन्म-मरण नो अनुभब करीए छिए. देह पंचमहाभूत नो बनेलो 'जड़' छे, जे भगवान नो "संदंश" छे. ते उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे, अर्थात देह नो पण जन्म के मरण न कहेवाय !'

'जो देह के तेमां रहेल आत्मा (जीव) बन्ने नो जन्म के मृत्यु नथी तो आ "जन्म-मरण" नी घटना - प्रक्रिया शुं छे?'

'गीता मां भगवान कहेछे - "जेम मनुष्य जूना वस्त्र त्यजी नवा वस्त्र धारण करे छे, तेम जीवात्मा एक देह नो त्याग करी नवा देह मा प्रवेशे छे."(२/२२). एटले के जीव ना ते संघात ना अवसर ने मृत्यु के जन्म कहेवाय छे. जीवात्मा जन्म - मरण नो अनुभव ए पंचपर्वा अविद्‌या ना कारणे अनुभवे छे, कारण के ते पोताना स्वरूप ना अज्ञान ने लीधे पोतांना देह, इंद्रिय, प्राण , अंतःकरण ने पोते मानी बैठो होय छे.'

'ओह, हवे समजाय छे के जीव नुं जन्म के मरण ए वास्तवमां अविद्‌या ना कारणे तेनी भ्रमणा छे'.

'हां, हकीकत मा तो ते एक "बंधन" छे !'

चालु.......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (५३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## १८ (चालु) "अविद्‌या - विद्‌या शक्ति"

***************************

चालू ...........

'तो "बंधन" माथी मुक्त थवानो उपाय खरो ?'

'हां, जो "अविद्या" दूर थाय तो जीव ने मुक्ति मले'.

'जीव ने लागेली अविद्या केवी रीते दूर थाय ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के "अविद्या" जेवी भगवान नी "विद्या शक्ति" पण छे, जेना थी जीव ना अध्यास दूर थई ते मुक्त थाय छे.'

'शुं छे ते भगवान नी "विद्या शक्ति" ?'

'अविद्या नी माफक "विद्या" पण पंचपर्वा छे, अर्थात तेना पांच विभाग छे'.

'विद्या ना पांच पर्वो कया कया छे ?.

'ते छे - वैराग्य, सांख्य, योग, तप अने भक्ति'.

"वैराग्य" एटले शुं ?'

'वैराग्य नो अर्थ छे - सांसारिक विषयो प्रत्ये उदासीनता. घर, परिवार, धन-संपत्ति मा मोह न रहे तेवी मनोवृत्ति ने "वैराग्य" कहेवाय छे'.

'सांख्य नुं तात्पर्य शुं छे ?'.

'ज्यारे वैराग्य उत्पन्न थाय त्यांरे नित्य (आत्मा) अने अनित्य ( देहादि, जे कायम टकवाना न होय) तेवां पदार्थो नो भेद समजाय, तेने "सांख्य" कहे छे. ज्यारे भेद समजाय त्यारेज तेवी ममतास्पद वस्तुओ नो त्याग अथवा तेना प्रत्ये उदासीनता संभव बने.'

'"योग" कोने कहेवाय ?'.

'अनित्य पदार्थो नो त्याग कर्या पछी परमात्मा मा चित्तने स्थिर करवा माटे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, अने समाधि, ए अष्टांग योग नो अभ्यास, तेने "योग" कहेवाय छे.'

'तो पछी "तपः" शुं छे ?'.

जगत मां घटती घटनाओ ने भगवान नी लीला समजी ने सुख-दुःख, निंदा-स्तुति, मित्र-शत्रु वगेरे द्वंद्वो मां समान भाव केळववो अने जीवनमा अनुभवाती विपरीत परिस्थिति ने सहन करवी, ते "तपः" कहेवाय.

"भक्ति" नो शुं अर्थ छे ?'

'भगवान साथे जीव नो अंश-अंशी नो संबंध छे ते जाणी ने, भगवान ना माहात्म्यज्ञान साथे तेमना मां प्रगाढ़ प्रेम उत्पन्न थाय तेने "भक्ति" कहेवाय छे.जो भक्ति नु प्रयोजन मोक्ष होय तो ते "मर्यादा भक्ति" कहेवाय, अने जो भगवद सुखार्थे तेमना प्रत्ये निष्काम प्रेम होय तो तेने "पुष्टिभक्ति" कहेवाय छे.'

'तो शुं आ "पंचपर्वा विद्या" थी जीवात्मा नी अविद्या दूर थई ते "मुक्त" बने छे ?'

चालु .......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय" (५४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ५४. (चालु) "अविद्या - विद्या शक्ति"

****************************

चालू..........

'हा, अध्यासो नी सम्पूर्णपणे निवृत्ति ए "मोक्ष" छे. परंतु श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के अविद्या नष्ट थतां देह, इंद्रियों, प्राण, अने अंतःकरण नष्ट थता नथी,पण जीवने जीवने जन्म-मरण नुं चक्र अनुभवातु नथी.'

'एटलेके जीवात्मानी पोते देह आदि छे, तेवी भ्रमणा दूर थाय छे !'

'हा, कारणके देहादि वगेरेतो भगवान ना सदंश माथी उत्पन्न थया छे. अर्थात ते भ्रम नथी. जीवात्मा नु पोते भगवद अंश होवा छतां देह आदि मानी लेवु ते "अध्यास" छे, "विद्या" थी ते दूर थाय छे.'

'तो जीवात्मा ने पोतानी ओळख केवी रीते थाय छे ?.'

'अध्यास दूर थतां ज्ञानी ने पोतानी बुद्धि मां देह वगेरे नो लय थई गयो होय तेम भान थाय छे. परंतु तेने जोनारा अन्य सहूनी बुद्धि मां तो ते व्यक्ति नी ओळख होय छे के आ अमुक व्यक्ति छे.'

एटलेके एवी व्यक्ति ने पोतांना देहादि नी ओलख होती नथी !'

'हा, एवी स्थिति ने "जीवन मुक्ति" कहेवाय छे. ते व्यक्ति "मुक्तात्मा" कहेवाय छे.'

'तो शुं अध्यास दूर थवा छतां जीवन टकी रहे छे ?'.

'हा, अध्यास दूर थवा छतां ज्यां सुधी संचित कर्मो अने प्रारब्ध कर्मो ना फल भोगववाना बाकी होय त्यां सुधी तेना देह नो विलय थतो नथी.'

'तो जीवात्मा सम्पूर्णपणे मुक्त क्यारे थाय छे ?'.

'जीवन्मुक्त मनुष्यने ज्यारे विद्यमान देह थी छुटकारो मली जाय त्यांरे ते "विदेह मुक्त" बनी जाय छे.'

'विदेह मुक्ति पछी जीवात्मा ने क्यां स्थान मले छे?.'

'जे जीव नी जेवी यौग्यता होय तदनुसार भगवान मुक्ति पछी ते जीव ने स्थान प्राप्त थाये छे.'

'हवे समजायु के भगवान नी आ "सृष्टिलीला" मा "अविद्या-विद्या" शक्ति नी खूब अगत्य नी भूमिका रहेली छे.'

'बराबर. भगवान पोतानी आ बन्ने शक्तिओ द्वारा "सृष्टिलीला" नो आनंद माणे छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (५५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १९. "माया"

***********

" माया" शब्द वारंवार सांभलवा मले छे. ते शुं छे ?'

"माया" भगवान नी बार शक्तिओ मां एक मुख्य शक्ति छे. तेनाथी भगवान प्रत्येक सृष्टिकार्य करे छे.'

'शुं ते भगवान थी अलग छे ?'

'ना. शक्ति हमेंशा शक्तिमान थी जोड़ायेली ज होय, जेवीरीते आपणी बधी शक्तिओ आपणी साथे ज होय छे अने आपणी इच्छा मुजब कार्य करे छे. तेम माया भगवान नी इच्छा अनुसार कार्य करे छे, स्वतंत्रपणे नहीं'.

'तो शुं भगवाने जगतं नी उत्पत्ति माया शक्ति द्वारा करी छे ?'

'बिलकुल. तेने भगवान नुं "सर्वभवनसामर्थ्य" कहेवाय छे.'

'शुं तात्पर्य छे ?'

"सर्वभावनसामर्थ्य" एटले "कर्तुम - अकर्तुम - अन्यथा कर्तुम सामर्थ्य".अर्थात भगवान इच्छे ते बधुज करी शके छे, न करवु होय तो न पण करे, अने जे न थई शके एवु होय तो पण करी शके छे. भगवान माटे कशु अशक्य नथी'.

'तो भ्राति ने पण "माया" कहेवाय छे, तेंनु कारण शुं?'

'भगवान नी माया नुं एक बीजु पण स्वरूप छे, तेने "व्यामोहिका माया" कहेवाय छे.'

'ते शुं कार्य करे छे ?'

"व्यामोह" नो अर्थ थाय अज्ञान अथवा भ्रमणा. माया नुं आ स्वरूप बे प्रकारे कार्य करे छे'.

'केवीरिते ?'.

'तेंनु एक कार्य छे - जीवो ने वस्तु ना साचा स्वरूप नुं ज्ञान न थवा देवूं. अर्थात तेने आच्छादित करी देवूं, ढाँकी देवूं. अने बीजु जे होय तेनाथी जूदु ज् देखाडवु, जेवीरीते जादूगर खेल करे छे. तेना कारणे आपणामां खोटी समज उत्पन्न थाय छे.'.

'व्यामोहिका माया केवी रीते मोह पमाडे छे ?'.

'ते सर्व प्रथम जीव नी बुद्धि ने अज्ञान थी ढाँकी दे छे. त्यारबाद जगत ना विषयो जेवाज मायिक विषयो जीव नी बुद्धि मां उत्पन्न करे छे. तेना कारणे ते भ्रमित थई जाय छे. ते प्रकट थयेली खोटी वस्तु ने साची समजी बेसे छे. आपणे साचा खोटा नो विवेक भूली जइए छिए.'

'कोई उदाहण आपशो ?'

'जेम नाना अबोध बालक ने सारा खराब नी समज होती नथी. कोई सारी वस्तु ने पण ख़राब छे, तेम समजाववा मां आवे तो तेने एवो भ्रम थई जशे. पछी ते सारी वस्तु ने खराब मानवा लागशे. माया नी पण आवीज असर थाय छे.'

'समजाय छे !'

चालु ........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (५६) *
## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### १९. (चालु) "माया"

***************

चालु............

'तो "योगमाया" शुं छे ?

'भगवान नी जगत ना कारणभूता माया शक्ति ने श्रीवल्लभाचार्यजीए सुबोधिनिजी मां "योगमाया" कही छे.'

'एटले जगतं नु निर्माण भगवाने "योगमाया" द्वारा कर्यु छे ?.'

'हा, तेथीज तेओ निबंन्ध मां कहे छे के "प्रपंच" (जगत) भगवान नुं "कार्य" छे जे तेमणे तेमनी "माया शक्ति" द्वारा प्रकट कर्यु छे, अर्थात आविर्भूत कर्यु छे.'

'शंकराचार्यजी पण जगत नुं निर्माण माया द्वारा ज थयु होवानुं कहे छे ने !

'हा, परंतु तेओ माया ने ब्रहम नी शक्ति नहीं कहेता "सत - असत विलक्षण" अर्थात "अनिर्वचनीय" कहे छे. ते एक जादूगर रुपिणी छे जे वास्तव मां बधु ब्रहम ज होवा छतां जगतना विविध पदार्थो रुपे देखाड़े छे, तेथी तेेओ जगत ने "मिथ्या" कहे छे.'

'तो सृष्टि मां अनेक जीवात्माओ छे ते बधा पण शुं तेमना मते मिथ्या छे ?'

'तेओ कहे छे के वास्तव मा परमात्मा एकज छे, परंतु माया ना कारणे जुदा जुदा जीवात्माओं भासे छे ! अर्थात आत्मा एज परमात्मा छे'

'ओह, तेथी शुं शंकराचार्यजी जगत मिथ्या होवाथी तेना त्याग नी अने संन्यास नी आवश्यकता बतावे छे ?.

'हां. तेमना मते शास्त्रो द्वारा ब्रहम नुं साचु ज्ञान थाय तो बधु ब्रहमरूप ज देखाशे, अर्थात ज्ञान द्वारा ज्यारे "ब्रहमभाव" उत्पान्न थाय त्यांरे जगत जेवुं कांई जणाशे नहिं. सर्वत्र ब्रहम ज देखाशे.'

'एटले जगत ना स्वरूप विशे खासो विराधाभास छे, बन्ने आचार्योमां !'.

'हां. परंतु श्रीवल्लभचार्यजी वेद-गीता-ब्रहमसूत्र-भागवत ना प्रमाणो नी एकवाक्यता ना आधारे स्पष्ट मत धरावे छे के जगतना निर्माण मा कारणभूता होवा छतां "माया शक्ति" भगवान ने आधीन छे अने तेमनी इच्छा मुजब ज कार्य करे छे, स्वतंत्रपणे नहीं. तेथी माया ने जगत नु "कारण" न कहेवाय, ते भगवान पोते ज छे.

'हवे बराबर समजायु के "माया" अविद्या, विद्या, योगमाया, व्यामोहिका माया इत्यादि शक्तिओ ना रुपे भगवान नी सृष्टिलीला मा सहायक नी भूमिका भजवे छे'.

'बिलकुल'.
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

### * पुष्टि स्वाध्याय" (५७) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## २०. "संसार"

***********

'जीवात्मा आ "संसार" मा आवी ने सुख दुख नो अनुभव केम करे छे, ते समजायु !'.

'संसार मां आवीने नहीं, जगत मां'.

'एकज ने !. "संसार" कहो के "जगत" कहो !'.

'ना जगत अने संसार बे जुदा छे. जगत तो ब्रह्मात्मक होवाथी सत्य छे, परंतु संसार मिथ्या छे.'

'ए केवी रीते ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के जगत भगवान ना चित अने आनन्द तत्त्वो ना तिरोधान पूर्वक सत तत्त्व थी प्रकट थएलु नाम-रुप-कर्मात्मक जड़ सृष्टि छे, तेथी ब्रह्मरुप होवाथी सत्य छे.'

'तो पछी "संसार" शुं छे?'.

'जीवात्मा माया ना प्रभाव थी पोतानी "अहंता" अने "ममता" वड़े ब्रह्मात्मक जगत थी भिन्न पोतानी एक काल्पनिक सृष्टि बनावे छे, तेने "संसार" कहे छे.'

'"अहंता-ममता" शुं छे ?'.

"अहंता" एटले "हुं पणु", अहंकार नो भाव, अने "ममता" एटले मारापणा नो भाव. ए अविद्या (अध्यास) ना कारणे जे भ्रान्ति उत्पन्न थाय छे, तेनेज "संसार" कहेवाय छे. तेथी श्रीवल्लभाचार्यजी "संसार " ने मिथ्या कहे छे. जेम सत्य अने असत्य वच्चे भेद छे तेम जगत अने संसार बन्ने पदार्थो भिन्न छे.'

'ओह, एटले शुं "संसार" अविद्या नुं कार्य छे ?'

'हा, अज्ञान, भ्रम, असत, ए शब्दो अहंता-ममता रुप संसार विशे कहेवामां आवे छे, जगत माटे नहीं, कारणके तेतो ब्रह्मरुप छे.'

'तो शुं जेम विद्या थी अविद्या निवृत्त थई जाय छे, तेम संसार नो पण लोप थई जाय छे ?'.

'हा, अगाउ कह्यु तेम अविद्या थी बंधन अने विद्याथी मुक्ति थाय छे. तेथी जीवात्मा नी मुक्ति थतां संसार नो पण लय थई जाय छे. परंतु जगत नो लय थतो नथी, केमके, जगत तो ब्रह्मात्मक छे'.

'बहु मोटी भ्रमणा दूर थई, कारणके मोटाभागे लोको संसार शब्द जगत माटे वापरता होय छे, अर्थात बन्ने ने एकज माने छे'.

'तेनु कारण ए छे के मायावादीओ जगत ने पण मिथ्या ज कहे छे !'

'साची वात छे, परंतु ते एक भ्रान्ति छे'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ⁎ पुष्टि स्वाध्याय" (५८) ⁎

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### २१. "विषय अने विषयता"

********************

'आपण ने कोई वस्तु नु ज्ञान केवी रीते थाय छे ?'

'ज्यारे आपणी ज्ञानेन्द्रियो कोई वस्तु ना संपर्क मां आवे छे, त्यारे आपणी बुद्धि मां ते वास्तवमां जेवी होय छे तेवो अनुभव थाय छे. अर्थात ते गोळ छे के चोरस, लिसी छे के बरछट, लाल छे के पिळी, वगेरे समजाय छे. आ अनुभव इन्द्रियो द्वारा थतो होवाथी तेने इन्द्रियो नो "विषय" कहेवाय छे.'

'एटले के वस्तु हकीकत मा जेवी होय तेवो अनुभव थाय !'

'हा. तेने "विषय" नुं यथार्थ ज्ञान कहेवाय, कारणके ते वस्तु भगवान ना "सदंश" नुं रूप होवाथी तेंनु वास्तविक अस्तित्व होय छे. तेथी आपणे घडो, खुरसी, टेबल वगेरे जुदा जुदा पदार्थो देखाय / अनुभवाय छे.'

'तो शु वस्तु के विषय नुं "अयथार्थ ज्ञान" पण थाय ?'

'हा. अगाउ कह्यु तेम "व्यामोहिका माया" विषय नुं अयथार्थ ज्ञान पण करावी शके छे. ते ने "अन्यथाप्रतितिभूता माया" कहेवाय छे.'

'ते केवीरीते ?'

'माया जादूगर नी माफक जीव नी बुद्धि मा जगत ना विषयो जेवाज मायिक विषयो उत्पन्न करे छे, जेने श्रीवल्लभाचार्यजी "विषयता" कहे छे'.

'एटले "विषयता" साची नथी होती !'

'हा, तेना कारणे जोनारने जगत ना विषयो नो शुद्ध अनुभव थवाने बदले विषयता मिश्रित विषय नो अनुभव थवा लागे छे.'

'कोई उदाहरण आपशो ?'

'ज्यारे आपणे ट्रेन मा मुसाफरी करीए छीए त्यांरे वास्तव मां ट्रेन दोडती होय छे, परंतु बहार जोता आपण ने लागे छे के वृक्षो अवळी दिशा मां दौड़ी रह्या छे. आ आपणा मननी भ्रामक स्थिति छे. तेवी ज रीते " विषय" नुं साचु ज्ञान थवाने बदले आपणी बुद्धि मा तेनो भ्रम उत्पन्न थाय छे. तेने "विषयता" कहेवाय छे.'

'एटले शुं "विषय" साचा होय छे, परंतु "विषयता" खोटी होय छे, ते आपणो भ्रम मात्र होय छे

?'

'बिलकुल, कारणके "विषय" तो जगत ना पदार्थो नुं साचु अस्तित्व होय छे, जे भगवान माथी उत्पन्न थयेला छे, तेथी ते सत्य छे, परंतु "विषयता" व्यामोहिका माया द्वारा उत्पन्न थयेली होवाथी असत्य छे, तेंनु वास्तविक अस्तित्व होतुं नथी'.

'तो शुं कोई वस्तु सारी छे के खराब तेवो अनुभव माया ना कारणे थाय छे, ते वस्तु तो जेवी उत्पन्न थयेली छे, तेमज होय छे, माया तेने प्रभावित करी शकती नथी ?'

माटे ज श्रीवल्लभाचार्यजी "विषयता" ने छोड़ावा नुं कहे छे, "विषय" ने नहीं, कारणके तेतो भगवद-रुप छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * "पुष्टि स्वाध्याय" (५९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## २२. "सृष्टि सर्जन नुं प्रयोजन"

**********************

'भगवाने सृष्टि नु सर्जन शा माटे कर्यु छे ?'

'उपनिषद तथा भागवत बन्ने कहे छे के सृष्टिनी उत्पत्ति पहेलां भगवान एकलाज हता. अन्य कांई न हतुं.'

"एकमेवाद्वितीयम", तमे कहेलु'.

'हां, तेओ एक मात्र ज हता. श्रुति कहे छे - "स एकाकी न रमते". अर्थात एकला ने मजा आवी शके नही. तेथी तेमणे बीजा नी इच्छा करी - "स द्वितीयं ऐच्छत".

'परंतु भगवान तो सच्चिदानंद छे. आनंद तो तेमना मा रहेलोज छे !'

'बिलकुल साचु. पोतांना आनंद ने माणवा माटेज तेमने अन्य नी इच्छा करी.' भगवान सर्व समर्थ छे. कोई पण कार्य माटे तेमने बीजा नी अपेक्षा होती नथी. तेमणे इच्छा करी अने पोताना सत, चित, अने आनंद तत्वो माथी असंख्य जड़ पदार्थो तेमज चैतन्य सृष्टि न्स अनेक रूपो धारण करी लीधा'.

'एटले भगवाने जगत पोतांना आनंद नो अनुभव करवा माटे उत्पन्न कर्यु छे ?'

'हा, श्रीवल्लभाचार्यजी अणुभाष्य मा कहे छे - "न प्रयोजनत्वात". अन्य कोई प्रयोजन नथी. जेवी रीते कोई राजा प्राणीनो शिकार करे छे, ते तेना मांस नु भक्षण करवा ना हेतु थी नथी करतो. शिकार करवाथी राजा ने विशिष्ट आनंद मले छे'.

'कोई बीजु उदाहरण आपशो ?'

वधु खुलासो करतां कहे छे - "लोकवत्तु लीला कैवल्यम". अर्थात जेवी रीते बालको नाटक नो खेल भजवे छे, तेनो हेतु मात्र निर्दोष आनंद मेलववा नो ज होय छे. अन्य कशो हेतु होतो नथी. तेवीज रीते

भगवान पोताना मां थी विभिन्न रूपो धारण करी निजानंद माटे खेल करी रह्या छे, जेने "लीला" कहेवाय छे. "

'ओह, तो भगवान लीला करवा अथाग परिश्रम करी रह्या छे!'.

'ना, भगवान ने कोई परिश्रम थतो नथी, कारणके तेमनी माया इत्यादि अनेक शक्तिओ छे, जे भगवान नी इच्छा प्रमाणे कार्य करे छे. भगवान "क्रिया शक्ति" अने "ज्ञानशक्ति" रूप छे. तेथी तेओ धारे ते सर्व कांई करी शके छे. कोईपण प्रकार ना श्रम विना आनंद नु उच्छलित थवु, तेनेज "लीला" कहेवाय !'.

'भगवाने अगणित विविधतावाळा पदार्थो तेमज विभिन्न स्वभाव वाळी जीव उत्पन्न करी छे, तेंनु शु कारण छे ?'.

'रस उत्पन्न थाय तो ज आनंद माणी शकाय. रस उत्पन्न करवा माटे "विविधता" अने "विचित्रता" जरुरी छे'.

'ओह, समजायु, सृष्टिमां रहेला अनेक रूप, रस, गंध इत्यादी नुं कारण !'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * "पुष्टि स्वाध्याय" (६०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(आध्यात्मिक चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २३. "जीवात्मा ना प्रकार"

*********************

'भगवाने निजानंद माटे विविधता प्रकट करी छे, तेतो समज मा आव्यू परंतु जो जीवात्मा सच्चिदानंद भगवान नो "चिदंश" होय तो बधा जीवात्मा समान होवा जोइए ! ज्यारे जगत मा सौ एक सरखा नथी होता. दरेक ना स्वभाव जुदा जुदा होय छे. तेंनु शु कारण ?'.

'आपणे अगाउ जोयु के भगवान ज सृष्टि मा पोतानी इच्छा थी "स्वभाव" रुपे रूपांतरित थया छे. तेथी जगतं ना जड़ पदार्थो ना गुणधर्मो भिन्न भिन्न छे, तेम प्राणी सृष्टि मा पण प्रत्येक जीव ना जुदा जुदा स्वभाव घड़्या छे. गीता मा भगवान कहे छे के तेमणे मुख्यत्वे बे प्रकार नी सृष्टि नी रचना करी छे. "दैवी सृष्टि" अने "आसुरी सृष्टि".

'ते बे मा भेद शुं छे ?'.

"दैवी सृष्टि"

'अने "आसुरी सृष्टि" ?'.

"आसुरी सृष्टि"

'एटले सृष्टि ना बे ज प्रकार छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी ए अनेक प्रभेद बताव्या छे. "दैवी सृष्टि" ना बे प्रभेद तेओ समजावे छे - "पुष्टि सृष्टि" अने "मर्यादा सृष्टि". तथा "आसुरी सृष्टि" ने तेओ "प्रवाही सृष्टि" कहे छे.'

'अर्थात तेमना मते त्रण प्रकार ना जीवात्मा छे, १.पुष्टि, २.मर्यादा अने ३. प्रवाही !'

'आ सिवाय तेना अनेक प्रभेद होइ शके छे, जेने "मिश्र सृष्टि" कहेवाय छे, कारण के आ प्रभेदो जीवोना लाक्षणिक गुणोना आधारे पड़वामां आव्या छे.

"मिश्र सृष्टि" शुं छे ?'

'तेमां पुष्टि तथा मर्यादा (पुष्टि-मर्यादा) अथवा पुष्टि तथा प्रवाही (पुष्टि-प्रवाही) जीवो ना गुण होय. तेवीज रीते मर्यादा तथा पुष्टि (मर्यादा-पुष्टि) अथवा मर्यादा तथा प्रवाही (मर्यादा-प्रवाही) जीवो ना गुण होय ! तेवां अनेक प्रभेद होइ शके छे. प्रवाही सृष्टि ना पण बे प्रभेद बताव्या छे - १.अज्ञ अने २.दुर्ज्ञ.

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (६१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २३. (चालु) "जीवात्मा ना प्रकार"

**************************

चालु ..........

'जीवात्मा ना भेद कई रीते पाड़वामां आव्या छे ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजीए तेमना "पुष्टिप्रवह्मर्यादा भेद" ग्रंथमा विस्तार थी आनो खुलासो करता कह्यु छे के - "पुष्टिजीवो" भगवान ना श्रीअंग मां थी उत्पन्न थया छे. तेमनी रूचि भगवान नी सेवा करवांनी होय छे. आ प्रकार ना जीवो भगवान नी कृपा थी निर्गुण भक्ति द्वारा भगवान ना स्वरूप ने प्राप्त करे छे, भगवान नी अलौकिक लीलाओ नो अनुभव करे छे'.

'शुं बधा पुष्टिजीवो सरखा होय छे ?'.

'ना, श्रीवल्लभाचार्यजी तेना चार प्रभेद बतावे छे'

'कया कया ?'

'१. शुद्ध पुष्टि - तेमने भगवान पोतानी कृपाथी स्वयं ज पोतानो अनुभव करावे, छे. तेमनो भगवान प्रत्येनो स्नेह सहज, उत्कट तथा कोई प्रयोजन विना नो होय छे, आवा जीवो अति दुर्लभ होय छे

२.पुष्टि पुष्टि - आ जीवो भगवान ना माहात्म्यज्ञानवाळा अने तेमना प्रत्ये सुदृढ़ सर्वतिधिक स्नेह धरावता होई हमेशां कृष्णसेवा पारायण होय छे.

३. मर्यादा पुष्टि - आ जीवोने भगवान श्रीकृष्णनी लिलाओनी कथा द्वारा भगवान ना गुणो नुं प्रेमपूर्वक चिंतन करवामां विशेष रूचि होय छे.

४. प्रवाह पुष्टि - आ जीवोने भगवान नुं सारु माहात्म्यज्ञान के तेमना मां दृढ प्रेम होतो नथी. छतां तेमने कृष्ण भजन तथा बाह्य क्रियाओ मां तत्परता होय छे.'

'मर्यादा जीवो नी शुं खासियत होय छे ?.'

'मर्यादा जीवो भगवान नी वाणी मांथी उत्प कार्यन्न थया छे. तेमने वेदमां कह्या प्रमाणे धर्म-अर्थ-काम पुरूषार्थो ना अनुष्ठान मा रूचि होय छे, जेओ अंतमां मोक्ष प्राप्त करे छे'.

'अने प्रवाही जीवो नु शु स्वरूप छे ?.'

'प्रवाही जीवोने भगवाने पोतांना मनमां थी उत्पन्न कर्या छे, जेमनी रूचि जगतं ना विषयो मां होय छे. तेथी तेओ भवप्रवाह मां तणाया करे छे. तेमने भगवान पोतानी इच्छा मुजब फल आपे छे. गीता मा कहेली आसुरी सृष्टि नोज आ प्रकार छे, जेमने योग्य प्रवृत्ति के निवृत्ति नुं ज्ञान होतुं नथी. जगत मा मोटा भाग नी सृष्टि आ प्रकार नी छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (६२) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## २४. "बंधन अने मोक्ष"

*****************

"बंधन" एटले शुं ?'.

"बंधन" नो अर्थ छे - जन्म-मरण ना चकरावा मां फसावुं'. तेने कारणे जीवात्माने अनेक प्रकारना दुःखो नो अनुभव करवो पड़े छे.'

"बंधन" थवानुं कारण शुं ?'.

'अगाउ आपणे जोयु के जीवात्मा ने "अविद्या - माया" ना कारणे बंधन थाय छे. ते पोतांना मूल स्वरुपने - के पोते भगवान नो अंश छे अने भगवान माथी छूटो पड्यो छे ते भूली जाय छे अने पोताने देह, इंद्रियादि मानी बेसे छे. वास्तवमां जन्म-मरण जेवुं जीवात्मा ने होतुं ज नथी. ते तो पोतांना कर्मानुसार फल भोगववा एकथी बीजी योनी यो मा भटकतो रहे छे, आने तेना कारणे सुख दुःख नो अनुभव करे छे. तेनु नाम ज "बंधन" छे.'.

'तो शुं जीवात्मा जन्म-मरण ना चकरावा मां थी मुक्त थई शके छे ?'.

'हा, जो तेने पोतानी वास्तविकता नुं, पोतांनाज्ञान थाय तो !, अने तद्‌विषयक पूरुषार्थ करे तो तेने मोक्ष प्राप्ति थाय.'

"मोक्ष" एटले शुं ?'

"मोक्ष" नी परिभाषा विबिन्न आध्यात्मिक दृष्टिकोण थी अलग अलग करवा मां आवी छे. केटलाक दुःखनी निवृत्ति अने सुखनी प्राप्ति ने मोक्ष माने छे, तो केटलिक दार्शनीक विचारधारा मुजब पोताना आत्मा नी ओळख के ते स्वयं परमात्मा छे, तेने मोक्ष कहे छे.,

'मोक्ष विशे श्रीवल्लभाचर्यजी नो दृष्टिकोण शुं छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजी नी शुद्धाद्वैत विचारधारा मुजब मोक्ष ए स्थिति नुं नाम छे, जेमां जीव ना अध्यास छूटी गया पछी ते भगवान नी अलौकिक लीलाओ ना आनंद नो अनुभव करे छे. भगवान श्रीकृष्ण नी निर्गुण भक्ति द्वारा भजनानन्द नी प्राप्ति ए पुष्टिमार्गीय मोक्ष छे, जे अक्षरब्रह्म मा लीन थवा करतां अधिक छे, कारणके तेमा भगवान नो प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे.

(चालु)........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (६३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २४. (चालु) "बंधन अने मोक्ष"

**********************

चालु ............

'शु मुक्ति ना अनेक प्रकारो छे ?'

'हां, केवल निष्काम कर्म करवाथी आत्मानंद रूपा मुक्ति प्राप्त थाय छे, अथवा ब्रह्मज्ञान सह वेदिक कर्म द्वारा ब्रह्मानन्द नी प्राप्ति थाय छे. ते पण मुक्ति नो एक प्रकार छे'.

'शुं विभिन्न देवो नी उपासना करवाथी मुक्ति प्राप्त थई शके छे ?'.

'हां, भगवाने धारण करेला वेदोक्त देवताओं - अग्नि, वरुण आदि, तेमज विभिन्न पुराणोक्त देवो - शिव, दुर्गा, गणपती ईत्यादि नी आजीवन निष्काम भाव थी उपासना करवा थी ते ते देवताओं ना लोकमां, अथवा जे ते देव स्वरूपो मां सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य, सारूप्य, अथवा सायुज्य रुप मुक्ति प्राप्त थाय छे.'

'मुक्ति ना आ प्रकारोने जरा विस्तार थी कहो '.

"सालोक्य" मुक्ति एटले जे ते देव ना लोक मा वास प्राप्त थवो. "सार्ष्टि" मुक्ति नुं तात्पर्य छे, ते देव ना जेवा ऐश्वर्य नी प्राप्ति. तेवीज रीते "सामीप्य" अर्थात ते देव नुं सानिध्य प्राप्त थवु, अने "सारूप्य" नो अर्थ छे, जे ते देव ना जेवा रूप नी प्राप्ति.'

"सायुज्य" एटले शुं "

"सायुज्य" नो अर्थ छे भळी जवु, एकात्म थई जवुं. जीवात्मा जे ते देव मा लीन थई जाय छे.'

'तो शुं "सांख्य" अने "योग" द्वारा पण मोक्ष प्राप्ति थई शके छे ?.'

'हां, कोई पण देव नो आश्रय कर्या विना केवल "सांख्य" तेमज "योग" ना अनुष्ठान द्वारा पण आत्मानंद ना अनुभव रुप मुक्ति नी प्राप्ति थाय छे.'

'शुं "कर्म" नी माफक "ज्ञान" द्वारा पण मोक्ष प्राप्त थई शके छे'.

'हा, जेम शंकराचार्यजी कहे छे तेम "प्रस्थान त्रयी" -वेद, गीता अने ब्रह्मसूत्रों ना ज्ञान द्वारा

ब्रह्म नुं यथार्थ ज्ञान थाय तो ब्रह्मरुप्ता प्राप्त थाय, ब्रह्मानन्द नो अनुभव थाय, कारणके जीवात्मा अक्षरब्रह्म ने प्राप्त थाय छे. आ ज्ञानमार्गीय अथवा मर्यादामार्गीय मोक्ष छे.'

चालु.......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

### * पुष्टि स्वाध्याय" (६४) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २४. (चालु) "बंधन अने मोक्ष"

**********************

चालु.........

'परंतु "बंधन" नुं कारण तो "अविद्या" छे तेम कहेलूं ?'.

'साची वात छे. अविद्या ना कारणे जीव ने देहादि ना अध्यास (भ्रान्ति) थवाने लीधे पोताना स्वरूप नी विस्मृति थई जाय छे, जे तेना बंधन नुं कारण बने छे'.

'तो तेमांथी मुक्त थवानो उपाय शुं ?'

'अविद्या नी माकक "विद्या" पण भगवान नी शक्ति छे, जेना पांच पर्वो छे - वैराग्य, सांख्य, योग, तपः, अने भक्ति.. तेनी चर्चा अगाउ करी छे. ए विद्या द्वारा जीवने देह, इंद्रिय, प्राण, अंतःकरण तेमज स्वरूप विस्मृति ना अध्यासो दूर थई जाय छे.'

'तो शुं अध्यासो दूर थवाथी जीवात्मा मुक्त बनी जाय छे ?'.

'आ अध्यासो दूर थवा छतां जीवात्मा ना संचित तथा प्रारब्ध कर्मो ना फल भोगववाना ज्यांसुधी बाकी होय, त्यां सुधी तेना देह नो विलय अर्थात तेनु मृत्यु थतुं नथी, परंतु अविद्या नुं बंधन ढिलु पड़वाथी तेनो अहंता-ममतात्मक संसार छूटी जाय छे.'

'तो ए स्थिति ने शुं कहेवाय ?'.

'अविद्या दूर थवा छतां देह टकी रहे ते स्थिति ने "जीवनमुक्ति" कहेवाय छे. जीवन रहेवा छतां ते जीव "मुक्तात्मा" छे.

'अर्थात शुं "जीवनमुक्ति" अहंता-ममतात्मक संसारथी मळती मुक्ति छे ?'.

'हा, जीवन्मुक्त जीवात्मा जागतिक बंधनोथी मुक्त होतो नथी.'

'तो जीवात्मा संपूर्णतः मुक्त क्यारे थाय छे ?.'

'जीवन्मुक्त मनुष्यने ज्यारे सर्वे कर्मोना फल भोगवाई जाय त्यांरे विद्यमान अने आगामी देह थी छुटकारो मली जाय छे. ते स्थितिने "विदेह मुक्ति" कहेवाय छे. ते पछी तेनो जन्म के मृत्यु थतु नथी.'

"विदेहमुक्ति" पछी जीवात्मा नी शुं स्थिति होय छे ?'

"विदेहमुक्ति" ना अनेक प्रकारो छे. जीवात्मा नी यौग्यता मुजब भगवान तेने स्थान आपे छे. आवी

मुक्ति भगवान दैवीजीवो नेज आपे छे, आसुरी जीवो मुक्त थई शकता नथी. तेओ सृष्टिना प्रलय पर्यन्त अनेक योनीओ मा भटकता रहे छे.'

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

### * पुष्टि स्वाध्याय" (६५) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

### २४. (चालु) "बंधन अने मुक्ति"

**********************

चालु..........

'श्रीवल्लभाचार्यजी ना दृष्टिकोण थी "मोक्ष" नुं स्वरूप शुं छे ?'

'तेमनी दृष्टिथी मोक्ष मात्र दुःखनी निवृत्ति के भगवान मा लीन थई जवुं ते नथी, परंतु भगवान ना शाश्वत आनंद नी प्राप्ति छे'.

"शाश्वत आनंद" थी शुं तात्पर्य छे ?'

'भगवान "सच्चिदानंद" होवाथी तेओ आनंद स्वरूप छे. श्रुति कहे छे - "आनंदो ब्रह्मेति व्यजनात", अर्थात "आनंद" एज ब्रह्ण छे. श्रीवल्लभाचार्यजी ए आनंद नी प्राप्ति ने मोक्ष कहे छे.'

'एटलेके "मोक्ष" प्राप्त करवो एटले "आनंद" प्राप्त करवो, अर्थात "भगवान" ने प्राप्त करवा !'

'बिलकुल. तेथी तेओ कहे छे -"भगवानेव फलं", भगवान ज फलरुप छे, अंतिम लक्ष छे, मोक्ष के मुक्ति नहीं.'

'अद्भुत ! तो शुं "अक्षरब्रह्म" मां एकाकार थवा नो तेमनो आशय छे ?'

'ना, अक्षरब्रह्म तो "गणितानंद" छे. तेनाथी विशेष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण छे, तेम भगवान स्वयं गीता मां कहे छे'.

'अर्थात श्रीकृष्ण नी प्राप्ति ए "मोक्ष" छे ?'

'मोक्ष थी पण विशेष . मोक्ष के मुक्ति तो अस्तित्व मिटावी देवानी स्थिति छे. पुष्टिजीवो नु ते लक्ष नथी, परंतु तेथी विशेष तेओ "भक्ति" नी अपेक्षा राखे छे, जेना द्वारा भगवान ना आनंद ने माणी शकाय, तेमनी दिव्य लीलाओ नो अनुभव करी शकाय !'.

'परंतु शास्त्र तो "मोक्ष" ने अंतिम पूरुषार्थ बतावे छे !'.

'श्रीवल्लभाचर्यजी तेथीए विशेष "भक्ति" ने पंचम पूरुषार्थ कहे छे. कारण के ते मोक्ष थी अधिक छे.'

'अर्थात, तेमनी दृष्टिमां मोक्ष प्राप्ति ए पुष्टिजीव नु ध्येय नथी परंतु "भक्ति" छे !'.

'हां, तेथीज श्रीवल्लभाचर्यजी चतुःश्लोकी ग्रन्थ मा पुष्टिमार्गीय मोक्ष समजावता कहे छे -

"स्मरणं भजनं न त्याज्यम", अर्थात आपणु चित्त सतत भगवान ना स्मरण अने भजन (सेवा) मा डुबेलु रहे तेज जीवन नुं अंतिम लक्ष छे, तेज पुष्टिमार्गीय मोक्ष छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (६६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २५. "मुक्ति ना मार्गो "

*****************

'शुं बधा जीवो मुक्ति ना अधिकारी होय छे ?'

'ना, पुष्टि अने मर्यादा जीवो नी मुक्ति थाय छे, प्रवाही अर्थात आसुरी जीवो नी मुक्ति थती नथी.'

'तो तेवां जीवो नी शुं गति थाय छे ?'

'आसुरी जीवो प्रलयकाल पर्यन्त कर्मानुसार विभिन्न योनीओ मां जन्म अने मरण ना चकरावा मां फर्या करे छे.'

'आसुरी जीवो नी आवी गति थवानुं कारण शुं ?'

'जे जीवोने भगवान आसुरी बनाववा इच्छे छे ते जीवोमां ज्यारे तेओ भगवान मां थी छूटा पड़े त्यांरे एटले के तेमना "वरण" समये ज तेमनामां असद वासना स्थापित करी दे छे. असद्वासना मुक्ति मेलववामा बाधक बनी जती होय छे, जेना कारणे तेने आसुरी देह नी प्राप्ति थाय छे. तेमनी रुचि स्वभाव-वशात निंदित कर्मो करवामां होय छे. तेना कारणे तेमने हिन् योनिमां जन्म लेवो पड़े छे.

'ओह ! तेथी आसुरी जीवोने कायम जन्मता अने मरता ज रहेवु पड़े छे ?'

'हा, तेओ प्रलय पर्यन्त मुक्त थतां नथी'

'तो प्रलय थाय त्यांरे ते जीवो नी शुं स्थिति होय छे ?'

'भगवान ज्यारे सृष्टिने संकेली लेवा नी इच्छा करे छे त्यांरे तेओ आसुरी जीवो नी अविद्या नो नाश करीने पोतांना मा लीन करी दे छे'.

'एटले आसुरी जीवो साधन करवा छतां मुक्त थई शकता नथी !'

'ना, तेमनी मुक्ति मात्र भगवान नी इच्छा थी ज थाय छे, जेम कंस, शिशुपाल इत्यादि नो भगवाने उद्धार करेलो.'

'तो पछी पुष्टि तेमज मर्यादा जीवो नी मुक्ति कई रीते थाय छे ?'.

'पुष्टि अने मर्यादा जीवो नी मुक्ति माटे शास्त्रोमा विभिन्न मार्गो बतावववामां जाव्या छे, जेवाके कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग, भक्तिमार्ग वगेरे..

'आ मार्गो ने विस्तारथी समजावशो ?'

चालु..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (६७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २६. "कर्ममार्ग - ज्ञानमार्ग"

********************

"कर्ममार्ग" एटले शुं?'.

'वेद ना मुख्य बे विभाग छे - १."पूर्वकाण्ड" जेने "कर्मकांड" पण कहेवाय छे. अने २. "उत्तरकाण्ड", जे "ज्ञानकांड" तरीके पण ओळखाय छे.'

"पूर्वकाण्ड" ने "कर्मकांड" शा माटे कहेवाय छे ?'.

'कारणके तेमां विविध प्रकारना यज्ञ-यागादि कर्मो करवाना विधान कारवा मां आव्या छे.'

'यज्ञ करवानुं तात्पर्य शुं छे ?'.

'विभिन्न प्रकार ना यज्ञ-कर्म करवाथी इच्छित फलो - साम्राज्य, स्वर्गादि सुख नी प्राप्ति वगेरे थाय छे.'

'शुं कर्म द्वारा मोक्ष नी प्राप्ती पण थई शके छे?'

'वेद माँ निरुपण करवामां आव्यू छे के ज्यारे जीवात्माना बधाज सारा-खोटा संचित तेमज प्रारब्ध कर्मो ना फल भोगवाई जाय अने नवा काम्य कर्मो थता अटकी जाय, त्यांरे तेने फरी थी जन्म लेवो पडतो नथी'.

"संचित कर्म" एटले शुं?'.

'आपणे जे कर्मो करीए छीए, त्यांरे तेनी फल आपवा नी क्षमता उत्पन्न थाय छे, जेने "अपूर्व" कहेवाय छे'.

'शुं आपणे कर्म करीए एटले तरत ज तेंनु फल मली जाय छे ?'.

'ना, कर्म ना फल भगवान नी इच्छा मुजब आ जन्म मा के पछीना कोई जन्म मा भोगववा पड़े छे, त्यां सुधी ते कर्मो एकठा थता रहे छे. तेने "संचित कर्मो" कहेवाय छे'.

'अने "प्रारब्ध कर्मो" ?'

'आ जन्म मा आपणे जे सारा - खोटा फल भोगवीए छीए ते आपणा अगाउ ना जन्मो ना फल छे, ते कर्मो ने "प्रारब्ध कर्म" कहेवाय छे'.

'तो शु आपणे बधाज कर्मो ना फल भोगववा पड़े छे ?'

'कोईपण प्राणी कर्म कर्या विना रही शकतु नथी, परंतु कोई इच्छा वश आपणे जे कर्म करीए छीए, जेने "काम्य कर्म" कहेवाय छे, तेना फल अवश्य भोगववा पड़े छे, परंतु "निष्काम भाव" थी, आसक्ति विना कर्म करवा मां आवे अने ते जो भगवान ने अर्पण करवा मां आवे तो ते बंधनकर्ता होता नथी, एम् भगवाने

गीता मा समाजाव्यू छे.'

'एटले आपणने "फल प्राप्ति" कर्मो द्वारा थाय छे!'.

'ना कर्म तो जड़ छे, ते फलप्राप्ति करावी शकतु नथी, कर्म नु फल तो भगवान ज आपे छे, तेवो खुलासो श्रीमहाप्रभुजीए अणुभाष्य मा कर्यो छे.

चालु.........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (६८) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २६. (चालू) "कर्ममार्ग - ज्ञानमार्ग"

**************************

चालु .........

'गीताजी मां कह्यु छे - "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन", एनुं तात्पर्य शुं छे ?'

'भगवान कहे छे के प्रत्येक मनुष्ये पोताना वर्णाश्रम धर्म अनुसार कर्म करवुं आवश्यक छे. परंतु तेंनु फल आपवुं भगवान ने आधीन छे. तेथी फलनी चिंता करवी नहीं, अर्थात निष्काम भावे कर्म करवा जोइए.'.

'तो शुं यज्ञ-यागादि पण निष्काम भावथी करवा जोइए?'.

'बिलकुल. श्रीवल्लभाचार्यजीए सुबोधिनिजी मा त्रण प्रकारना यज्ञ बताव्या छे - १.कोई कामना थी करवा मां आवे ते यज्ञ "आधिभौतिक" छे, २. जे चित्तनी शुद्धि माटे करवा मां आवे तेने "आध्यात्मिक यज्ञ" कहेवाय, अने जे भगवान माटे करवामां आवे ते "आधिदैविक यज्ञ" कहेवाय, जे उत्तम छे.

'शुं "कर्ममार्ग" नी कोई मर्यादा छे ?'.

'हां. कर्ममार्ग नु फल अनित्य छे, अर्थात ते पुण्योपभोग थाय त्यां सुधीज रहे छे. ते भोगवाई जाय एटले पुनः जन्म-मरण ना चकरावा मां आवी जवुं पड़े छे. तदुपरान्त, तेमा फलप्राप्ति माटे देश (स्थळ), काल (समय), द्रव्य (यज्ञ सामग्री), मन्त्र, कर्म अने कर्ता नी शुद्धि आवश्यक छे. तेमाथी कोई पण अशुद्ध होय तो इच्छित फल नी प्राप्ति असंभव छे'.

'ओह, अर्थात ते कठिन छे, तेम कही शकाय !'.

'बिलकुल साचु छे. विशेषतः वर्तमान कलिकाल मां तो ए बधा अंगों शुद्ध होवा मुश्केल छे.'

'तेथी कही शकाय के शास्त्रोक्त "कर्ममार्ग" मोक्षप्राप्ति नुं साधन अवश्य छे, परंतु ते सरल नथी'.

'माटे ज श्रीवल्लभाचर्यजी "कर्म" ने अंतःकरण नी शुद्धि माटे उपयोगी बतावे छे. तेमना मते "भक्तिमार्ग" परम फल नी प्राप्ति माटे उत्तम साधन छे, कारण के तेमां जीवात्मा कृतार्थ थाय छे'.

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (६९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २६. (चालु) "कर्ममार्ग - ज्ञानमार्ग "

***************************

चालु.........

"ज्ञानमार्ग" एटले शुं ?'

'जेम कर्मेन्द्रियों कर्म करवा माटे छे, तेम ज्ञानेन्द्रियो ज्ञान प्राप्ति माटे छे. जेवीरीते जीवन मां लौकिक विषयो नुं ज्ञान जरुरी छे तेवीरिते मोक्ष प्राप्ति माटे भगवान विशे नुं ज्ञान आवश्यक छे.'

'एटले शुं जेम पुस्तको द्वारा आपणे पदार्थो नुं ज्ञान मेळवीए छीए तेम भगवान विशे जाणिये ते "ज्ञान" छे ?'

'ना, "अलौकिक ज्ञान" नुं तात्पर्य मात्र इन्द्रियजन्य के बुद्धिजन्य ज्ञान नहीं, परंतु भगवान विशे अनुभूति करावनार शास्रो द्वारा मेलवेल विज्ञान, ते ज साचु ज्ञान कहेवाय.'

'एवु ज्ञान केवीरीते मेळवाय ?'

'शंकराचार्यजी भगवान ने "ज्ञान रूप" माने छे. तेथी तेओ समजावे छे के "वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो" ए "प्रस्थान त्रयी" छे, जेना द्वारा ब्रह्म नुं अर्थात भगवान ना स्वरूप नु ज्ञान प्राप्त थयी शके छे.'

'परंतु ते ज्ञान द्वारा भगवान नी प्राप्ति केवी रीते थाय ?.'

'तेने माटे "साधन-चतुष्टय" एटले वैराग्य, नित्य-अनित्य वस्तुओं नो विवेक, तपः तथा योग अने मुमुक्षत्व नी आवश्यकता छे. ए विद्याओं द्वारा ज्यारे आपणी अविद्या दूर थाय त्यारे मुक्ति मले. शंकराचार्य जी ना मते "आत्मा" एज "परमात्मा" छे. बन्ने मा तात्विक भेद नथी. तेथी ज्यारे शास्रो द्वारा भगवान ना साचा स्वरूप ने जाणिये त्यारे समजाय के जीवात्मा पोतेज ब्रह्म छे.'

'शु तेथी ज्ञानवादीयो कहे छे "अहं ब्रह्मास्मि" ?'

'ब्रह्मना स्वरूप ने जाणवा थी " ब्रह्मभाव" उत्पन्न थाय छे, सर्वत्र ब्रह्मरूपता देखाय छे. जीवात्मा ने ब्रह्मानन्द नो अनुभव थाय छे'.

'शुं ते ज मोक्ष छे ?'.

'हां, ज्ञानमार्ग मा ब्रह्मरूपता नी अनुभूति नेज मोक्ष कहे छे.'

'अर्थात शुं ते अवस्थामा भगवान नी - पूर्ण पुरुषोत्तम नी प्राप्ति थाय छे, भगवान नो आनंद प्राप्त थाय ?'.

'ना, ज्ञानमार्ग द्वारा पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण नी प्राप्ति थती नथी, परंतु "अक्षरब्रह्म" नी प्राप्ति थाय छे, अर्थात जीवात्मा अक्षरब्रह्म मां लीन थई जाय छे. तेनेज मोक्ष कहे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (७०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## २७. "भक्तिमार्ग"

************

"भक्तिमार्ग" कोने कहेवाय ?

'भगवान नी भक्ति द्वारा मोक्षप्राप्ति ना मार्ग ने "भक्तिमार्ग" कहेवाय छे'.

"भक्ति" शब्द नुं तात्पर्य शुं छे ?'.

"भक्ति" शब्द नो सादो अर्थ थाय -भगवान प्रत्ये प्रेम. प्रेमपुर्विका सेवा ने भक्ति कहेवाय. भगवान ने विविध प्रकारनी उपासना द्वारा प्रसन्न करवाथी मोक्षनी प्राप्ति थयी शके छे. वेदमां अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण वगेरे देवताओं नी उपासना द्वारा प्रसन्न करवानु विधान छे. ते भक्ति नो ज प्रकार छे.

'शुं बीजा कोई शास्रो मा भक्ति नो उल्लेख करवा मा आव्यो छे !'.

'भक्ति नुं माहात्म्य गीता तेमज भागवत बन्ने मा समजाववा मां आव्यू छे. गीतामा भगवान अर्जुन ने कहे छे -"अनन्य भक्ति द्वाराज मने पामी शकाय छे".भागवात मा पण भगवान उद्धावजीने कहे छेके तेओ सांख्य, योग, ज्ञान, तप के वैराग्य थी प्राप्त थता नथी, परंतु तेमनी प्राप्ति "भक्ति" द्वारा ज सहेलाईथी थई शके छे.'

'भक्तिमार्ग नी विशेषता शुं छे ?'

'भक्तिमार्ग नुं फल नित्य छे. भक्ति मां कोई क्लेश के कष्ट नथी, अर्थात त्ये सुलभ छे. तेमां देश-कालादि नो बाध नथी. जीव कृतार्थ थाय छे. कोईपण मनुष्य लिंग, जाती के वर्ण ना भेद विना भक्तिमार्ग अपनावी शके छे'.

"मर्यादा भक्तिमार्ग" नाम थी शुं तात्पर्य छे ?'.

"भक्तिमार्ग" ना बे प्रकार छे - १.मर्यादा भक्तिमार्ग अने २. पुष्टि भक्तिमार्ग. जे भक्ति शास्त्रोमा बतावेला विविद्द साधनो, जेवा के जप, तप, पूजन, अर्चन इत्यादि पर अवलंबित होय छे, तेने "मर्यादा भक्तिमार्ग" कहे छे. तेमा भगवान नी कोई विभूति नी उपासना करवा मां आवे छे, जेना द्वारा विभिन्न प्रकारनी मुक्ति - सायुज्य, सामीप्य, सालोक्य, सारूप्य के सार्ष्टि प्राप्त थाय छे'.

'अने "पुष्टि भक्तिमार्ग" ?'.

"पुष्टिभक्तिमार्ग" स्वयं भगवान नी कृपा पर आधारित छे'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (७१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २८. "भक्ति"

**********

"भक्ति" अने "उपासना" मा शुं भेद छे ?'.

" उपासना" सकाम-भक्ति नो प्रकार छे, जेमां कोई इच्छित वस्तु नी प्राप्ति माटे कोई देवता ने प्रसन्न करवा माटे तेमनी पूजा-अर्चन इत्यादि करवा मां आवे छे. ते मर्यादाभक्ति नोज प्रकार छे'.

'शुं भक्ति ना बीजा पण प्रकार छे ?'

'हां, श्रीमद भागवत मा नव प्रकारनी "नवधा - भक्ति" नु निरुपण करवामां आव्यू छे'.

'ते नव प्रकार नी भक्ति कई छे ?'

'नवधा भक्ति ना नाम छे - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, पादसेवन, वंदन, दास्य, सख्य अने आत्मनिवेदन भक्ति'.

'थोड़ा विस्तारथी समजावशो ?'.

'भागवत ना "श्रवण" थी राजा परिक्षितने, तेना "कीर्तन"- कथा द्वारा शुकदेवजीने, प्रल्हादजीने प्रभु "स्मरण" द्वारा, पृथुराजा ने "अर्चन" द्वारा, लक्ष्मीजीए "पादसेवन"थी, अक्रुरजी ने "वंदन" द्वारा, हनुमानजी ने "दास्य" भाव नी, अर्जुने "सख्य" भाव नी अने बलीराजाए "आत्म निवेदन" भक्ति द्वारा भगवान ने पाम्या होवा ना प्रमाण पुराणो मां मले छे.'

'एटलेके आ बधा भक्तो ने जुदा जुदा प्रकारनी भक्ति फलित थयेली छे. आ नव मांथी कोई पण एक प्रकार नी भक्ति मोक्ष नी प्राप्ति करावी शके छे'

'बिलकुल. आ सर्वे मर्यादा भक्ति ना प्रकार छे, कारणके तेमने साक्षात पुरुषोत्तम नी प्राप्ति अथवा भगवान नी नित्यलीला मा प्रवेश मल्यो नथी, परंतु तेओ सर्वे मुक्त थया छे,अर्थात भगवान् मा लीन थया छे.

'तो पछी साक्षात श्री पुरुषोत्तम नी प्राप्ति केवी रीते थाय ?'

'तेने माटे उपनिषद कहे छे - "भगवान नतो प्रवचन करवाथी मळता, न बुद्धि द्वारा, के न बहु कथाओ संभाळवाथी मळी शके, परंतु तेओ स्वयं जेनु वरण करे, अर्थात जेना पर कृपा करे , तेने मळे छे".

'तो, भगवान कोना पर कृपा करे ?'

'ते कोई कही शके नहीं, कारणके भगवान स्वतन्त्र छे. परंतु "कृपा करवी" ए भगवान नु एक लक्षण छे'. तेथी श्रीवल्लभाचार्यजीए भगवान नी निस्वार्थ - निर्गुण भक्ति, जेने "पुष्टि भक्ति" कहे छे, तेनो एक आनोखो मार्ग बताव्यो छे'.

'शु नाम छे ते मार्ग नुं ?'

'पुष्टि भक्तिमार्ग', अथवा "पुष्टिमार्ग".

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ⁎ पुष्टि स्वाध्याय" (७२) ⁎

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### २९. "पुष्टि भक्ति"

***************

"पुष्टिभक्ति" नुं तात्पर्य शुं छे ?'

'"मर्यादा भक्ति" जीव द्वारा करवामा आवता शास्त्रोक्त साधनो, जेवाके जप, तप, दान इत्यादि पर आधारित उपासना छे, ज्यारे "पुष्टिभक्ति" स्वयं भगवान नी कृपा पर अवलंबित छे'.

'भगवान नी कृपा केवीरिते प्राप्त थाय ?'.

'तेने माटे आवश्यक छे - भगवान प्रत्ये हृदयमा शुद्ध निर्व्याज प्रेम. श्री वल्लभाचार्यजी कहे छे- "भगवान ना माहात्म्यज्ञान पूर्वक तेमनामां कदी न डगे तेवो सुदृढ़ सर्वतोद्धिक स्नेह" तेने भक्ति कहेवाय.'.

'भगवान ना माहात्म्यज्ञान नुं शुं तात्पर्य छे ?'.

'भगवान जगत ना सर्व पदार्थो मा अस्तित्व धरावे छे, तेमज समग्र जगत भगवान मा समाएलु छे, तेवु ज्ञान ते भागवान नुं माहात्म्य छे'. भगवान सर्व समर्थ, सर्व व्याप्त, सर्वज्ञ छे, अर्थात तेमना मा "कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथा कर्तुम सामर्थ्य" छे, तेनु ज्ञान होवु जोइए. आवुं ज्ञान होय तो तेमना मां सहज प्रेम थाय. एवा ज्ञान युक्त भगवान मां प्रेम उद्भवे तेने भक्ति कहेवाय.'

'एवी भक्ति केवीरिते प्राप्त थाय ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के भगवान जेनुं "पुष्टिजीव" तरीके वरण करे छे, त्यारे तेओ ते जीव मां भक्तिनुं बीज आरोपित करे छे. ज्यारे भगवान ते जीव नो उद्धार करवा इच्छे त्यारे तेमनी कृपा ना कारणे तेनामां रहेलु भक्तिनुं बीज भगवान माटे प्रेम रुपे अंकुरित थाय छे, जे विकास पामता पल्लवित, पुष्पित थाय छे. भागवद-प्रेम उत्तरोत्तर आसक्ति अने व्यसन दशा ने प्राप्त करे त्यारे ते जीवने सर्वात्मभाव सिद्ध थतां तेने भगवद लीला नो कनुभव थाय छे.

'अर्थात "कृपा" अने "भक्ति" वच्चे पारस्परिक सम्बन्ध छे!'.

'बिलकुल, ज्यारे भगवद अनुग्रह ने कारणे कृपा भगवान तरफ थी भक्त तरफ वहे, तेने "पुष्टि" कहे छे, अने ते ज्यारे भक्तना हृदयमाथी परावर्तित थई भगवान तरफ वहे तेने "पुष्टिभक्ति" कहे छे'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (७३) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३०. "पुष्टिमार्ग"

************

"पुष्टिमार्ग" एटले कयो मार्ग ?'.

"पुष्टिमार्ग" एटले भगवान नी "पुष्टि" अर्थात "कृपा" द्वारा भगवान ने प्राप्त करवानो मार्ग'.

'भगवान नी कृपा केवी रीते थाय ?'.

'भक्त नी निष्काम, अनन्य भक्ति थी भगवान प्रसन्न थाय. भगवान गीता मां कहे छे -"जेओ श्रद्धावान थइ मारा परायण रही मने सेवे छे, त्ये भक्तो मने अत्यंत प्रिय छे". भगवान जो प्रसन्न थाय तो भक्त पर अवश्य कृपा करे. भागवत मां पण भगवान कहे छे - "सांख्य, योग तप के वैराग्य थी मने मेळवी शकातो, जेटली सरलताथी भक्ति द्वारा मने पामी शकाय छे".

"भक्ति एटले भगवान प्रत्ये सुदृढ़ - सर्वतोधिक प्रेम", केम बराबर ने !'

'बिलकुल. तेने "प्रेमलक्षणा भक्ति" अर्थात "पुष्टिभक्ति" कही छे. तेना द्वारा भगवान ने मेळववानो मार्ग ते "पुष्टिभक्ति मार्ग", अथवा "पुष्टिमार्ग".

"पुष्टिमार्ग" मा मुख्य कई बाबतो आवश्यक गणाय ?'.

'पुष्टिमार्गना चार आधारस्तम्भ छे - "भक्ति - शरणागति - समर्पण - सेवा". पुष्टिमार्ग पर चालवा आ चार बाबतो आवश्यक छे'.

'शुं ए चारेय बाबतो एकबीजा साथे जोड़ायेली छे ?'.

'हां, जाणो छो - भक्ति माटे शुं आवश्यक छे ?'.

'भगवाननुं "माहात्म्य ज्ञान", अने भगवान मा "सौथी विशेष स्नेह".

'जेमनु माहात्म्य ज्ञान होय, अर्थात जे समर्थ होय, आपणे तेने शरणे जइए, केमके ते रक्षण आपी शके. केम बराबरने ?'.

'एटले भगवान ना माहात्म्यज्ञान थी "शरणागति" सिद्ध थाय, एमजने !. तो भगवान मां "स्नेह" होय तो शुं थाय ?'.

'लौकिक मा जेना प्रत्ये स्नेह होय -पुत्र, पति वगेरे, तेने माटे आपणे सर्वस्व न्योच्छावर करी देता होईए छीए, केम खरुने ?'

'वात तो साची छे !'

'अर्थात "स्नेह" ने कारणे आपणे भगवान ने आपणु सर्व काई समर्पण करी दईए !'

'समजाय छे. अने "सेवा" ?'.

'कोइना प्रत्ये आपणने "भक्ति एटले के प्रेम" होय तो तेनी अभिव्यक्ति केवी रीते करीये ?'.

"सेवा द्वारा ज तो !' एटले भक्ति अने सेवा एकबीजा साथे संकळायेला छे. अद्भुत !. परंतु थोड़ा विस्तार थी कहो'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * "पुष्टि स्वाध्याय" (७४) *
## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ३१. "शरणागति"

*************

"शरणागति" नुं तात्पर्य शुं छे ?'

"शरण" शब्द ना बे अर्थ थाय, १.घर, २.रक्षण करनार.'

'शुं "आश्रय" शब्द नो पण ते ज अर्थ छे ?'

'हां, एक - आश्रय अर्थात शरण आपनार, रक्षा करनार, अने बीजो - आश्रय लेवानी क्रीया'. कोई समर्थ नुं शरण स्वीकारवाथी आपणे निर्भय बनी जइये छीए, कारण के आपणु रक्षण करवानुं दायित्व , आपणे जेनो आश्रय करीए तेनुं थई जाय छे.'

'कोई उदाहरण थी समजावशो ?'

'गीता मा अर्जुन ना विषाद ने दूर करवा भगवाने कर्म-ज्ञान-भक्ति ना विभिन्न विषयों समझाववा छतां तेनो संशय दूर न थयो त्यारे भगवाने आज्ञा करी के बधी वात छोड़ी मारे शरणे आवी जा, हुं तने बधा पापो मा थी मुक्त कराविश.'

'एटले युद्धमां संहारना निमित्त बनवाथी लागनार संभावित पापोमाथी निवृत्त करवा भगवाने पोतानी शरणागति स्वीकारवानी अर्जुनने आज्ञा करी ?'.

'हां भगवान सर्व समर्थ, कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथा कर्तुम छे. तेथी तेमनो आश्रय करवाथी कोई प्रकार नो भय रहेतो नथी.'

"पुष्टिमार्ग" मां शरणागति नुं शा माटे महत्त्व छे ?'.

'पुष्टिमार्ग भगवद कृपा थी भगवद प्राप्तिनो मार्ग छे. ते जीवना साधन पर अवलंबित नथी, एटलेके "निस्साधनता" नो मार्ग छे. ज्यारे आपणा साधन कारगत न निवड़े तो मात्र भगवान नी शरणागति ज उपाय होइ शके !. भगवद आश्रय स्वीकारिए तो भगवान पोताना अनुग्रह थी जीव नो उद्धार करे'.

'साचु छे, लौकिकमां पण आपण ने आपणा साधन पर अभिमान होय तो शा माटे कोई मदद करे !,ते समजी शकाय छे'.

'तेथीज श्रीमहाप्रभुजी कृष्णाश्रय ग्रन्थ मां कहे छे के कलिकाल मां भगवद प्राप्तिना अन्य सर्वे कारगत निवड़े तेम रहया नथी. तदर्थ एक मात्र श्री कृष्ण नो आश्रय करवो जोइए. तेवीज आज्ञा आपे विवेकधैर्याश्रय ग्रन्थ मा पण करतां कह्यु छे - "सर्वथा शरणं हरि:".

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * "पुष्टि स्वाध्याय" (७५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(आध्यात्मिक चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""""”"""""”""

### ३१. (चालु) "शरणागति"

********************

चालु........

"पुष्टिमार्ग" तो "भक्तिमार्ग" छे, तो शुं "शरणागति" तेनो विकल्प छे ?'.

'भक्ति नुं एक अंग "भगवान नुं माहात्म्य ज्ञान" छे, जे जाणीए तो भगवान नी शरणागति, तेमनो आश्रय सिद्ध थाय, अर्थात शरणागति ने भक्ति नो ""अनुकल्प" कही शकाय, एटलेके ते भक्तिनु ज अंग छे. शरणागति विना भक्ति संभवे नहीं.

'अर्थात, शरणागति "विकल्प" नथी !'.

'ना, "शरणागति" विकल्प पण छे. तेथी तेने "प्रथक शरण मार्ग" कह्यो छे. श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे - "कलियुगमा भक्ति आदि मार्गो दुस्साध्य छे त्यांरे मात्र भगवान नुं शरण स्वीकारी लेवाथी पण जीव नो उद्धार थई शके छे.'

'शुं तेने माटे कोई दीक्षा लेवानी आवश्यकता हौय छे ?'.

'हा, तेने माटे पुष्टिमार्ग मां श्रीआचार्य पासेथी अष्टाक्षर नाम मन्त्र "श्रीकृष्ण शरणं मम" नी दीक्षा लेवामां आवे छे, जेना सतत उच्चारण नी आज्ञा श्रीवल्लभाचार्यजीए करी छे.'

'शुं "शरणागति" ना कोई नियम छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजीए शरणागति ना छ अंग बताव्या छे -

१. प्रभूने जे अनुकूल होय तेम करवानो संकल्प लेवो.
२. जे प्रभूने प्रतिकूल होय तेवी बाबतो नो त्याग करवो.
३. प्रभु जे करशे ते योग्यज करशे तेवो अटल विश्वास राखवो.
४. प्रभूने पोताना स्वामी मानवा.
५. प्रभूने पोताना आत्मा सहित सर्वस्व नुं समर्पण करवुं
६. दैन्यभाव राखवो. प्रभूने स्वामी मानी "हुं दास छुं" एवो द्रढ भाव केळववाथी दीनता आवे.

आवा छ प्रकारनी भाव-अभिव्यक्ति द्वारा शरणागति सिद्ध थाय.

'शरणागत जीवना कर्त्तव्य कया छे ?'

'श्रीवल्लभाचार्यजीए आश्रय सिद्ध करवा मारे मुख्य चार कर्तव्यों नो निर्देश जर्यो छे -

१. मन अने वाणी थी निरंत्तर शरण भावना करवी.
२. कायिक-वाचिक-मानसिक रुपमां अन्याश्रय नो त्याग करवो.
३. प्रभु ऊपर संपूर्ण विश्वास राखवो.

४. आपणा सुकृत-दुष्कृत मुजब जे सुख-दुःख प्राप्त थाय तेनो भगवद शरणागति पूर्वक ममतारहित उपभोग करवो.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* पुष्टि स्वाध्याय" (७६) *

"जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

## ३२. "समर्पण"

***********

'आपे कह्यु के "स्नेह ने कारणे आपणे समर्पण करी दईए". तेनाथी शुं तात्पर्य छे ?'.

'आपणे आपणा संतानों ने, परिणित स्त्री पोताना पतिने पोतानु सर्वस्व
आपी देवा माटे तत्पर होय छे, खरुने ?'

'हा, ए वात साची छे, कारणके आपणे तेमने प्रेम करतां होईए छीए !'.

'तेवीज रीते जो आपणो भगवान प्रत्ये साचो स्नेह होय तो आपणे प्रभु ने आपणु सर्वस्व समर्पित करी देवूं जोइए !'.

'अर्थात शुं आपणे आपणु सर्व कांई भगवान ने दान करी देवूं जोइए ?'.

'ना दान करी देवा नी वात नथी. "समर्पण" करवा नी वात छे'.

"दान" अने "समर्पण" मां भेद शुं छे ?'

'ज्यारे आपणे कोईने "दान" आपीए त्यांरे आपेली वस्तु पर थी आपणो मालिकी भाव उठावी लई, दान लेनार ने तेनो मालिक बनावीए छीए. ते पछी, आपणे तेनो उपयोग करी शकता नथी. जो आपणे भगवान ने "दान" तरीके द्रव्य के कोई वस्तु आपी दीधी होय, तो ते "देव द्रव्य" थयु कहेवाय, अने तेनो उपयोग करवानो शास्त्र मां निषिद्ध मानवा मां आव्यो छे.

'तो "समर्पण" मा तेवो प्रभूने आपी देवानो आशय नथी होतो?'.

'ना. वास्तवमां आपणे जेने आपणु मानता होईए छीए - धन-दौलत, धरबार, अरे आत्मा सहित, कांइ ज आपणु नथी. परंतु, अज्ञान वश आपणे आपणु मानी बेठा होईए छीए. "समर्पण" द्वारा, ते बधु भगवान नुं ज छे, तेम आपणे प्रभूने तेमने जणावीए छीए, एटलेके निवेदन करीए छीए.'

'अर्थात, आपणु सर्वस्व प्रभुनुं छे, तेम आपणे प्रभु आगळ कबुलात करीए छीए !'.

'बिलकुल. जेवीरीते परिणित स्त्री पोताना पतिने समर्पित थया पछी पोताना सर्वस्व नो उपभोग पोताना पति साथे करे छे. तेनी स्वतन्त्र मालिकी नुं कांई रही जतुं नथी'.

'अर्थात, प्रभूने "समर्पण" करवानुं तात्पर्य छे - पोतानी मिलकत, घरबार इत्यादि प्रभुनुं छे तेम जाणावी, तेनो उपयोग आपणे स्वतंत्रपणे करी शकिए नहीं, परंतु तेनो उपयोग मात्र प्रभु माटे ज करी शकाय !'.

'बराबर समज्या !'.

चालु........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय (७७) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

**************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

---

### ३२. (चालु) "समर्पण"

*****************

'तो पछी आपणो निर्वाह केवीरिते चाली शके ?'

'ज्यारे आपणे आपणा सर्वस्व ना "समर्पण" करवा नुं प्रभूने "निवेदन" करी तेमना दास होवानी कबुलात करीए तो वास्तव मा ते सर्व वस्तुओं नो प्रभु माटे "विनियोग" पण करवो, अर्थात, सर्व पदार्थो जेनुं आपणे समर्पण करीए, ते तेमना उपयोग मा लेवी जरुरी छे. प्रभु ने उपयोग मा आवेला पदार्थ तेमनो "प्रसाद" कहेवाय.'

'शुं तेमना प्रसाद रुपे आपणे तेनो उपयोग करी शकिए ?'

'हा, जेवीरीते लोक-व्यवहार मां स्वामी-सेवक नो संबंध नभे छे, तेम आपणे प्रभुना उपयोगमां आवेला पदार्थो थी आपणो निर्वाह करी शकिए.'

'शुं प्रत्येक वस्तुओ नुं समर्पण थई शके ?'

'हां, केटलाक पदार्थो नु प्रत्यक्ष समर्पण थाय, ज्यारे केटलीक वस्तुओं नुं परोक्ष मां समर्पण करवा मा आवे. "सर्वस्व" ना समर्पण मा स्त्री-पुत्रादि परिवार ना समर्पण नो पण समावेश थाय छे. आपणा परिवार जनोने भगवद-सेवा मां जोडवाथी तमनो विनियोग थयो कहेवाय. प्रत्येक पदार्थ के व्यक्तिने भगवद-सेवा ना निमित्ते योजवाथी तेमनुं "समर्पण" सार्थक थाय.

'एटलेके "समर्पित जीवन" ए पुष्टिभक्ति नुं अनिवार्य अंग छे !'

'बिलकुल. श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के शरणागति स्वीकार्या पछी आपणे आलोक संबंधी तेमज परलोक संबंधी बधुज भगवान ने समर्पित करी, तेमना दास थईने कृष्ण नी सेवा मा जीवन व्यतित करवुं जोइए. तो ज पुष्टिफल नी प्राप्ति थई शके'.

'तो शुं "शरणागति" नी दीक्षा नी माफक "समर्पण" नी पण दीक्षा होय छे ?'

'खूब सरस सवाल कर्यो !. "समर्पण" माटे पुष्टिमार्ग मां "ब्रह्मसंबंध" करवानी प्रक्रिया छे, जे अति महत्व नी छे'.

'शुं छे "ब्रह्मसंबंध" नी दीक्षा ? विस्तारथी समजावो'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (७८) *
## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय द्दष्टिकोण)

### 33. "ब्रह्मसंबंध दीक्षा"

******************

"ब्रह्मसंबंध" थी शुं तात्पर्य छे?'.

"ब्रह्मसंबंध" नो सादो अर्थ थाय - "भगवान साथे सम्बन्ध बांधवो - जोडावु". आपणे जाणिये छिए के जीव भगवान नो अंश छे. हजारो वर्षो थी ते भगवान थी छूटो पडेलो छे. ते अविद्या ने कारणे पोतांना साचा स्वरूप ने भूली गयो छे, अने जन्म-मरण ना चकरावा मां फसाएलो छे. तेवां दैवी जीवो नो उद्धार करवा माटे श्रीवल्लभाचर्यजी नुं प्राकट्य थयेलूं छे'.

'तो जीव केवीरीते भगवान साथे पुनः जोडाई शके ?.'

'एज वातनुं चिंतन स्वयं श्रीवल्लभाचार्यजी ने पण थयेलुं. कारण के प्रभु तो निर्दोष छे, ज्यारे जीव अनेक प्रकारना दोषयुक्त बनेलो छे. तेथी बन्ने नो संयोग केम थई शके, ते तेमनी पण मुझवण हती!'.

'कहेवाय छे के एक समये आवा ज चिंतन मां तेओ गोकुल मां बिराजता हतां त्यारे मध्यरात्रि ए साक्षात भगवाने प्रकट थई तेमने एक मन्त्र आपी आज्ञा करी के जे जीवने तेओ ए मन्त्र द्वारा दीक्षित करशे, तेना दोषो तेने बाधारूप बनशे नहीं, अने भगवान तेनो अंगीकार करशे.'

'शुं छे ते मन्त्र?'.

'ते मन्त्र द्वारा जीव भगवान ने प्रतिज्ञापूर्वक निवेदन करे छे के - "भगवान कृष्ण थी विखुटो थयाने हजारो वर्षनो समय विती गयो होवाना कारणे, तेमना वियोगना तापः क्लेश नो आनंद जेने तिरोहित थयो छे तेवो हुं जीव, भगवान कृष्ण (श्रीगोपीजनवल्लभ ने) मारो देह, इंद्रिय, प्राण, अंतःकरण, तेना धर्मो, स्त्री, घर पुत्र, कुटुंब, धन, आलोक - परलोक, आत्मा सहित समर्पण करुं छु, हुं दास छुं, हे कृष्ण हुं तमारो छुं".

'शुं आ मन्त्र भगवान पासे स्वयं बोलवानो होय छे ?'

'ना, आ एक प्रकार नी दीक्षा छे, जे आपणा गुरु श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा लेवानी होय छे, कारणके ते दीक्षा आपवानो अधिकार भगवाने श्रीवल्लभाचार्यजी नेआपेलो छे. तेथी तेओ ज पोतांना शिष्यो ने आ दीक्षा आपी शके'.

'परंतु वर्तमान मां ज्यारे श्रीवल्लभाचर्यजी प्रत्यक्ष बिराजता नथी, तो आ दीक्षा केवीरीते प्राप्त थाय ?'

'श्रीवल्लभाचर्यजी साक्षात भगवान ना मुखार्विन्द ना अवतार छे, तेथी तेओ कालातीत छे. वर्त्तमान मां पण तेओ ज पोतांना वंशजो द्वारा ब्रह्मसंबंध करावे छे'.

क्रमशः ............

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (७९) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३३(चालु) "ब्रह्मसंबंध दीक्षा"

***********************

'एटले के श्रीवल्लभाचर्यजी ज ब्रह्मसंबंध नी दीक्षा लेनार सौंना गुरु छे ?'

'बिलकुल. तेथीज ब्रह्मसंबंध कारावनार वल्लभवंशज आचार्यने "गुरुद्वार" कहेवाय छे. माटे तेमनामां श्रीवल्लभाचार्यजी जेवो गुरु भाव राखवो जोइए'

'समजायु. परंतु आने "समर्पण नी दीक्षा" शाथी कहेवाय छे ?'

'कारणके आ दीक्षा आपती वखते दीक्षादाता दीक्षार्थीने हाथमां तुलसीदल आपीने संकल्प पूर्वक भगवान समक्ष मन्त्र बोलावे छे, जेमां दीक्षार्थी, जेने पोतानु मानतो होय छे, ते सर्वस्व पदार्थो नुं पोताना आत्मा सहित भगवान श्रीकृष्णने समर्पण करवानुं निवेदन करी पोते तेमना दास होवानी कबुलात करे छे.'

'अने पोते कृष्ण नो छे तेम स्वीकारे छे, अर्थात कृष्णने ते पोतानो स्वामी होवानुं कबूले छे.'

'बराबर समज्या. तेथी ज ब्रह्मसंबंध दीक्षा द्वारा आपणे श्रीकृष्ण साथे पति-पत्नी वत् संबंध थी जोडाईए छीए. तेथी श्रीकृष्ण नी सेवा करवी ते आपणु सहज कर्तव्य बने छे'.

'परंतु जीव तो दोष युक्त छे !'

'हां साचू छे, जीव पांच प्रकारना दोषो थी ग्रसित छे - .सहज, तेमज देश, काल,संयोग अने स्पर्श द्वारा उत्पन्न थनारा दोषो जीवने लागेला होय छे. परंतु श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के ब्रह्मसंबंध करवाथी आ दोषो जीवोने प्रभुनी सेवा करवा मां बाधारूप बनता नथी'.

'तो शुं पुनः आवा दोषो लागी न शके ?'

'तेने माटे ज श्रीवल्लभाचार्यजीए जेनुं आपणे समर्पण कर्यु होय तेनो प्रभूने "विनियोग" करावावा नी अने "असमर्पित" पदार्थो नो, एटले के जेनो विनियोग न थयो होय तेवी वस्तुओ नो त्याग करवानी आज्ञा करी छे.'

"विनियोग" नुं शुं तात्पर्य छे".

"विनियोग" नो अर्थ छे, पदार्थो ने प्रत्यक्ष के परोक्ष रीते प्रभुना उपयोग मा लेवा. ब्रह्मसम्बंध करती वखते आपणे "आपणु सर्वकांई समर्पण करीए छीए" तेम प्रभूने "निवेदन" मात्र ज करीए छीए अर्थात जणावीए छीए, परंतु वास्तव मा ते सर्वे पदार्थो नो उपयोग प्रभु माटे करीए त्यारे ज समर्पण सार्थक थाय. तेने "विनियोग" कहेवाय.'

'शुं प्रभूने विनियोग करेला पदार्थो नो आपणे उपयोग करी शकिए ?'

'हा, आपणे प्रभूने विनियोग कराव्या पछी प्रत्येक पदार्थनो उपयोग तेमना प्रसाद तरीके आपणा निर्वाह माटे करी शकिये, परंतु आपणे पहेलां वापरेला पदार्थो "अर्धभुक्त" कहेवाय, जेनो उपयोग प्रभु माटे न

करी शकाय, तेनी सावधानी राखवी जोइए.'

'समजाय छे, कारणके प्रभु आपणा स्वामी छे !'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८०) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

## (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३४. "सेवा"

*********

'पुष्टिमार्ग नो चोथो आधार स्तंभ "सेवा" बताव्यो छे, तेनु तात्पर्य शुं ?'.

'ब्रह्मसम्बंध करती वेळा आपणे कृष्ण ना दास होवानु स्वीकारिए छीए, तो दास नुं कर्तव्य शुं होय ?.'

'दासनो धर्म पोताना स्वामी नी सेवा करवानो ज होय !'

'तेथी ज श्रीवल्लभाचर्यजी कहे छे "कृष्ण सेवा सदा कार्या" ए मारो सिद्धान्त छे'.

'एटले के कृष्ण नी सेवा करवी ते वैष्णव नुं सहज कर्तव्य छे,एमज ने ?'

'बिलकूल. आपणे भगवान ना "अंश" छीए, भगवान "अंशी" छे. अंशी नी सेवा करवी ते अंश नो सहज धर्म होय. तेथी ज श्रीवल्लभाचर्यजी "धर्म पुरुषार्थ" समजावता कहे छे - "सर्वदा सर्वभावथी व्रजना अधिपति श्रीकृष्ण नी सेवा करवी एज मात्र जीव नो धर्म अर्थात कर्तव्य छे'.

"भक्ति" अने "सेवा" मां भेद शुं छे ?'.

"भक्ति" एटले भगवान नुं माहात्म्य जाणीने तेमना प्रत्ये "सुदृढ़ सर्वतोधिक् स्नेह". जो कोइना प्रत्ये प्रेम होय तो तेनी अभिव्यक्ति केवीरिते थाय ?'.

'तेनी सेवा - सुश्रुषा द्वारा ज स्तो !'

'माटे भगवान मां आपणा प्रेम नी अभिव्यक्ति पण निस्वार्थ भाव थी तेमनी सेवा द्वारा ज थाय'.

'परंतु आपणे भगवान नी सेवा क़ेवीरीते करी शकिए , तेओ तो व्यापक छे ?'.

'तेने माटे आपणे श्रीकृष्ण ना श्रीनाथजी स्वरूपना चित्रजी अथवा बालकृष्ण (लालन) नी मूर्तिने श्रीवल्लभकुल आचार्य पासे पुष्ट करावी "सेव्य-स्वरूप" तरीके आपणा घरमा पधराववा जोइए, जेथी आपणो तेमनी साथे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित थाय'.

'पुष्ट करावावा नुं तात्पर्य शुं ?'

'ज्यारे श्रीवल्लभकुल आचार्य चित्र के मूर्तिने विधिपूर्वक वेद-भागवतादिना निर्धारित श्लोको द्वारा अभिमंत्रित करे छे त्यारे तेमां "पुरुषोत्तम" नो आविर्भाव थाय छे. तेथी तेने "स्वरूप" कहेवाय छे. तेमनी "श्रीकृष्ण" ना भावथी सेवा करवाथी तेओ साक्षात परब्रह्म स्वरूपथी आपणी सेवानो अंगीकार करे छे अने क्यारेक अनुभाव पण आपे छे.

चालु ..........
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८१) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३४ (चालु) "सेवा"

*************

'श्रीवल्लभाचर्यजी कृष्णसेवा ने पोतानो "सिद्धान्त" शा माटे कहे छे?'.

'तेमां गूढ आशय रहेलो छे'.

'ज़रा विस्तार थी समजावशो ?'.

'आपणे ब्रह्मसंबंध करती वखते आपणा सर्वस्व नु भगवान श्रीकृष्ण ने समर्पण करीए छीए, अर्थात आपणे पोते, एटले के आपणी "अहंता" अने जेने आपणे आपणु मानता हता एटलेके, जेमां आपणी "ममता" रहेली छे ते सर्वे पदार्थो प्रभुना छे, प्रभूने माटे छे, तेम आपणे संकल्प पूर्वक निवेदन करीए छीए. तेथी आपणा "समर्पण" ने सार्थक करवा श्रीवल्लभाचार्यजी "तनु-वित्तजा" सेवा करवांनी आज्ञा करे छे.'

"तनु-वित्तजा" सेवा थी शुं तात्पर्य छे ?'

"तनु" एटले आपणा तन थी अने "वित्त" एटले आपणे जे कांई पोतानुं मानिये छीए ते द्रव्यादि सर्वे पदार्थो थी श्रीकृष्ण नी सेवा करवी जोइए, अर्थात बाधा रूप बनती आपणी "अहंता - ममता" ने भगवान साथे जोडवानुं प्रयोजन सेवा द्वारा छे.'

'ओह, एटले जे"अहंता-ममता" ना कारणे आपणो "संसार" उत्पन्न थाय छे, ते नष्ट थई जाय !'

'बराबर समज्या. श्रीवल्लभाचार्यजीए "अहंता-ममता" ने छोडवानो नही, परंतु भगवान साथे जोडवानो उपदेश आप्यो छे.'

'समजायु. एटले के मात्र आपणा देह थीज अथवा धन थी ज करीए ते सेवा न गणाय ?'

'ना, कारण के तेनाथी सेवा नो हेतु सधाय नही. "कृष्णसेवा सदा कार्या" कहीने श्रीवल्लभाचार्यजी सेवा ने पुष्टि-जीवन नी एक विशिष्ट प्रवृत्ति बनाववानु समजावी रह्या छे. आपणी प्रत्येक प्रवृत्ति ना केंद्रस्थाने आपणा सेव्य श्रीकृष्ण होवा जोइए, जेथी आपणु चित्त धीमे धीमे प्रभु साथे जोडाई जाय'

'एटले शुं "तनु-वित्तजा सेवा" कृष्ण मा चित्त जोडवा नुं साधन छे ?'

'बिलकुल, तेथी ज "तनु-वित्तजा" सेवा "साधन रूपा" सेवा छे'.

'तो पछी सेवानुं फल शुं?.

'ज्यारे आपणु चित्त कृष्ण मा परोवाई जाय, तेने "मानसी सेवा" कहेवाय. ते अवस्था ज परम फल रुप छे. तेथी श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे "चेतस्तत् प्रवणं सेवा मानसी सा परामता".

'एटले शुं तनु-वित्तजा साधनरूप सेवाज फलरुप मानसी सेवा मा परिणमे छे?'.

हां, तेथी ज पुष्टिमार्ग मां "साधन" ज "फल" बने छे, एटले के "साधन एज फल छे" कृष्णसेवा ए स्वयं ज "फल" छे.

"ओह, हवे समजायु सेवा नुं गूढ रहस्य !'

(चालु)..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८२) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३४. (चालु) "सेवा"

***************

'श्रीकृष्ण नी ज सेवा नुं रहस्य शुं छे ?'

'भागवत कहे छे -"कृष्णस्तु भगवान स्वयं". श्रीकृष्ण ज भगवान छे, बीजा अवतारो भगवान नी विभूतिओ छे, जेमां गणितानंद छे, परंतु श्रीकृष्ण पूर्णानंद छे, परात्पर परब्रह्म छे. तेथी श्रीवल्लभाचार्यजीए ते सर्वोत्कृष्ठ तत्त्वनी सेवानो आदेश आप्यो छे.'

'परंतु श्रीकृष्ण ना पण अनेक स्वरूपो छे, तो कया स्वरूप नी सेवा करवी जोइए ?'

'श्रीकृष्ण नी व्रजभक्तो साथे करेली विविध निर्दोष लीलाओनुं वर्णन भागवत मा प्राप्त छे. तेमानी कोइपण व्रजलीला ना स्वरूप नी सेवा करी शकाय. तदर्थ, श्रीनाथजी, श्रीनवनितप्रियाजी, श्रीमथुरेशजी, श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीद्वारकाधीशजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीगोकुलचंद्रमाजी, श्रीबालकृष्णलालजी, श्रीमदनमोहनजी आदि विविध लीला ना स्वरूपो छे, जेमाना कोई एक स्वरुपने पुष्ट करावी सेवा करवी जोइए'.

'पुष्टिमार्ग मां "सेवा" नी प्रक्रिया केवी होय छे ?'

'मर्यादामार्ग मां भगवान ना ऐश्वर्य नुं महत्त्व होय छे जेथी तेमां दान, अर्चन, नैवेद्य आदि पूजा ना अंगों नी विशेषता होय छे, ज्यारे पुष्टिमार्ग स्नेहप्रधान - भाव प्रधान छे. श्रीकृष्ण आपणा घरने नंदालय मानी बिराजे छे. तेमने आपणा परिवार ना महत्वपूर्ण सदस्य तरीके स्वीकारी जे रीते श्रीयशोदाजी तथा व्रजभक्तो श्रीकृष्ण नुं लालन-पालन करतां हतां तेम करवुं जोइए. माटे कह्यु छे - "सेवा रीत प्रीत वृजजनकी".

'एटले के जे रीते एक बालक ने लाड लाडाविये ते प्रमाणे !'.

'हा, माटे कहे छे - "यथा देहे तथा देवे".जे रीते मनुष्य ने भुख-तरस, शर्दी-गर्मी आदि संवेदनाओं होय छे, तेम आपणा सेव्य स्वरुपने होय छे तेम विचारी सवारे प्रभु जागे त्यारथी रात्रे पोढे त्यां सूधी नी प्रत्येक क्रिया ऋतु अनुसार "सेव्य" ने सुख थाय ते प्रमाणे करवी जोइए'.

'ओह, तेथी तेने पूजा न कहेता "भक्तिपूर्वक नी सेवा"कही छे !'.

'साचु समज्या. शरुआत नी क्रियात्मक पण "तनु-वित्तजा सेवा" करवा मां आवे तो आदत पड़ी जतां

आपणा सेव्य-स्वरूप प्रत्ये प्रेम उत्पन्न थाय छे, जे उत्तरोत्तर आसक्ति अने व्यसन दशा ने प्राप्त करे छे. ते अवस्था मा आपणे प्रभु विना रही न शकिये तेवी स्थिति उत्पन्न थाय, कारणके आपणु चित्त प्रभु मा जोडाई गयेलूं होय छे'.

'शुं तेने "पुष्टिमार्गीय फल" कहे छे ?'.

'हा, तेने "निरोध" अथवा "सर्वात्म भाव कहे छे'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## ∗ पुष्टि स्वाध्याय" (८३) ∗

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३५. "सर्वात्मभाव"

***************

"सर्वात्मभाव" कोने कहेवाय ?'

"सर्वात्मभाव" ए भक्तने व्यसन दशा अथवा मानसी सिद्ध थया पछी नी प्राप्त थनारी स्नेहात्मिका भक्ति नी विशिष्ठ अवस्था छे'.

"सर्वात्मभाव" नुं तात्पर्य शुं छे?'.

"सर्वात्मभाव" मां त्रण शब्दो छे. "सर्व" अर्थात् देह, ईन्द्रियो, प्राण, अंतःकरण, अने ते सर्वनी वृत्तिओ ; "आत्मा" भगवान ना अर्थमां, अने "भाव" एटले प्रेम, स्नेह, रति अथवा भक्ति. ए त्रणेय ने जोडीने अर्थ थाय के भगवद् सेवा तेमज कथा थी उद्‌भवती प्रबल भगवदासक्तिने कारणे ते सर्व नी वृत्तिओ द्‌वारा बहार तेमज हृदयमां प्रकट भगवानना स्वरुपानंदनो अनुभव थवा लागे छे. तेने "सर्वात्मभाव" कहेवाय छे'.

'शुं आ अवस्थामां भक्तने सर्वत्र भगवद् रुप नो अनुभव थाय छे ?'.

'हा, भक्तने "बधु ज कृष्णमय अनुभवाय छे. जगतमां तिरोहित थयेला ब्रह्मना चित् अने आनंद गुणधर्मो भक्त नी सामे प्रकट थाय छे जेथी तेने जगतना पदार्थो सच्चिदानंदात्मक - ब्रह्मात्मक देखावा लागे छे'.

'शुं ग्यानी ने थतो "अहं ब्रह्मास्मि" नो अनुभव पण "सर्वात्म भाव" कहेवाय,कारण के तेने पण सर्वत्र बधुं ज ब्रह्मरुप देखाय छे, तेम कहेवाय छे !'.

'ना, पुष्टिमार्गीय सर्वात्मभाव अने ग्यानमार्गीय अथवा मर्यादामार्गीय सर्वात्मभाव मां तफावत छे. मर्यादामार्गीय सर्वात्मभाव मां केवल आत्माथी अने ते पण "ब्रह्मानंद" नी ज अनुभूति थती होय.छे, ज्यारे पुष्टिमार्गीय सर्वात्मभाव मां बधी ईन्द्रियो, अंतःकरण तथा आत्माथी पण "भजनानंद" नी अनुभूति थाय छे. तेथी ते श्रेष्ठ गणाय छे.

'शुं सर्वात्मभाव भक्तना भावानुसार अनुभवाय छे ?'.

'हा, अलग अलग भक्तो नो भगवान मां भिन्न भिन्न भाव होय छे. कोईक नो दास्य के सख्य

अथवा वात्सल्य भाव होय छे. कोईक नो माधुर्य भाव पण होई शके छे. भक्तो जेवा भावथी भगवान मां आसक्त होय तेवा प्रकारना सर्वात्मभाव नी अनुभूति ते भक्तने थती होय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८४) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

## ३६.'निरोध"

**********

"निरोध" शब्द नुं तात्पर्य शुं छे ?'

"निरोध" नो अर्थ.थाय - "संपुर्णपणे रुकावट". ज्यारे भक्त जड-जीवात्मक जगतने भूली जई पूर्णपणे भगवानमां तन्मय थई जाय, त्यारे भक्तनो भगवान मां "निरोध" थयो तेम कहेवाय. माटे निरोध नी व्याख्या छे - "प्रपंच (जगत) नी विस्मृतिपूर्वक भगवदासक्ति".

'योगमार्ग मां पण निरोध बतावववामां आव्यो छे !'

'हा, परंतु तेमां केवल चित्तवृत्ति ना निरोध नी वात कहेवामां आवी छे. पुष्टिभक्तिमार्गमां तो देह, ईन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार अने आत्मा सहित सर्व आत्मिय वस्तूओ ने प्रभुमां जोडवानी वात छे.

'शुं भगवान नो पण भक्त मां निरोध थई शके छे?'

'हा, गीताजी मां भगवान कहे छे के "जे भक्तो मने अनन्य भावथी भजे छे, तेओ मारामां छे अने हुं तेओमां छुं". अर्थात् भगवान पण भक्तमां निरुद्ध थाय छे'.

'भगवानमां निरोध केवीरीते थई शके ?'.

'भागवतजी नो दशम स्कंध ने "निरोध लीला" कही छे. तेमां वर्णवेली भगवाननी विभिन्न लीलाओ नो आशय व्रजभक्तो नो निरोध करवानो हतो. अवताकालमां भगवान पोताना प्रकट स्वरुपथी पोतानी लीलाओ द्वारा भक्तने पोतानामां आसक्त बनावी देता होय छे. अनवतारकालमां स्वगृहमां बिराजता सेव्यस्वरुपनी व्रजभक्तो ना भावथी भगवद् लीलाना अनुसंधान पूर्वक भगवद् सेवा निरोध नुं कारण बनी शके छे.'

"निरोध" नुं प्रयोजन शुं छे ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजीए "सेवाफल" ग्रंथमां जे विभिन्न फलनी प्राप्ति बतावी छे, ते ज निरोध नुं प्रयोजन मानवामां आवे छे'.

'भक्त पर निरोध नी शुं असर थाय छे ?'.

'भगवद्-व्यसन ए ज भक्त पर थती निरोध नी असर छे. जे भक्त भगवानमां निरुद्ध थई जाय छे एटले क प्रपंचने जईने भगवदासक्त थई जाय छे, तेने भगवान ना संयोग अने वियोगनी अनुभूति तीव्रताथी थवा लागे छे'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८५) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३७. पुष्टि फल

************

"पुष्टिजीव नी कामना शुं होय ?'.

"भगवानेव फलम्", श्रीवल्लभाचार्यजी आग्या करे छे.'

'तेनुं शुं तात्पर्य '.

'पुष्टि भक्त ने भगवान सिवाय अन्य कोईपण वस्तुनी कामना होई शकती नथी. ते मात्र भगवान ने मेलववा ईच्छतो होय छे'.

'अर्थात् शुं पुष्टिमार्गमां भगवान ज फल छे?'.

'हा'.

'ते कामना नी पूर्ति कई रीते थाय ?'.

'भक्तो नी मनोकामना पूर्ण करवा भगवान बे प्रकारे प्रकट थतां होय छे - १. स्वरुपथी, जेने "बाह्य संयोग" कहे छे, अने २. गुण थी, जेने "आंतर् संयोग" कहेवाय छे.'

'जरा विस्तार थी समजावो'.

'ज्यारे दर्शन, संवाद, स्पर्श, क्रीडा आदि थई शके तेवीरीते भगवान भक्तना वच्चे प्रकट थाय त्यारे तेने भगवाननुं "स्वरुप थी प्राकट्य" कहेवाय, अने ज्यारे भगवान ना गुणगान द्वारा तेओ भक्तना ह्रदय मां पधारे त्यारे भगवान नुं "गुणथी प्राकट्य" थयुं कहेवाय'.

'भगवान नी भक्ति करवाथी भक्त ने आ फल कई रीते प्राप्त थाय छे ?'.

'भक्ति शब्द "सेवा" ना अर्थ मां छे. श्रीवल्लभाचार्यजीए "सेवाफल" ग्रंथमां सेवाना त्रण फलो नु निरुपण कर्यु छे. १. अलौकिक सामर्थ्य, २. सायुज्य अने ३. सेवोपयोगी देह'.

"अलौकिक सामर्थ्य" एटले शुं ?'.

'आ फल पुष्टिजीव ने आ लोक मां ज प्राप्त थाय छे अर्थात् तेनामां भगवान ना कोई विशिष्ट गुण प्रकट थाय छे. आने पुष्टिभक्त नी "जीवन्मुक्ति" कही शकाय'.

'अने "सायुज्य" एटले ?'.

'भगवान श्रीकृष्णना स्वरुप मां विलय पामवो तेने "सायुज्य" कहेवाय. आ पुष्टिजीव नी विदेह मुक्ति छे, कारणके के आमां जीवात्मानो परमात्मा मां विलय थतां पूर्वे तेना देह- ईन्द्रियादि नो विलय पंचमहाभूत मां थई जाय छे'.

'मर्यादाभक्ति नु एक फल पण सायुज्य बताव्यु हतुं. शुं आ तेवुं ज फल छे ?'

'ना, तेमां जीवात्मा "अक्षरब्रह्म" मां लीन थई ज्यारे आ सायुज्य मां जीवात्मा "पुरुषोत्तम" मां विलय पामतो होवाथी भगवान ईच्छे त्यारे पूनः तेने बहार प्रकट करी पोतानी लीला नो अनुभव करावे छे.'

"सेवोपयोगी देह नी प्राप्ति थी तात्पर्य शुं छे ?'.

'पुष्टिजीव ना देहावसान पछी तेने भगवानना वैकुंठ आदि दिव्य लोकोमां प्रभुसेवा करवा योग्त्र नूतन शरीरनी प्राप्ति थाय छे, ते आ सेवानुं त्रीजु फल छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

## * पुष्टि स्वाध्याय" (८६) *

## "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

### (अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३८. "अनन्यता - अन्याश्रय"

***********************

'पुष्टिमार्ग मां "अनन्यता" नुं महत्व शाथी छे ?'

'ब्रह्मसंबंध करती वखते आपणे भगवान श्रीकृष्णने बे वचन आपीए छीए - "हुं तमारो दास छुं" अने "हुं तमारो छुं". प्रथम वचनथी आपणे श्रीकृष्ण नी "शरणागति" स्वीकारीए छीए अने बीजा वचनथी तेमने समर्पित होवानी कबुलात करीए छीए. ते बन्ने प्रक्रिया कोई एक प्रत्ये ज निष्ठापूर्वक होवी जरुरी छे.'.

'अर्थात् केवल श्रीकृष्ण प्रत्ये ज आपणी निष्ठा होवी जोईए !'.

'हा, श्रीवल्लभाचार्यजीए मात्र श्रीकृष्ण मां ज "अनन्य भाव" राखवानी आग्या करी छे'.

"अनन्य भाव" थी शुं तात्पर्य छे ?'

'आपणा अंतःकरणमां धारण करेली रुचि ने "भाव" कहेवाय. जो एवो भाव मात्र भगवान श्रीकृष्ण मां ज होय तेने "अनन्य भाव" कहेवाय'. तेवो भाव अन्य देवताओ प्रत्ये के कोई लौकिक वस्तु के विषय प्रत्ये न होवो जोईए, अने कृष्ण सिवाय अन्य कशानी कामना न होवी जोईए'.

'शुं शास्त्रमां आनुं प्रमाण छे ?'

'हा, गीतामां भगवान स्वयं कहे छे - "जेओ अनन्यभावे मारुं चिंतन करतां मारी उपासना करे छे, तेना योग-क्षेम नो भार हुं वहन करुं छुं". गीताना अंतमां पण श्रीकृष्णे अर्जुनने कह्यु छे - "मामेकं शरणं व्रज", अर्थात् एक मात्र तेमनी ज शरणागति स्वीकारवानी आग्या करी छे'.

'एटलेके भक्तिनी दृढता माटे अनन्यता आवश्यक छे !'

'तेथी ज पुष्टिमार्गमां "अन्याश्रय" ने बाधक मानवामां आव्यो छे'.

"अन्याश्रय" कोने कहेवाय ?'

'भगवान श्रीकृष्ण सिवाय अन्य देवनी उपासना करवी, स्वयं चालीने तेमना दर्शने जवुं , तेमनो प्रसाद ग्रहण करवो, के तेमनो आश्रय करवो, तेने "अन्याश्रय" कहेवाय. लोकमां पण कोईना द्वारा लाभ थयो तेम मानवुं ए अन्याश्रय कहेवाय'.

'वैदिक कार्यो मां तो विभिन्न देवोनुं पूजन किया आदि करवामां आवे छे !, तो शुं ते अन्याश्रय कहेवाय ?'.

'ना, जो ते शास्त्रना विधान मुजब नैमित्तिक कर्म करवा माटे मात्र औपचारिक क्रिया रुपे करवामां आवे तो तेने अन्याश्रय कहेवाय नहीं. अन्याश्रय नो अर्थ अनादर नथी. शुभ प्रसंगे कोई देवतानुं आह्वाहन करी, तेमनुं यथोचित सन्मान करवुं, ते अन्याश्रय नथी'.

'अर्थात् जे ते देव नुं फल-प्राप्ति नी अपेक्षाथी पूजनादि करवामां आवे के तेमनो आश्रय करवामां आवे तो ते पूष्टिमार्ग मां बाधक गणाय'.

'बराबर समज्या'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

### * पुष्टि स्वाध्याय" (८७) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

***************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ३९. "पुष्टि - सत्संग "

****************

"सत्संग " नुं शुं महत्व छे ?.'

'सत्संग मनुष्यने दुःसंग थी बचावे छे'.

"दुःसंग" कोने कहेवाय ?'.

"दुःसंग" एटले दुष्ट लोकोनो अथवा दुषित वातावरण नो संग. आपणुं मन क्यारेय विचारो थी मुक्त होतुं नथी. दुःसंग ना कारणे आपणा मनमां काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनेक विकारो उत्पन्न थाय छे. तेथी तेवा संग नो त्याग करवानी सलाह आपवामां आवी छे'.

'दुःसंग नो त्याग केवीरीते थई शके ?'.

'श्रीवल्लभाचार्यजी आग्या करे छे के कोईनाए "संग" नो त्याग करवो जोईए. जो संग छोडी ज न शकाय अने तेना विना न चाले तो मात्र सत्पुरुष नो - भगवदिय नो संग करवो जोईए'.

'दुःसंग नी विपरित असर थी केवीरीते बची शकाय ?'.

'श्रीहरिरायजीए शिक्षापत्रमां समजाव्यु छे के जेम अग्नि उपर जल पडे तो ते ओलवाई जाय छे, तेम दुःसंग ना कारणे आपणो भगवद् भाव नष्ट पामी शके छे. परंतु जो अग्नि उपर पात्र राखवामां आवेलुं होय तो जल अग्निने बुझावी शकतुं नथी, तेम सत्संग रुपी आच्छादन थी आपणा भगवद् भाव ने दुःसंग थी हानी थशे नहीं.'

'कोनो संत्संग करवो जोईए ?'

'श्रीमहाप्रभुजीए पोताना जलभेद ग्रंथमां वक्ताना विविध प्रकारना वक्ताना लक्षणो बताव्या छे. तदनुसार विवेक राखीने साचा भगवदीय नो संग करवो जोईए'.

'एवा भगवदीय न मले तो कोनो संग करवो जोईए ?'.

'एवी स्थितिमां श्रीमहाप्रभुजी तथा पूर्वाचार्योना ग्रंथो नो संग करवो जोईए, अर्थात् मननपूर्वक वांचवा जोईए, कारणके ते तेमनुं वांग्मय स्वरुप छे. तेथी तेमनी वाणी द्वारा आपणने बोध थाय छे. तदुपरांत ८४-२५२ भगवदियोनी वार्तानुं अवगाहन करवाथी श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धातो नी जीवनमां उयोगिता समजाय छे. भगवानने करेला समर्पण नुं स्मरण रहे ते माटे तादृशीजनो साथे निवेदन (ब्रह्मसंबंध) मंत्र नुं स्मरण करवानी आग्या आचार्यश्रीए करी छे'.

'आथी समजाय छे के पुष्टिमार्गमां "सत्संग" एक अनिवार्य अंग छे'.

"बिलकुल. "सत्संग" ए आत्मानुं पोषण करे छे. परंतु सत्सं नुं तात्पर्य मात्र कोई वक्ता द्वारा श्रवण करवुं ज नथी, पण तेमां "भगवद्-चर्चानो आशय छे, कारण जीग्यासापूर्वक चर्चा करवाथी ज सिद्धांतो आत्मसात थई शके छे, अने तेना द्वारा ज आपणो भाव सुदृढ थई शके छे'.

'बराबर समजायु'.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

### * "पुष्टि स्वाध्याय" (८८) *

### "जात साथे वात - अनोखो संवाद"

****************************

(अध्यात्म चिंतन - पुष्टिमार्गीय दृष्टिकोण)

### ४०. "पुष्टि जीवन"

**************

'पुष्टिमार्ग नी विशेषता शुं छे ?'

"पुष्टिमार्ग" ने कोई मार्ग, संप्रदाय अथवा धर्म न कहेतां एक विशिष्ट प्रकारनी जीवन-शैली कहेवुं यथार्थ गणाय'.

'तेनुं शुं कारण ?'.

'कारणके जे प्रकारनी जीवन शैली गोपीजनोए अपनावीने पुष्टिमार्गनुं परम फल "श्रीकृष्ण"नी प्राप्ति करी हती, ते प्रकारे संपुर्ण शरणागति अने समर्पित जीवन जीवतां भगवद्-कृपा द्वारा भगवानने प्राप्त करवानो आ मार्ग छे'.

'कया प्रकारनी जीवन शैली गोपीजनोए अपनावी हती ?'.

'गोपीजनोनी प्रत्येक दैनिक क्रिया मात्र कृष्ण परत्वे हती. तेमना हृदयमां श्रीकृष्ण प्रत्ये निष्काम प्रेम हतो. संयोगमां तेओ प्रभुने सुख थाय तेवी प्रवृत्ति करतां हतां, अने विप्रयोग समये तेमना गुणगान गातां. तेओ एक क्षण पण कृष्णने भूली शकता नहीं.

'तो शुं एम कही शकाय के पुष्टिमार्गनी "आचार प्रणाली" गोपीजनो ए घडेली छे ?'

'हा, तेथी ज श्रीवल्लभाचार्यजीए गोपीजनोने "पुष्टिमार्गना गुरु" कह्या छे'.

'शुं छे ते आचार प्रणाली ?'.

'भक्तकविए गायु छे - "सेवा रीत प्रीत व्रजजनकी". अर्थात् जेवो निष्काम स्नेह गोपीजनो नो श्रीकृष्णमां हतो, तेवो निश्छल प्रेम आपणा सेव्य स्वरुपमां राखी तेने सुख थाय तेम सर्वभावपूर्वक तेमनी भक्त्यात्मिका सेवा करवी, तेमांज जीवननी कृतार्थता मानवी जोईए'.

'पुष्टि-जीवन ना मुख्य पहेलु कया छे ?'.

'पुष्टिप्रभु नी "संपुर्ण शरणागति", पुष्टिमार्ग नुं विशिष्ट पासु छे. तेनो उपदेश श्रीवल्लभाचार्यजीए "विवेकधैर्याश्रय" ग्रंथमां आप्यो छे. प्रभु सर्व कांई पोतानी ईच्छाथी ज करे छे, तेम समजवुं ते "विवेक " कहेवाय. तेथी जे परिस्थितिमां प्रभु आपणने राखे तेमां प्रभुनी ईच्छा मानी मनमां क्लेश उत्पन्न न करतां, त्रिविध दुःखोने सहन करवा जोईए, तेने ज भगवद् शरणागति स्वीकारी कहेवाय.

'अने "समर्पण" थी शुं तात्पर्य छे ?.'

'आपणे ब्रह्मसंबंध करती वखते आपणुं देहादि सर्वस्वनुं प्रभुने समर्पण कर्यानुं निवेदन करीए छीए. तेथी आपणी प्रत्येक वस्तूनो प्रभुने प्रत्यक्ष विनीयोग करवो आवश्यक गणाय. आपणा जीवन नी प्रत्येक प्रवृत्ति ना केन्द्र स्थाने कृष्ण होवा जरुरी छे. आपणा जीवनोपयोगी दरेक वस्तु / बाबतो प्रथम प्रभुना प्रत्यक्ष / परोक्ष रीते भगवद् कार्य माटे उपयोग मां लईए त्यारे आपणु "समर्पित जीवन" कहेवाय.

'पुष्टि-जीवन ना महत्त्वपूर्ण अंग कया छे ?'.

'तेना आवश्यक अंगो छे - "१. अन्याश्रय त्याग" -अर्थात् श्रीकृष्ण सिवाय अन्य कोई देव के मनुष्य नो आश्रय क्यारेय न करवो ; २. "असमर्पित त्याग" - एटले प्रभुने अंगिकार कर्या विना कोई पण पदार्थनो उपभोड नकरवो ; ३. "असदालाप त्याग" - अर्थात् अनावश्यक वार्तालाप नहीं करवो ; अने "दुःसंग नो त्याग" - एटले दुष्ट लोकोना संगथी अथवा दुषित वाणी थी अलिप्त रहेवुं. आ चार बाबतो मनुष्यने बहिर्मुख बनावे छे, जे पुष्टिजीवन मां बाधक छे. तेथी तनो त्याग करवो जरुरी छे.

'आथी श्रीमदाचार्यचरण ना सिद्धांतो / आग्याओ नुं निष्ठापूर्वक अनुसरण करी जीवन व्यतित करवाथी पुष्टिफल रुप श्रीकृष्ण नी प्राप्ति जीवन दरम्यान ज थई शके छे अने आपणुं जीवन सार्थक बने छे.'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

आ श्रेणीमां छेल्ला छ मासथी "जात साथे वात" - संवाद रुपे प्रस्तुत थती "शुद्धाद्वैत विचारधारा" अने तदंतर्गत "पुष्टिमार्ग" विषयक " पुष्टि- स्वाध्याय" / Pushti Self Study" (गुजराती - अंग्रेजी) श्रृंखला समाप्त थाय छे. आशा छे, वांचक मित्रोने सरल शब्दोमां पुष्टिमार्ग ने समजवा उपयोगी थई हशे. टुंक समयमां ते पुस्तक रुपे प्रकाशित थशे.